नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वैद्यजीवन	कायस्थ धर्म निरू-	गीतगोविन्द	शिशुबोध
औषधिसंग्रह कल्प-	तथा छोटा	कथा सत्यनारायण	पत्र हितैषिणी
वल्ली	मथुरा सभा	परमार्थसार	पत्र दीपिका
अमृतसागर बड़ा	ज्योतिष	शार्ङ्गधरसंहिता	विद्याचक्र
अमृतसागर छोटा	मुहूर्त गणपति	पाराशरी सटीक	विद्यांकुर
इलाजुल्गुर्बा	मुहूर्त चक्रदीपिका	शीघ्रबोध सटीक	पदार्थविद्यासार
वैद्यमनोत्सव	मुहूर्त चिन्तामणि स-	लघुजातक	पदार्थज्ञान किरण
रिल् सागर	मुहूर्त दीपक	षट्पञ्चाशिका	भोजप्रबन्धसार
ज्योतिष भाषा	बृहज्जातक सटीक	सामुद्रिक	राजनीति
जातक चन्द्रिका	जातकालंकार	गरुड़ पुराण	भाषालघुव्याकरण
जातकालंकार	जातकाभरण	रामविवाहोत्सव	१ भाग व २ भाग
दैवज्ञाभरण	होरामकरन्द	सरिश्ते तालीम-	भाषा तत्त्वदीपिका
ज्ञानस्वरोदय	मुहूर्तमार्तण्ड सटीक	म की पुस्तकें	भाषाचन्द्रोदय
रमलसार	संस्कृत उर्दू टीका	संस्कृत	भूगोलतत्त्व
रमलनौरत्न	मनुस्मृति	अनुपात १ भाग	भूगोलदर्पण
इन्द्रजाल	विष्णुहारीत	तथा २ भाग	इतिहासतिमिरना-
संस्कृत की पुस्तकें	महिम्न स्तोत्र	तथा ३ भाग	शक १ भाग व २ भाग
लघुकौमुदी	व्रतार्क	भाषाबोध	तथा ३ भाग
सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्य स्मृति	नागरी कैथी	अवध देशीय भूगोल
भाषातत्त्वप्रकाश	संस्कृत भाषा	वर्णमाला कैथी	इंगलिस्तान का इति-
पञ्चमहायज्ञ	टीका	१ भाग व २ भाग	हास
निर्णयसिन्धु	अमरकोष तीनों	तथा कैथी फार-	हितोपत्रिका
कर्मविपाक	काण्ड	सी नागरी	बालाभूषण
संग्रहशिरोमणि	याज्ञवल्क्य स्मृति	हरूफ़ मुफ़र्रदात	पद्यसंग्रह
भगवद्गीता पञ्चरत्न	सन्ध्या पद्धति	अक्षरारम्भ	भाषाकाव्यसंग्रह
दुर्गापाठ मूल	व्रतार्क	वर्णप्रकाशिका १	कवित्तरत्नाकर १ भा०
दुर्गापाठ सटीक	भगवद्गीता टीका	भाग व २ भाग	तथा २ भाग
विष्णुभागवत	हरिवंश लाल	सूरजपुर की कहानी	मंगल कोष
कथा यमद्वितीया	भगवद्गीता टीका	धर्मसिंह का वृत्तान्त	अंक प्रकाश
अपराधभंजन स्तोत्र	आनन्दगिरि	शिक्षावली	

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वाराह पुराण	कविप्रिया	प्रेमसार	गोकर्णमाहात्म्य
भविष्योत्तर पुराण	विनयमुक्तावली	शिवसिंह सरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम
स्कन्द पुराण	उपदेश चन्द्रिका	भक्तमाल	कथा सत्यनारायण
वाल्मीकीय रामायण	मंगल विनोद	इन्द्रसभा	सटीक
अद्भुत रामायण	विजय चन्द्रिका	विक्रम विलास	हनूमान बाहुक
सुन्दर विलास	सिद्धान्त संग्रह	बैताल पचीसी	जनक पचीसी
शुक्रनीति	रामविनयशतक	सिंहासन बत्तीसी	हरिहर सगुण निर्गु-
रसवृष्टि व रसचन्द्रोदय	अनेकार्थ	पद्मावती खण्ड	ण पदावली
सुदामा चरित्र	छन्दोर्णव पिङ्गल	शुक बहत्तरी	वनयात्रा
कथा गीतावली	रसराज	बकावली सुमन	कायस्थवर्णनिर्णय
श्री अनुराग रस	सतसई मूल	बहार दरवेश	विहार वृन्दावन
सौदागर लीला	सतसई सटीक	किस्सा हातमताई	समरविहार वृन्दावन
रासलीला	सभाविलास	अपूर्व कथा	काव्यमाला
नाटक	युगुल विलास	किस्सा गुलसनोवर	लक्ष्मी सरस्वती संवाद
प्रबोधचन्द्रोदय	तुलसीशब्दार्थप्रकाश	सहस्ररजनीचरित्र	**उर्दू**
रामाभिषेक	भजनावली	हिन्दुस्तान का इतिहास	अक्षरावली
आनन्द रघुनन्दन	प्रेमरत्न	सीताहरण	स्वरबोध
भ्रमजालक नाटक	चित्रचन्द्रिका	सती विलास	ज्ञानचालीसी
हनूमन्नाटक	बारहमासा बलदेव	किस्सा अई औरत	दोहावली
वेदान्त	मनोहर लहरी	सांगीत प्रह्लाद	बालबोध
योगवाशिष्ठ	गंगा लहरी	**मुतफ़र्रिक़ात**	विद्यार्थी की प्रथम
आनन्दामृतवर्षिणी	यमुना लहरी	शनिश्चर की कथा	पुस्तक
सांख्यतत्त्वकौमुदी	जगद्विनोद	ज्ञानमाला	किताब जन्त्री
काव्य	शृंगार बत्तीसी	गोपीचन्द भरतरी	गणित कामधेनु
सूरसागर	नवीन संग्रह	कथा श्री गंगा जी	गीतावली
कथासागर	**राग**	अवध यात्रा	पटवारियों की पुस्त-
विश्रामसागर	रागप्रकाश	भरतरी गीत	क ६ भाग
प्रेमसागर	लावनी	रामलीला बलामणी	**वैद्यक शास्त्र**
भजनविलास बड़ा	**किस्सा वोहद**	दोहावली रत्नावली	निघण्टु
भजनविलास छोटा	[illegible]	रसायन प्रकाश	अमरविनोद

कृत्वा मनसि केशवं ॥१६१॥
टी॰ सौ करोड़ कल्प के पाप सब भ-
स्म हो जावैं। हे अर्जुन पीपल के
वृक्ष के पास मन में निश्चय करके॥१६१॥
मू॰ पठेन्नाम सहस्रं तु गवां
कोटि फलं लभेत्। शिवा-
लये पठेन्नित्यं तुलसीव
न संस्थितः ॥ १६२ ॥
टी॰ यह सहस्रनाम पढ़ै तो करोड़
गोदान का फल प्राप्त हो। और जो
शिवालय में नित्य पढ़ै और तुल-
सी के बन में स्थित होकर ॥१६२॥
मू॰ नरो मुक्तिमवाप्नोति
चक्रपाणेर्वचो यथा। ब्रह्म
हत्यादिकं पापं सर्व्वपापं
विनश्यति ॥ १६३ ॥
टी॰ तो वह मनुष्य मुक्ति को प्राप्त
हो चक्रपाणि भगवान का वचन है
ब्रह्महत्या आदि जो पाप हैं वह स-
ब उसके नाश हो जावैं ॥ १६३ ॥

इति श्री विष्णुसहस्र
नामस्तोत्रं समाप्तं।

کرتوا منس کیشونگ -
ٹیکا ۱۶۱
تو سَو کروڑ کلپ کے پاپ سب بھسم ہو جاوین
اور ہی ارجن اگر پیپل کے درخت کے پاس اِستھاد کرکے
اشلوک ۱۶۲
پٹھین نام سہسرنت گوانگ کوٹ
پھلنگ لبھیت - شوالیے پٹھے
نتینگ تلسی بن سنستھتہ -
ٹیکا ۱۶۲
یہ سہسر نام پڑھی تو کروڑ گودان کا پھل ہو اور
اگر شوالے مین یا تلسی کے بن مین نت پڑھے
تو بلا شک و شبہ -
اشلوک ۱۶۳
نرو مکت مواپنوت چکر پانیر بچو
یتھا - برھمہتیاد کنگ پاپنگ
سرب پاپنگ بنشیت -
ٹیکا ۱۶۳
وہ آدمی مکت ہووی یا وہی چکر دھاری
بھگوان کا یہ بچن ہی - برہمہتیا وغیرہ جو پاپ
ہین وہ سب اُسکے ناش ہو جاین - فقط

شری بشن سہسر نام استوتر
سماپت ہوا

मू॰ येनध्यातंश्रुतंयेनये
नायंपठितःस्तवः । दत्ता-
निसर्व्वदानानिसुराःस
र्व्वे समर्च्चिताः ॥ १५९ ॥

टी॰ जो कोई इसको ध्यान क
रता है और जो सुनता है और
जो पढ़ता है । वह मानो सब दा
न दे चुका और सब देवताओं
की पूजा कर चुका ॥ १५९ ॥

मू॰ इह लोके परे वापि न
भयं विद्यते क्वचित् । ना-
म्नां सहस्रं योधीते द्वाद-
श्यां मम सन्निधौ ॥ १६० ॥

टी॰ इस लोक में और परलोक
में उसको कभी भय नहीं है ।
भगवान् कहते हैं कि जो इस
सहस्र नाम को द्वादशी के दि
न हमारे पास पढ़े तो ॥ १६० ॥

मू॰ स निर्दहति पापानि
कल्पकोटिशतानि च ।
अश्वत्थसन्निधौ पार्थ

اشلوک ۱۵۹
یینہ دھیاتنگ شرتنگ یین
یینا ینگ پٹھتہ استوہ - دتّان سرب
دانان سراہ سربے سمرچتاہ -

ٹیکا ۱۵۹
جو کوئی اس استوتر کا دھیان کرتا ہے اور جو
سنتا ہے اور جو پڑھتا ہے - وہ گویا سب دان
دے چکا اور سب دیوتون کی پوجا کر چکا -

اشلوک ۱۶۰
اہ لوکے پرے باپی نہ بھینگ
بدیتے کوچت - نامنانگ سہسنگ
یودھیتے دوادشیانگ مم سندھو -

ٹیکا ۱۶۰
اس لوک اور پرلوک مین اسکو کبھی ڈر نہوگا
بھگوان کہتے ہین کہ اگر اس سہسر نام کو ہمارے
پاس دوادشی کے دن پڑھے تو -

اشلوک ۱۶۱
سنردہت پاپان کلپ کوٹ
شتانچ - اشوتھ سندھو پارتھ

सोई फल इस स्तोत्र के पाठक-	وہی پھل برابر ملتا ہے اُس شخص کو
रने वाले को प्राप्त होगा ॥१५६॥	جو اس استوتر کو پڑھتا ہے ـ
मू॰ यो नरः पठते नित्यं त्रि	١٥٧ اشلوک
कालं केशवालये। द्विका	یو نرہ پٹھتے نتینگ ترکالنگ
लमेककालं वा क्रूरं सर्व्वं	کیشوالیے ـ دوکالمیک
व्यपोहति ॥१५७॥	کالنگ با کرورنگ سرونگ بیپوہت
टी॰ भगवान् के मन्दिर में जा-	١٥٧ ٹیکا
कर जो मनुष्य इस को प्रातः म-	جو آدمی بھگوان کے مندر میں جاکر صبح اور
ध्यान्ह सन्ध्या तीनों काल पढ़े	دوپہر اور شام کو تینوں وقت خواہ دو
अथवा दोही काल अथवा ए-	وقت یا ایک ہی وقت اسکو پڑھیگا تو جو
कही काल पाठ करै तो जो दुःख सं-	دکھ سنسار کے ہیں وہ دور ہو جائینگے ـ
सार के हैं वह सब दूर होजांय।१५७	اشلوک
मू॰ दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौ	١٥٨ دہینتے رپوستسیہ سومیاہ سر بے
म्याः सर्व्वे सदा ग्रहाः। वि-	سدا گرہاہ ـ بلی ینتے چہ پاپان
लीयन्ते च पापानि स्तवे	استویہ یسمن پر کیرتتے ـ
ह्यस्मिन्प्र कीर्त्तिते१५८	١٥٨ ٹیکا
टी॰ उसके सब शत्रु भस्म होजा-	اور اُسکے سب دشمن نابود ہو جائینگے اور سب
ते हैं और सब ग्रह उसपर स-	گرہ اُسپر ہمیشہ خوش رہینگے ـ اور اُسکے سب
दा प्रसन्न रहते हैं। और उस	پاپ ناش ہو جائینگے یہ بات اس استوتر میں کہی ہے
के पापों का नाश होजाता है इ-	
स स्तोत्र में यह बात कही है१५८	

सर्व्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति॥१५४॥

टी· जैसे आकाश से जल गिर कर समुद्र को जाता है। वैसे ही जिस देवता को कोई नमस्कार करै वह भगवान् को पहुँचता है॥१५४॥१५४॥

मू· एषनिष्कण्टकःपंथा यत्र संपूज्यते हरिः। कुपथं तं विजानीयाद्गोविन्दरहितागमं॥१५५॥

टी· जो भगवान् की पूजा है वही राह निःकण्टक है। भगवान् करके रहित जो पूजा है वह राह कुराह है॥१५५॥

मू· सर्व्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्व्वतीर्थेषु यत्फलं। तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वादेवंजनार्द्दनं।१५६॥

टी· सब वेदों का जो फल है व तीर्थों का जो फल है।

سرب دیو نمسکار کیشونگ پرت گچھت -

ٹیکا ۱۵۴

جیسے آکاش سے جل گر کر سمندر کو جاتا ہے ویسے ہی کوئی چاہے کسی دیوتا کو نمسکار کرے وہ بھگوان کو پہنچتا ہے -

اشلوک ۱۵۵

ایکھ نشکنٹکا پنتھا یتر سمپوجیتے ہری - کپتھنگ تنگ وجانیاد گووند رہتا گمنگ -

ٹیکا ۱۵۵

بھگوان کی جو پوجا ہے وہی راہ بے کانٹوں کی ہے - اور جو پوجا بھگوان سے الگ ہے وہی راہ خراب ہے -

اشلوک ۱۵۶

سرب بید یکھو یت پنینگ سرب تیرتھیکھو یت پھلنگ - تت پھلنگ سماپنوتی استتوا دیونگ جناردنگ

ٹیکا ۱۵۶

سب بید کا جو پھل ہے اور سب تیرتھوں کا جو پھل

वासितं भुवनत्रयं । सर्व्व
भूतनिवासीनां वासुदेव
नमोस्तुते ॥ १५२ ॥

टी· इस संसार की जो वासना है
उसको नाश करने वाले और ती-
नों भुवन में व्याप्त हैं। सब भूतों
अर्थात सब प्राणियों में जो नि-
वास करते हैं वासुदेव उनको
नमस्कार है ॥ १५२ ॥ १५२ ॥

मू· नमो ब्रह्मण्यदेवाय
गोब्राह्मणहिताय च । ज
गद्धिताय कृष्णाय गोवि-
दाय नमो नमः ॥ १५३ ॥

टी· जो ब्राह्मण के मानने वाले हैं
उनको और जो गुरु और ब्राह्म-
ण के हितकारी हैं उनको नम-
स्कार है। जो जगत के हितकारी
हैं और कृष्ण रूप हैं और गौवों के
स्वामी हैं उनको नमस्कार है १५३

मू· आकाशात्पतितं तो-
यं यथा गच्छति सागरे ।

بھون ترینگ - سرب بھوت
نواسی نانگ باسدیو نمو ستُتے

ٹیکا ۱۵۲

اس سنسار کی جو باسنا ہے اُسکو ناش کرنے
والے ہین اور تینون بھون مین بیاپت ہین
جو باسدیو سب جیوؤن مین بستے ہین اُنکو
نمسکار ہے —

اشلوک ۱۵۳

نمو برہمنیہ دیوائے گو براہمن
ہتائچ - جگت وھتای کرشنائے
گوبندائے نمو نمہ —

ٹیکا ۱۵۳

جو براہمن کے ماننے والے اور گرو اور
براہمن کے ہتکاری ہین اُنکو نمسکار ہے
جو جگت کے ہتکاری ہین اور کرشن
روپ ہین اور گئوون کے سوامی ہین
اُنکو نمسکار ہے —

اشلوک ۱۵۴

آکاشات پتتنگ تویَنگ
یتھا گچھت ساگرے —

जिनकी सहस्र मूर्त्ति हैं उनको न-
मस्कार है हजार हैं चरण और
शिर और जंघा और भुजा जिन
के उनको नमस्कार है हजार
नाम हैं जिनके और पुरुष रू-
प हैं और निरन्तर हैं और
सहस्त्र कोटि यज्ञ के धारण
करने वाले हैं उनके अर्थ न
मस्कार है ॥ १५० ॥ १५० ॥

मू· नमः कमलनाभाय
नमस्ते जलशायिने । न-
मस्ते केशवानन्त वासुदे
वनमोस्तु ते ॥ १५१ ॥

टी· नमस्कार है उनको कि जि
नकी नाभि से कमल निकला है
और नमस्कार है उनको जो ज
ल में शयन करते हैं । नमस्का
र है उनको जो केशव हैं अन-
न्त हैं और जो वसुदेव के पुत्र हैं
उनको नमस्कार है ॥ १५१ ॥

मू· वासनाद्वासुदेवस्य

جنکی ہزار مورت ہین انکو نمسکار ہے ہزار
ہین چرن اور نیتر اور سر اور زانو اور
اور بازو جنکے انکو نمسکار ہے - ہزار
ہین نام جنکے اور پُرش روپ ہین اور
نرنتر ہین اور ہزار کروڑ جگ کے دھار
کرنے والے ہین انکو نمسکار ہے -

اشلوک

١٥١

نمہ کمل نابھاے نمستے
جل شاینے - نمستے کیشوانَنت
باسدیو نموستتے -

ٹیکا

١٥١

نمسکار ہے انکو کہ جنکی نابھ سے کمل نکلا
ہے اور انکو نمسکار ہے کہ جو جل مین شین یعنی
آرام کرتے ہین - جو کیشو ہین اور اننت
ہین انکو نمسکار ہے اور جو بسدیو کے پتر
ہین انکو نمسکار ہے -

اشلوک

١٥٢

باسنا باسدیوسیہ باسنگ

नयन पद्म के पत्र से भी हैं विशाल नेत्र तुम्हारे। जो भक्त हैं और जो स्तुति करैं उनकी रक्षा करी हे जनार्दन भगवान्॥२४८॥

मू· श्री भगवानुवाच॥
यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव। सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः॥२४९॥

टी· श्री भगवान् बोले॥ कि जो पुरुष मेरी सहस्र नाम करके स्तुति करने की इच्छा करते हैं। सो एकही श्लोक के पढ़ने में वही स्तुति होजाती है॥२४९॥

मू· नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः॥२५०॥२५०॥

टी· जोभगवान् अनन्त हैं और

کمل کے پتر سے بھی اودھک سندر ہیں نیتر
تمھارے - جو تمھاری بھکت یا استت
کریں انکی تم رچھا کرو ہے جناردن بھگوان

اشلوک

۱۴۹
شری بھگوان اواچ - یومانگ نام سہسرین
استوت مچھت پانڈو - سوہمیکین
اشلوکین استت ایو نہ سنشیہ -

ٹیکا

۱۴۹
شری بھگوان نے کہا کہ جو پرش میری استت
سہسر نام کی کرنے کی اچھا کرتا ہے تو ایک
ہی اشلوک کے پڑھنے میں وہی استت
ہو جاتی ہے -

اشلوک

۱۵۰
نمو ستوننتائے سہسر مورتیے
سہسر پاداکش شرو رباہیے -
سہسر نامنے پرشائے شاشوتے
سہسر کوٹی جگ دھارنے نمہ -

ٹیکا

۱۵۰
جو بھگوان اننت یعنی لا انتہا ہیں اور

र्त्तितं । पठेद्य इच्छेत्पु-
रुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखा-
नि च ॥२४६॥ २४६॥

टी॰ यह स्तुति भगवान् वि-
ष्णु की व्यास जीने कही है। व-
ह पुरुष पढ़ै जिसको इच्छा क-
ल्याण और सुख की हो॥२४६॥

मू॰ विश्वेश्वरमजं देवं ज-
गतः प्रभवाप्ययं। भजं-
ति ये पुष्कराक्षं न ते या-
न्ति पराभवं॥ २४७॥

टी॰ विश्व के ईश्वर जन्म रहित
देव रूप जगत् की उत्पत्ति और
नाश करने वाले हैं। जो भज-
ते हैं कमल नेत्र को वे तिरस-
कार को प्राप्त नहीं होते॥२४७॥

मू॰ अर्जुन उवाच॥ पद्मपत्र
विशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्त-
म। भक्तानामनुरक्तानां त्रा-
ता भव जनार्दन॥२४८॥

टी॰ अर्जुन बोले॥ हे कमल

پٹھید یہ اچھیت پُرشہ شریسے یہ
پراپتنگ سکھانچ -

ٹیکا ۱۴۶

یہ استت بشن بھگوان کی بیاس جی نے کہی ہے
اسکو وہ پرکھ پڑھے جسکو سکھ اور کلیان کی اچھا ہو

اشلوک ۱۴۷

بشویشورمجنگ دیونگ جگتہ
پربھوابیینگ - بھجنت یے
پشکراکشنگ نتے یانت پرابھونگ

ٹیکا ۱۴۷

بشو کے ایشور جنم رہت دیوروپ جگت کی
اتپت اور ناش کرنیوالے ہین - جو بھجتے ہین
کمل نیتر بھگوان کو وہ بیخوف رہتے ہین -

اشلوک ۱۴۸

ارجن اواچ - پدم پتر بشالاکش پدم
نابھ سروتم - بھکتانامنرکتانانگ
تراتا بھوجناردن -

ٹیکا ۱۴۸

ارجن کہنے لگے - کہ ہے کمل نین

मू॰ योगो ज्ञानं तथा सां-
ख्यं विद्याः शिल्पादि क-
र्म्म च । वेदाः शास्त्राणि
विज्ञानमेतत्सर्व्वं जना-
र्दनात् ॥१४४॥१४४॥

टी॰ योग और ज्ञान और सां-
ख्य और चौदही विद्या और
कारीगरी । और वेद और शा-
स्त्र और विज्ञान यह सब भग-
वान से पैदा हुवे ॥ १४४ ॥

मू॰ एको विष्णुर्महद्भू-
तं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रिलोकान्व्याप्य भूता-
त्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्य-
यः ॥ १४५ ॥ १४५ ॥

टी॰ एक विष्णु हैं जो पञ्च भूत
और सम्पूर्ण प्राणी । तीनौं लो-
क को व्याप्त करके भोगै हैं वि-
श्व के भोक्ता हैं ॥१४५॥०॥

मू॰ इमं स्तवं भगव-
तो विष्णोर्व्यासेन की-

۱۴۴ اشلوک

جوگو گیانن تتھا سانکھینگ
بدیاہ شلپادی کرم چ - بیداہ شاستران
بگیان مے تت سرونگ جناردنات -

۱۴۴ ٹیکا

جوگ اور گیان اور سانکھیہ شاستر اور چودہو ۱۴ بدیا
اور کاریگری - اور بید اور شاستر اور بگیان
یہ سب بھگوان سے پیدا ہوئے -

۱۴۵ اشلوک

ایکو بشنر مہد بھوتنگ پرتھک
بھوتانیہ نیکشہ - ترلوکان بیاپیہ
بھوتاتما بھنکتے بشو بھگ بییہ -

۱۴۵ ٹیکا

ایک بشن ہیں جو تینوں لوک میں بیاپت
ہوکر پنچ بھوت اور سارے پرانیونکو بھوگ
کرتے ہیں یعنی بشو کے بھوکتا ہیں -

۱۴۶ اشلوک

امنگ استونگ بھگوتو
بشنور بیاسین کیرتتنگ -

सत्वं तेजो बलं धृतिः । वा-
सुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं
क्षेत्रज्ञमेव च ॥ १४१ ॥
टी॰ दसौ इन्द्री मन बुद्धि पराक्र-
म तेज बल धीर्य । सब भगवा-
न का रूप है देह और जीव ।१४१।
मू॰ सर्व्वागमानामाचारः
प्रथमं परिकल्पते । आ-
चारप्रभवो धर्म्मो धर्म्म-
स्य प्रभुरच्युतः ॥ १४२ ॥
टी॰ सब वेदों के आचार हैं । आ-
चार से धर्म्म पैदा हुवे और ध-
र्म्म के पति भगवान् हैं ॥१४२॥
मू॰ ऋषयः पितरो देवाः
महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं ज-
गन्नारायणोद्भवं ॥१४३॥
टी॰ ऋषि और देवता पञ्च भूत
सातो धातु । और स्थावर और
जंगम यह सब जगत नाराय-
ण से पैदा हुवे ॥१४३॥१४३॥

ستو تیجو بلنگ دھرت - باسدیواتم
کانیاہُہ چھیترنگ چھیترگیہ میو چ -

ٹیکا ۱۴۱
دشو اندری من بدھ پراکرم تیج بل دھیرج
دیہ اور جیو یہ سب بھگوان کا روپ ہیں -

اشلوک ۱۴۲
سرباگمانا ماچارہ پرتھمنگ پرکلپتے
آچار پربھوو دھرمو دھرمسیہ
پربھور چیتہ -

ٹیکا ۱۴۲
سب بیدوں سے آچار پیدا ہوا آچار سے دھرم
پیدا ہوا دھرم کے مالک بھگوان ہوئے -

اشلوک ۱۴۳
رکھیہ پترو دیوا مہا بھوتانی
دھاتوہ - جنگما جنگمنگ چیدنگ
جگنارائنو دبھونگ -

ٹیکا ۱۴۳
رکھ پتر دیوتا پانچ بھوت ساتو دھات - اور
استھاور جنگم جگت نارائن سے پیدا ہوئے -

न खोटी बुद्धि हो किया है
जिन्हों ने पुण्य जो भगवान्
के भक्त हैं ॥ १३८ ॥ १३८ ॥

मू॰ द्यौः सचन्द्रार्कन-
क्षत्रं खं दिशो भूर्महो
दधिः । वासुदेवस्य वी
र्येण विधृतानि महा-
त्मनः ॥ १३९ ॥ १३९ ॥

टी॰ स्वर्गलोक चन्द्रमा सूर्य न-
क्षत्र आकाश दिशा पृथ्वी
समुद्र । नारायण के पराक्रम क
र के धारण कर रक्खे हैं ॥१३९॥

मू॰ ससुरासुरगन्धर्वं स
यक्षोरगराक्षसं । जग-
द्वशे वर्त्ततेदं कृष्णस्य
सचराचरं ॥ १४० ॥

टी॰ देवता असुर गन्धर्व यक्ष
सर्प राक्षस । सम्पूर्ण जगत्
चराचर श्री कृष्ण भगवान्
के वश्य हैं ॥ १४० ॥ १४० ॥

मू॰ इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः

بھرشٹ ہوا انکو کہ جنھوں نے پُن کیا ہے اور جو
بھگوان کے بھگت ہیں ۔

اشلوک ١٣٩
دیوہ سچندرارک نکشتر اکھنگ
وشو بھور مہودَدھ ۔ باسدیوسیہ
ویرجین بدھرتان مہاتمنہ ۔

ٹیکا ١٣٩
سورگ لوک چندرمان سورج نکشتر آکاش
دِشا پرتھوی سمُدر ۔ یہ سب نارائن
پراکرم سے ٹھہرے ہوئے ہیں ۔

اشلوک ١٤٠
سسُر اسُر گندھرب سیکشورگ
راکشسنگ جگت بشے برتتے
دنگ کرشنسیہ سچراچرنگ ۔

ٹیکا ١٤٠
دیوتا اسُر گندھرب جچھ سرپ راچھس سارا
جگت چراچر کرشن بھگوان کے بس میں ہے

اشلوک ١٤١
اندریان منو بدھہ ستوگ

अशुभ को नहीं प्राप्त होंगे । जन्म और मरण और बुढ़ापा और व्याधि और भय उन को नहीं होता है ॥ १२६ ॥

मू· इमंस्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः युज्येनात्मसुखक्षांति श्रीधृतिस्मृतिकीर्त्तिभिः ॥ १२७॥१२७ ॥

टी· इस सहस्रनाम को पढ़ता हुआ श्रद्धा और भक्ति करके युक्त हो । जीवात्मा सुखी रहै और क्षमा और लक्ष्मी और बीर्य्य और स्मृति और कीर्त्ति को युक्त होगा ॥ १२७ ॥

मू· न क्रोधो न च मात्सर्य्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२८॥ १२८॥

टी· न क्रोधी हो न ईर्षा हो न लोभ हो

اشبھ کو نہیں پراپت ہونگے - اور جنم
اور مرن اور بڑھاپا اور خوف و بیماری
انکو نہیں پراپت ہوتی ہے -

اشلوک ۱۲۷

اِمنگ استو مدھی یانہ شردھا
بھگت سمنوتہ - یجیے تاتم
سکھنگ کشانت شری دھرت
اسمرت کیرت بھہ -

ٹیکا ۱۲۷

اس سہسر نام کو پڑھتا ہوا شردھا اور بھگت
کے ساتھ جو کوئی جگت ہو - وہ جیوآتما سکھی
رہیگا اور چھما اور لچھمی اور بیرج اور اسمرت
اور کیرت کو جگت ہوگا -

اشلوک ۱۲۸

نہ کرودھو نہ چماتسریںگ نہ لوبھو
نا شبھامتہ - بھونت کرت پنیا
نانگ بھگتانانگ پرکھوتمے -

ٹیکا ۱۲۸

نہ کرودھ ہو نہ حرص ہو نہ لالچ ہو نہ کھوٹی

स्तुवन्नाम सहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥१३४॥	اَستُون نام سہسترین نتیک بھکت سمنوتہ
टी॰ कठिन कामों को तर जायगा पुरुष पुरुषोत्तम की स्तुति हज़ार नाम की करके नित्य जो भक्ति करै ॥ १३४ ॥	ٹیکا ١٣٤ کٹھن کاموں کو بھی طے کر جاوے پرش پرشوتم کی استت ہزار نام کرکے نت جو بھکت سیوا کرے
मू॰ वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः । सर्व्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्मसनातनम् ॥१३५ ॥	اشلوک ١٣٥ باسدیو آشرو مرتیو باسدیو پراینہ۔ سرب پاپ بشدھاتما یاتی برہم سناتنم۔
टी॰ जो वासुदेव के आश्रय है और वासुदेव के आधीन है । उसके सब पाप छूट जांयगे और सनातन ब्रह्म को प्राप्त होगा १३५	ٹیکا ١٣٥ چونکہ باسدیو کے آشرے ہو اور باسدیو آدھین ہو۔ اسکے سب پاپ چھوٹ جاینگے اور سناتن برہم کو پاویگا۔
मू॰ न वासुदेव भक्तानाम शुभं विद्यते क्वचित जन्म मृत्यु जरा व्याधि भयं नैवोपजायते ॥ ॥१३६॥१३६ ॥१३६॥	اشلوک ١٣٦ نہ باسدیو بھکتانام اشبھم بدیتے کوچت۔ جنم مرتیہ جرا بیادھ بھینگ نیوُوپ جایتے۔
टी॰ वासुदेव के जो भक्त हैं वह	ٹیکا ١٣٦ باسدیو بھگوان کے جو بھکت ہیں وہ

मू॰ न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विंदति। भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥ १३२॥

टी॰ कभी भय को नहीं प्राप्त होगा पराक्रम और तेजवाला होगा। आरोग्य होगा शोभावाला होगा बल और रूप और गुण करके युक्त होगा ॥ १३२ ॥

मू॰ रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥ १३३ ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

टी॰ रोगी रोग से छूट जायगा और कैदी कैद से। डरा हुआ डर से छूट जायगा और विपत्ति वाला पीड़ा से छूट जायगा ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

मू॰ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमं।

اشلوک ۱۳۲

نہ بھینگ کوچداپنوت ویریں تیج شچ ونددتی - بھونتیرو گودیوتی مان بل روپ گنانوتہ -

ٹیکا ۱۳۲

اور کبھی اسکو کسی سے خوف نہو گا اور قدرت و ضیا عجب ہوگا - اور تندرستی اور شوبھا اور بل اور روپ اور گن والا ہوگا -

اشلوک ۱۳۳

روگارتو مچیتے روگا بدھو مچیت بندھنات - بھیان مچیت بھیت استُ مچیتے واپن آپد -

ٹیکا ۱۳۳

بیمار آدمی بیماری سے چھٹکارا پاویگا اور قیدی قید سے چھوٹ جاویگا - ڈرا ہوا ڈر سے بےڈر ہو جاویگا اور مصیبت والا مصیبت سے چھوٹ جاویگا -

اشلوک ۱۳۴

درگانیتی ترتیاشو پرش پرشوتم

अर्थ को प्राप्त होगा। काम-
ना वाला कामना को प्राप्त हो-
गा संतान की इच्छा वाला सं-
तान को प्राप्त होगा ॥ १२९ ॥

मू. भक्तिमान्यः सदोत्था-
य शुचिस्तद्गतमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्ना-
मेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ १३० ॥

टी. भक्ति वाला पुरुष सदा उ-
ठ कर पवित्र होकर भगवान में
मन लगाकर। जो हज़ार नामना-
रायण के नित्य कीर्तन करेगा १३०.

मू. यशः प्राप्नोति विपुलं
ज्ञातिप्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रे-
यः प्राप्नोत्यनुत्तमं। १३१।

टी. उसको यश प्राप्त होगा अ-
पनी जाति में प्रधान होगा।
अचल लक्ष्मी को प्राप्त हो-
गा और कल्याण को प्राप्त हो-
गा उत्तम होगा ॥ १३१ ॥

مراد کو پاویگا - اور آرزومند کی آرزو
پوری ہوگی اور اولاد کی تمنا رکھنے والا
اولاد پاویگا -

اشلوک

۱۳۰
بھکت مانیہ سدوتھای شچیش
ترگت مانس سہسر نگ باسدیو
ناماںیتت پرکیرتیت -
ییگا

۱۳۰
جو بھکت والا پرش سدا اٹھکر پوتر ہوکر
بھگوان میں من لگاکر - سہس نام نارائن
کے نت پاٹھ کریگا -

اشلوک

۱۳۱
یشہ پراپنوت بپلنگ گیات
پرادھانیہ میوچ - اچلانگ سری
ماپنوت شریہ پراپنوتیہ اتم -
ییگا

۱۳۱
اسکو جس ملیگا اور اپنی ذات میں پردھان
ہوگا - اور اچل لکھمی پاویگا اور بھلا ہوگا
اور سب سے اتم ہوگا -

वह अशुभ को नहीं प्राप्त हो-
गा परलोक में और इस लो-
क में ॥१२७॥१२७॥१२७॥

मू॰ वेदान्त गो ब्राह्मण
स्स्यात्क्षत्रियो विजयीभ
वेत् । वैश्यो धन समृद्ध-
स्स्याच्छूद्रः सुख मवा-
प्नुयात् ॥१२८॥१२८॥

टी॰ जो ब्राह्मण पढ़ेगा वेदान्त
को जानैगा और क्षत्री विजय
को प्राप्त होगा । वैश्य धन को
प्राप्त होगा और शूद्र सुख को
प्राप्त होगा ॥१२८॥१२८॥

मू॰ धर्म्मार्थी प्राप्नुयाद्ध-
र्म्ममर्थार्थी चार्थ माप्नु-
यात् । कामानवाप्नु-
यात्का[illegible]
प्नुयात्प्रजाः ॥ १२९ ॥

टी॰ धर्म्म की इच्छावाला धर्म्म
को प्राप्त होगा द्रव्य की इच्छावा-
ला द्रव्य को प्राप्त होगा अर्थवाला

وہ اس لوک اور پرلوک مین اشبھ کو
نہ پراپت ہوگا -

اشلوک ۱۲۸

بیدانت گو براہمنہ سیات کشتریو
ججی بھویت - بیشیو دھن سمردھہ
سیات شودرہ سکھ مواپنیات -

ٹیکا ۱۲۸

جو براہمن اسکو پڑھیگا وہ بیدانت کو جانیگا
اور چھتری فتح پاویگا - اور بیشیہ دھن دولت
اور شودر سکھ پاویگا -

اشلوک ۱۲۹

دھرمارتھی پراپنیات دھرم
مرتھارتھی چارتھ ماپنیات
کامان واپنیات کامی پرجا
رتھی چاپنیات پرجا -

ٹیکا ۱۲۹

دھرم چاہنے والا دھرم کو پاویگا اور دولت
چاہنے والا دولت کو پاویگا اور مراد چاہنے والا

रक्षा करता है सर्व्वप्रहर-
णायुधः सम्पूर्ण शास्त्र प्र-
हार करने वाले पास हैं जि-
स के ॥१२५॥१२५॥१२५॥

ओं सर्व्वप्रहरणायुधः

अथ माहात्म्य ॥

मू॰ इतीदं कीर्त्तनीय-
स्य केशवस्य महात्म-
नः। नाम्नां सहस्रं दि-
व्यानामशेषेण प्रकी-
र्त्तितं ॥१२६॥१२६॥

टी॰ यह नाम कीर्त्तन करते हुवे
केशव महात्मा के। हजार ना-
म दिव्य सारे कीर्त्तन करे ॥१२६॥

मू॰ य इदं शृणुयान्नि-
त्यं यश्चापि परिकीर्त्त-
येत्। नाशुभं प्राप्नुया-
त्किञ्चित्सोमुत्रेह च मा-
नवः ॥१२७॥१२७॥

टी॰ जो कोई इन नामों को नि-
त्य सुने और जो कोई कीर्त्तन करे

رچھا کرتا ہے۔ سرب پرہرنا
یدھہ سب ہتھیار پرہار کرنے والے
پاس ہیں جسکے

ماہاتم

اونگ سرب
پرہرنایدھہ

اشلوک ۱۲۶

اِتی دنگ کیرتنی یسیہ کیشوسیہ
مہاتمنہ۔ نامنانگ سہسرنگ
دبیانانگ شیکھین پرکیرتتنگ

ٹیکا ۱۲۶

یہ نام کیرتن کرتے ہوئے کیشو مہاتما کے
ہزار نام دبیہ سارے کیرتن کری۔

اشلوک ۱۲۷

یہ اِدنگ سرن یان نتینگ یشچا
پرکیرتییت۔ ناشبھنگ پراپنیا
تکنچت سوترمیہ چ مانوہ۔

ٹیکا ۱۲۷

جو کوئی ان نامونکو ہمیشہ سنے اور جو گاوی

वीरवानः वाराह रूप धारण
करके हिरण्याक्ष को मारनेवा-
ला है सामगायनः सामवेद
का गाने वाला है देवकी नंद-
नः देवकी का पुत्र है स्रष्टा
जगत का रचने वाला है क्षि-
तीशः पृथ्वी का मालिक
है पापनाशनः पापों का
दूर करने वाला है ॥ १२४ ॥

मू· शङ्खभृन्नन्दकीचक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्व्वप्रहरणायुधः ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

टी· शङ्खभृत् शङ्ख का धारण करने वाला है नन्दकी विद्यारूप तलवार है जिसके चक्री सुदर्शन चक्र वाला है शार्ङ्गधन्वा शार्ङ्ग धनुष का धारण करनेवाला है गदाधरः गदा का धारण करनेवाला है रथाङ्गपाणि रथ का पहिया है हाथ में जिसके रक्षोभ्यः

بکھیاسہ باراہ روپ دھارن کرکے
ہرنیاکش دیت کو مارنیوالا ہی ساما
گاینہ سام بید کا گانیوالا ہی دیوکی
نندنہ دیوکی کا پتر ہی سترشٹا
جگت کا رچنے والا ہی چھتیشہ پرتھوی
کا مالک ہی پاپ ناشنہ پاپوں کا
دور کرنے والا ہی

اشلوک

۱۲۵
سنکھ بھرت نندکی چکری شارنگ
دھنوا گدادھرہ رتھانگ
پان رکشوبھیہ سرب پرہرنایدھہ

ٹیکا

۱۲۵
سنکھ بھرت سنکھ کا دھارن کرنے
والا ہے نندکی بدیا روپی تلوار ہے
جسکے چکری سدرشن چکر والا ہے
شارنگ دھنوا سارنگ دھنکھ کا
دھارن کرنیوالا ہی گدادھرہ گدا کا
دھارن کرنے والا ہے رتھانگ
پان رتھ کا پہیا ہی ہاتھ میں جسکے رکشوبھیہ

मू॰ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः। यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ १२३ ॥

टी॰ यज्ञभृद् यज्ञ का धारण करने वाला है यज्ञकृद् यज्ञ करने वाला है यज्ञी यज्ञ वाला है यज्ञभुग् यज्ञ को भोक्ता है यज्ञसाधनः यज्ञ का साधने वाला है यज्ञांतकृत् यज्ञ का फल देने वाला है यज्ञगुह्यं ज्ञान यज्ञ रूप है अन्नं अन्न रूप है अन्नाद एव च अन्न का खाने वाला है ॥ १२३ ॥

मू॰ आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः। देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः १२४

टी॰ आत्मयोनिः आत्मा का उत्पन्न करने वाला है स्वयंजातो किसी से पैदा नहीं हुआ है

اشلوک ۱۲۳

یگیہ بھرد یگیہ کرد یگی یگیہ
بھگ یگیہ سادھنہ یگیانت
کرد یگیہ گہیم منّ منّاد ایوچ -

ٹیکا ۱۲۳

یگیہ بھرد جگ کا دھارن کرنے والا ہے
یگیہ کرد جگ کرنے والا ہے یگی جگ
والا ہے یگیہ بھگ جگ کا بھوگ کرنے
والا ہے یگیہ سادھنہ جگ کا سادھنے
والا ہے یگیانت کرت جگ کا پھل دینے
والا ہے یگیہ گہیم گیان جگ روپ
ہے ان ان روپ ہے اناد ایوچ
ان کا کھانے والا ہے -

اشلوک ۱۲۴

آتم جونہ سویم جاتو ویکھانہ
سام گاینہ - دیوکی نندنہ سرشٹا
چھتیشہ پاپ ناشنہ -

ٹیکا ۱۲۴

آتم جونہ آتما کا پیدا کرنیوالا ہے سویم
جاتو کسی سے پیدا نہیں ہوا ہے

एकात्मा एक आत्मा है अ-
र्थात् एक है जन्ममृत्यु
जरातिगः जन्म मरण
आदि से रहित है ॥ १२१ ॥

मू॰ भूर्भुवः स्वस्तरु-
स्तारः सपिताप्रपिता
महः । यज्ञो यज्ञपति-
र्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवा-
हनः ॥ १२२ ॥ १२२ ॥

टी॰ भूर्भुवः स्वस्तरुः महा
प्रलय करके जगत् को रचने-
वाला और तारने वाला है ता
रः अपने भक्तों को संसार सा-
गर से तारने वाला है सपिता
सब का पिता आप ही है प्र-
पितामहः सब का आजा
है यज्ञो यज्ञ रूप है यज्ञ
पतिः यज्ञों का मालिक है
यज्वा यज्ञ करने वाला है य-
ज्ञाङ्गो यज्ञों का मालिक बा-
राह रूप है यज्ञवाहनः मु-
क्ति चाहने वालों को मुक्ति का
देने वाला है ॥१२२॥१२२॥

ایکاتما ایک ہی آتما جسکی یعنی ذات
واحد و محیط کل موجودات ہے جنم
مرتیہ جراتگ جنم اور مرن
سے رہت ہے یعنی پیدائش اور فنا
سے مبرّی و علیحدہ ہے -

اشلوک ۱۲۲

بھور بھوہ سوستر ستارہ
سپتا پرپتامہہ - یگیو یگیہ پتر
یجوا یگیانگو یگیہ باہنہ -

ٹیکا ۱۲۲

بھور بھوہ سوسترہ مہاپرلے
کرکے جگت رچنے والا ہے اور جگت
کو تارنے والا ہے تارہ اپنے
بھگتوں کو سنسار ساگر سے تارنے والا
ہے سپتا سب کا پتا ہی یعنی خالق
جملہ مخلوقات کا ہے پرپتامہہ سب کا
دادا یعنی جد امجد ہے یگیو یگ روپ ہے
یگیہ پتہ یگوں کا مالک ہے یجوا
یگیہ کرنے والا ہے یگیانگو یگوں کا مالک باراہ روپ
ہے یگیہ باہنہ مکت چاہنے والوں کو مکت دیتا ہے

अर्थात् सकल सृष्टि से उत्तम
है सत्पथाचारः श्रेष्ठ मा-
र्गों का आचारी है अर्थात् मनु
ष्यों को अच्छी राह पर चला-
ता है प्राणदः प्राण देने वा-
ला अर्थात् जीवों की उत्पत्ति
करने वाला है प्रणवः ओंकार
रूप है पणः व्यवहार करने
में सच्चा है ॥ १२० ॥ १२० ॥

मू॰ प्रमाणंप्राणनिलयः
प्राणभृत्प्राणजीवनः। त
त्त्वंतत्त्वविदेकात्माजन्म
मृत्युजरातिगः ॥१२१॥

टी॰ प्रमाणं सिद्ध प्रकाश ब्र-
ह्म का कहने वाला है प्राण
निलयः ज्ञान इन्द्रियों का
आसरा है प्राणभृत प्रा-
णों का प्रसन्न करने वाला है
और शक्ति देने वाला प्राण
जीवनः प्राणों का जिलाने-
वाला है तत्त्वं तत्त्व है, जिसका
नाश नहीं तत्त्वविद तत्त्व अ-
र्थात् आत्मा का जानने वाला है

یعنی تمام عالم سے فائق تر ہی ست
پتھا چارہ اچھے مارگون کا آچارج ہی
یعنی آدمیونکو طریقہ نیکوکاری پر چلانیوالا
ہی پران دہ پران دینے والا ہی یعنی
جانونکو پیدا کرنیوالا ہی پرنوہ اونگکار
روپ ہی پنہ بیوہار کرنے مین سچا ہی
یعنی بطریقہ راستی بیوہار رکھتا ہی

اشلوک

۱۲۱
پرمانگ پران نلیہ پران بھرت
پران جیونہ - تتونگ تتو
بدیکاتما جنم مرتیو جراتگہ -

۱۲۱
ٹیکا
پرمانگ سدہ پرکاش گیان روپ برہم کا
کہنے والا ہی پران نلیو گیان اندریون کا
آسرا ہی پران بھرت پرانونکا پرسن
کرنیوالا ہی یعنی قوت دہندہ نفس آئندہ و
روندہ پران جیونہ پرانونکا جلانے والا
ہی تتونگ تتو ہی اور جسکا ناش نہین ہی
تتو بد آتما کا جاننے والا ہے یعنی
دانندہ خلاصہ عالم کا ہے

उत्पत्ति का आदि कारण है
जनजन्मादिः उत्पन्न हो-
ने वालों का जन्म देने वाला है
भीमो डरे हुवे हैं सब जिससे
भीमपराक्रमः डराने वा-
ले हैं पराक्रम जिसके राक्षसों
को अर्थात् उसकी शक्ति सा-
मर्थ्य से सब डरते हैं ॥ ११९ ॥

मू॰ आधारनिलयो
धाता पुष्पहासः प्र-
जागरः । ऊर्द्ध्वगस्स-
त्पथाचारः प्राणदः प्र-
णवः पणः ॥ १२० ॥

टी॰ आधारनिलयो पंच
महाभूतों का आसरा है अर्था-
त् सब संसार उसी से ठहरा है
धाता जिसका कोई उद्धार
करने वाला नहीं है पुष्प
हासः फूलों की तरह है हँ-
सी जिसकी अर्थात् फूल की
तरह हँसता है प्रजागरः
अज्ञान दूर हो गया है जिसका
ऊर्द्ध्वगः संसार के रहने-
वालों से ऊँचा है स्थान जिसका

جن جناوہ پیدا ہونے والونکو پیدا کرنے
والا ہی بھیمو ڈرتے ہین سب جس سے
یعنی سبب دہشت دارین کا ہی بھیم
پراکرمہ ڈرانے والے ہین پراکرم
جسکے راچھسونکو یعنی اسکی قوت قوی سے
سب خوف کہاتے ہین —

اشلوک

۱۲۰

آدھار نلیو دھاتا پشپ ہاسہ
پرجاگرہ — اوردھوگہ ست
پتھاچارہ پرانده پرنوہ پنہ

ٹیکا

۱۲۰

آدھار نلیو پنچ مہا بھوتون کا آسرا ہی
یعنی قائم دارندۂ عالم ہی دھاتا جسکا
دوسرا آدھار کرنیوالا نہین ہی پشپ
ہاسہ پھولون کی طرح ہی ہنسی یعنی خندہ
[illegible] جسکی پرجاگرہ اگیان دور
ہوگیا ہے جسکا یعنی بصورت عقل کامل
کے ہے اوردھوگہ سنسار کے
رہنے والون سے اونچا ہی استھان جسکا

जिसका अर्थात् कोई उसको
पा नहीं सक्ता विदिशो हर-
एक को यथायोग्य फल देता
है व्यादिशो अनेक आज्ञा
को देने वाला है अर्थात् इन्द्र
ब्रह्मा आदि सब उसके आ-
ज्ञाकारी हैं दिशः कर्म्मफ-
ल का देने वाला है ॥ ११८॥

मू॰ अनादिर्भूर्भुवो ल-
क्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः
जननो जनजन्मादिर्भी-
मोभीमपराक्रमः॥ ११९॥

टी॰ अनादिः जिसका आदि
कारण कोई नहीं है अर्थात् आ-
दि नहीं रखता है भूर्भुवो पृ-
थ्वी का आसरा अर्थात् सब
की उत्पत्ति का आदि कारण
है लक्ष्मीः धनवान् है सु-
वीरो सुन्दर है गति जिसकी
रुचिराङ्गदः सुहावन है
बिजायठ जिसका और यह
कि कुशलानन्द भूषण उसका
है जननो जीवों का पैदा क-
रने वाला है अर्थात् सृष्टि की

جسکا یعنی اُسکو کوئی پا نہیں سکتا بدِشو
ہر ایک کو موافق مرتبہ کے ثمرہ دیتا ہے
بیادِشو اَنیک آگیا کرنے والا ہے یعنی
اِندر اور برہما وغیرہ سب پر اُسکا حکم جاری
ہے دِشہ کرم پھل سکا دینے والا ہے یعنی
دہندۂ نتائج اعمال ہے

اشلوک

119

اَنادِر بھور بھوو لکشمی سُبیرو
رُچرانگدہ - جننو جن جنمادِر
بھیمو بھیم پراکرمہ -

ٹیکا

119

اَنادہ جسکا آدکارن کوئی نہیں ہے یعنی
ابتدا نہیں رکھتا ہے بھور بھوو پرتھوی کا
آسرا یعنی سبب پیدائش سب کا ہے لکشمی
دھن وان ہے سُبیرو سُندر ہے گت جسکی
رُچرانگدہ سُہاونے ہیں بازوبند جسکے
اور یہ کہ خیریت دائمی زیور اُسکا ہے جننو
جیوؤں کا پیدا کرنے والا ہے یعنی وہ ذات
ہے کہ اول سبب پیدائش عالم کا ہے

नाम के स्मरण से मनुष्यों के पाप
दूर करता है **दुःस्वप्ननाशनः**
खोटे स्वप्न को नाश करने वाला है
वीरहा संसार बन्धन से छुड़ा
कर मुक्ति देता है **रक्षणः** रक्षा
करने वाला है **शान्तो** अच्छे
मार्ग में होने वाला भगवान्
रूप **जीवनः** सम्पूर्ण प्रजा को
जिलाने वाला है **पर्य्यवस्थि
तः** बाहर भीतर सब जगह
स्थित और व्यापक है ॥ ११७॥

**मू॰ अनन्तरूपोऽनन्तश्री
र्जितमन्युर्भयापहः । च
तुरस्रो गम्भीरात्मा विदि
शो व्यादिशो दिशः ॥ ११८॥**

टी॰ **अनन्तरूपो** अनन्त
रूप हैं जिसके **अनन्तश्री** अनन्त
है शोभा जिसकी **जितमन्युः**
जीता है क्रोध जिसने **भया
पहः** भय का दूर करने वाला
है **चतुरस्रो** जैसे कर्म्म हैं
वैसे ही फल देने वाला है **ग
म्भीरात्मा** अथाह है मन

نام لینے والون کے سب پاپ دور کرتا ہی
وہ **سوپن ناشنہ** برے خواب کی تاثیر
کا دور کرنے والا ہی **بیرہا** سنسار کے بندھن
سے چھڑا کر مکت دیتا ہی **رکشنہ** رچھیا کرنے
والا ہی یعنی محافظ حقیقی وہی ہی **شانتو** اچھے
مارگ مین ہونیوالا ہی بھگوان روپ **جیونہ**
سب کا جلانی والا ہی **پری وستھتہ**
اندر باہر تمام عالم مین پھیلا ہوکر قائم ہی۔

اشلوک ۱۱۸

**اننت روپو ننت شری رجت
منیر بھیاپہہ چترسر گمبھیر آتما
بدشو بیاد شوو دشہ۔**

ٹیکا ۱۱۸

اننت روپو بے انتہا ہین روپ جسکے
اننت شری بہت ہی شوبھا جسکے
یعنی قوت و قدرت بے انتہا رکھتا ہے
جت منیہ جیتا ہی کرودھ جسنے یعنی قوت
غضب پر غالب ہی **بھیاپہہ** بھی کا دور کرنے
والا ہی **چترسر** جیسے کرم ہین ویسے پھل
دینے والا ہی **گمبھیر آتما** اتھاہ ہے من

टी॰ अक्रूरः क्रूरतासे रहित
है पेशलो अच्छा है मन बा-
णी शरीर कर्म्म जिस का द-
क्षो जल्दी करने वाला है द-
क्षिणः भक्तों को जल्दी फल
देने वाला है क्षमिणाम्वरः
क्षमावालों में श्रेष्ठ है विद्व-
त्तमो ज्ञानियों मे श्रेष्ठ उत्तम
जानने वाला है वीतभयः
जाता रहा है भय जिसका अ-
र्थात जन्म मरण के भय से रहि-
त है पुण्य श्रवणकीर्त्त-
नः पवित्र करने वाला है श्रव-
ण और कीर्त्तन जिसका ॥११६॥

मू॰ उत्तारणो दुष्कृतिहा
पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः। वी
रहा रक्षणः सन्तो जीवनः
पर्य्यवस्थितः ॥ ११७ ॥

टी॰ उत्तारणो संसार सागर
से भक्तों को पार उतारने वा-
ला है दुष्कृतिहा पापोंका
दूर करनेवाला है पुण्यो
पुण्य रूप है अर्थात अपने

ٹیکا

۱۱۶
اکروره بُرائی سے رہت ہی پیشلو
اچھا ہی من بانی کرم شریر جسکا دکشو
جلدی کرنیوالا ہی دکشنہ بھکتوں کو
جلدی پھل دینے والا ہی چھمنامبره
چھما والون مین سریشٹھ ہی بدوتمو
گیانیون مین سریشٹھ اور بڑا جاننے والا
ہی بیت بھیہ جاتا رہا ہی خوف جسکا
یعنی خوف پیدائش و مرن سے پاک ہی
پنیہ شروَن کیرتنہ پوتر کرنیوالا ہی
شروَن اور کیرتن جسکا۔

اشلوک

۱۱۷
اُتارنو دُشکرت ہا پنیو دُسوپن
ناشنہ۔ بیرہا رکشنہ سنتو
جیونہ پریی وستھتہ۔

ٹیکا

۱۱۷
اُتارنو سنسار ساگر سے بھکتوں کو پار
اتارنے والا ہی دشکرت ہا پاپونکا
دور کرنیوالا ہی پنیو پُن روپ ہی یعنی اپنے

और यह कि शत्रुता मित्रता से
रहित हो उसको अरौद्र कहते हैं
कुण्डली शेषरूप है **चक्री**
सुदर्शन चक्र है जिसके हाथ में
अर्थात् जीव का तत्व उसके हा-
थ में है **विक्रमी** पराक्रम वा-
ला है **ऊर्ज्जितशासनः** बल-
वान् है आज्ञा जिसकी अर्थात्
वेद वचन उसीका कहा हुआ है
शब्दातिगः सम्पूर्ण शब्दों
को उल्लङ्घन करने वाला है अ-
र्थात् वचन से पहिचानने में नहीं
आता है **शब्दसहः** निर्गुण श-
ब्द कहने वाला है और शब्द
का संभारने वाला है अर्थात् सब
वेदों का तत्व वही है **शिशि-**
रः तीनों ताप का दूर करने वा-
ला है **शर्वरीकरः** माया र-
चने वाला है ॥ ११५ ॥ ११५ ॥

मू० अक्रूरः पेशलो दक्षो
दक्षिणः क्षमिणाम्वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्य-
श्रवणकीर्त्तनः ॥ ११६ ॥

اور یہ کہ جسکو اندیشہ دوستی و دشمنی کا نہو
اسکو بھی اَرَودر کہتے ہیں **کُنڈلی** شیش
روپ ہے **چکری** سُدرشن چکر والا ہے یعنی
خلاصہ دلونکا اسکے ہاتھ میں ہے **بِکرمی**
پراکرم والا ہے یعنی چالاک و تیز تر ہے
اُورجت شاسنہ بلوان ہے آگیا
یعنی حکم جسکا یعنی احکام بید کہے ہوئے
اوسی کے ہیں **شبداتِگہ** شبدوں کو
نانگھنے والا ہے یعنی وہ ذات ایسی ہے
کہ سخن سے شناخت نہیں ہوتی ہے
شبد سہہ نرگن شبد کہنے والا اور
شبد کو سنبھالنے والا ہے یعنی سب بید
اسکو سب کا خلاصہ کہتے ہیں **ششرہ** تینوں
تاپ کا دور کرنیوالا ہے **شروری کرہ**
مایا رچنے والا ہے یعنی آفرینندہ مکر و فریب
اور انتظام دونوں عالم کا ہے ۔

اسلوک

اکروره پیشلو دکشو
دکشنا کشمنا موره ۔ بدوتمو بیت بھیہ
پنیہ شرون کیرتنہ ۔

टी॰ सनात् काल रूपी नाराय-
ण है सनातनतमः ब्रह्मा-
दिकों का कारण अर्थात उत्प-
न्न करनेवाला है कपिलः क-
पिलवर्ण अर्थात अग्नि रूप है
वह अग्नि जो जल में औदे रङ्ग
की होती है इसवास्ते उसको क-
पिल कहते हैं कपिः सूर्य रूप
है अर्थात् सब जल अपने में खीं-
च लेता है अव्ययः सब जगत्
जिसमें लीन होजाय स्वस्तिद-
ः भक्तों को मङ्गल देनेवाला
है स्वस्तिकृत् मङ्गल करने-
वाला है स्वस्ति आनन्द रूप
है स्वस्तिभुक् आनन्द का भो-
गने वाला है स्वस्तिदक्षि-
णः आनन्द करके बढ़ने वा-
ला है ॥११४॥ ११४॥ ११४ ॥११४॥

मू॰ अरौद्रः कुण्डली चक्री
विक्रम्यूर्जितशासनः। श-
ब्दातिगः शब्दसहः शिशि-
रः शर्वरीकरः ॥११५॥

टी॰ अरौद्रः नहीं है क्रोध जिसके

ٹیکا
۱۱۴ سناتؔ کال روپی ناراین ہی سناتن
تمہ برہماد کون کا کارن یعنی پیدا کنندہ ہے
کپلہ کپل بدن یعنی اگن روپ ہی وہ آگ
جو کہ دریائے محیط میں اودے رنگ کی ہوتی
ہی اسواسطے اسکو کپل کہتے ہیں۔ کپ
سورج روپ ہی یعنی سب پانی اپنے میں
کھینچ لیتا ہی اویّیہ سب جگت جسمیں
لین ہو جاتا ہی سوستی ذہ منگل کا
منگل دینے والا ہے سوستی کرت
منگل کرنے والا ہی سوستی آنند روپ
ہی سوستی بھک آنند کا بھوگنے
والا ہے سوستی دکشنہ آنند
روپ کر کے بڑھنے والا ہی

اشلوک
۱۱۵ اروودرہ کنڈلی چکری بکرمیورج
جت شاسنہ۔ شبداتگہ شبدسہہ
ششرہ شروری کرہ۔

ٹیکا
۱۱۵ اروودرہ نہیں ہے کرودھ جسکو

टी॰ अनन्तो नहीं है अन्त जिसका
हुतभुग् भक्तों के पुण्य का भो-
गी है भोक्ता योगों का भोगने
वाला है सुखदो सुख देने वाला
है नैकजो अनेक बार उत्पन्न
होने वाला है अर्थात धर्म की र-
क्षा के लिये बारम्बार अवतार ले-
ता है अग्रजः सबसे आगे पैदा
होने वाला है अर्थात सब से पहिले
है अनिर्विण्णः दोषरहित है
अर्थात सब तरह का सुख रखता
है और घमण्ड नहीं रखता है स-
दामर्षी सदा संभारने वाला अ-
र्थात भक्तों को सुख देता है लोका-
धिष्ठानं लोकों का आश्रय अर्था-
त तीनों लोक की रक्षा अपने साम-
र्थ्य से करता है अद्भुतम् अद्भुत
आश्चर्य रूप है अर्थात तरह तर-
ह के गुणों से युक्त है ॥ ११३ ॥

मू॰ सनात्सनातनत-
मः कपिलः कपिरव्ययः
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्व-
स्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिद-
क्षिणः ॥ ११४ ॥ ११४ ॥

ٹیکا

۱۱۳

اننتو نہیں ہے انت جسکا ہت بھگ
بھکتوں کے پُن کا بھوگی ہے بھوکتا
جوگون کا بھوگنے والا ہے سُکھدو
سُکھ دینے والا ہے نیکدو انیک با
پیدا ہونیوالا ہے یعنی واسطے محافظت طریقہ
نیکوکاری کے بارہا قالب اختیار کیا اگرجہ
سب سے آگے پیدا ہونیوالا ہے یعنی سب سے
اول ہے اور اسکا ہے انربیماہ دوش سے
رہت ہے یعنی سب طرح کا سامان عیش
رکھتا ہے اور غرور نہیں رکھتا ہے سدامرشی
سدا سنبھارنیوالا ہے یعنی بھکتوں کو سکھ
دیتا ہے لوکادھشٹھان لوگوں کا آسرا
یعنی تینوں لوک کو بقوت اپنی محفوظ رکھتا ہے
ادبھتم ادبھت روپ ہے یعنی انواع و اقسام
کی صفتوں سے موصوف ہے

اشلوک ۱۱۴

سناتسناتن تمہ کپلہ کپی ...
سوستدہ سوستکرت سوست
سوستبھک سوست دکشنہ

मू॰ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । रविर्विरोचनः सूर्य्यः सविता रविलोचनः ॥ ११२ ॥

टी॰ विहायसगतिः आकाश है गति जिसकी ज्योतिः स्वयंप्रकाश रूप है सुरुचिः सुंदर है शोभा जिसकी हुतभुग होम का भोजन करने वाला है विभुः सब जगह व्यापक है रविः सूर्य्य रूप होकर जल को पीता है विरोचनः विशेषता करके शोभावान है सूर्य्यः आकाश पर चलता है अर्थात बड़ा वीर है सविता सब लोकों को अपने कर्मों में लगाता है और सब को उत्पन्न करता है रविलोचनः सूर्य्य है नेत्र जिस के अर्थात सूर्य्य चन्द्रमा उसके नेत्र के प्रकाश हैं ॥ ११२ ॥

मू॰ अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकदोग्रजः । अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतं ॥ ११३ ॥

اشلوک

۱۱۲ بہایسگتر جیوتہ سرچر ہتہت
بہگ بہہ ۔ ربر بروچنہ سوچہ
سبتارب لوچنہ ۔

ٹیکا

۱۱۲ بہایسگتہ آکاش ہی گت جسکی
یعنی فائق تر آسمان سے ہی جیوتہ از خود
روشن ہی مثل شعاع سرچہ سندر ہی شوبہا
جسکی یعنی ظہور اسکا نہایت زیبا ہی ہت
بہگ ہوم کا بہوجن کرنیوالا ہی بہہ
سب جگہ بیاپک ہی یعنی سب جگہ متصرف ہی
اور حاضر ہر شے عالم ہی رب جل کو سورج
ہوکر پیتا ہی بروچنہ بہت ہی شوبہا
والا ہی سورچہ آکاش پر چلتا ہی یعنی شجاعت
کامل رکھتا ہی سبتا سبکو اپنے اپنے کرموں
مین لگاتا ہی اور سبکو پیدا کرتا ہی رب
لوچنہ سورج ہین نیتر جسکے یعنی سورج
اور چندرمان اسکی آنکھیں ہین ۔

اشلوک ۱۱۳ اننتو ہت بہگ بہوکتا
سکہدو نیکدوگرجہ ۔ انربنا سدا
مرکھی لوکا دہشٹہان مدبہتم ۔

मू· सत्ववान्सात्त्विकः स
त्यः सत्यधर्म्मपरायणः।
अभिप्रायःप्रियार्होर्हःप्रि
यकृत्प्रीतिवर्द्धनः॥१११॥

टी· सत्ववान् शूरवीर है सा-
त्विकः सत्यवती गुण रखता
है सत्यः ब्रह्म के जाननेवालों
में उत्तम है अर्थात् अच्छों से
अच्छा है सत्यधर्म्मपराय-
णः सत्य और धर्म्म का आश्र-
य है अभिप्रायः परस्वार्थकी
कांक्षा है जिसके प्रियार्होर्हः
पूजनेयोग्य है और प्यारी वस्तु
देनेवाला है अर्थात् सबकीका-
मना पूरी करनेवाला है और अ-
विनाशी है प्रियकृत् भक्तों
को प्यार करनेवाला है अर्थात्
जो कोई उसकी पूजा करता है
उसको वह प्रिय रखता है प्री-
तिवर्द्धनः प्रीति का बढ़ा-
ने वाला है अर्थात् अपने
भक्तों से प्रीति बढ़ाता-
है ॥ १११॥

اشلوک
ستوان ساتوک ستیہ ستیہ
دھرم پراینہ - ابھپرایہ پریار
ہوہنہ پریہ کرت پریت بردھنہ ۱۱۱

ٹیکا ۱۱۱
ستوان ستو یعنی شجاع کامل ہے
ساتوک ستوگنی ہے یعنی نہایت
نیک ہے ستیہ برہم کے جاننے والوں
میں اتم ہے یعنی نیکوں سے بھی نیک ہے
ستیہ دھرم پراینہ ست اور دھرم
کا آشرے یعنی پناہ ہے ابھپرایہ پرآیا
سوارتھ کرنیکی کامنا ہے جسکو پریارہوہنہ
پوجنے کے لائق ہے اور پیاری چیزونکا دینے
والا ہے یعنی سبکی کامنا پوری کرتا ہے اور
لازوال ہے پریہ کرت بھگتوں کو
پیار کرنیوالا ہے یعنی جو کوئی اسکی پرستش
کرتا ہے اسکو دوست رکھتا ہے پریت
بردھنہ پریت کا بڑھانے والا ہے یعنی
جو کوئی اسکی بھگت یا پوجن کرتا ہے تو وہ اسکے
دل میں محبت و اعتقاد زیادہ کرتا ہے۔

और यह कि पवन उसकी आज्ञा मे चलता है ॥१०९॥१०९॥

मू॰ धनुर्द्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः। अपराजितः सर्व्वसहो नियंता नियमो यमः ॥११०॥

टी॰ धनुर्द्धरो धनुषधारी रामचन्द्र धनुर्वेदो वाणविद्या जानने वाला है दण्डो खोटे मार्ग से हटाने वाला और अच्छे मार्ग में लगाने वाला है दमयिता धर्म्मराज होकर जीवों को दण्ड देता है दमः कुमार्गियों को अच्छे मार्ग में लगाने वाला है अपराजितः सब किसी को जीते हुवे है अर्थात शत्रु उसपर प्रबल नहीं हो सक्ता है सर्व्वसहो सब कुछ सहने वाला है नियंता ब्रह्मादि कों को सृष्टि रचने में लगाने वाला है नियमो यमः जिसका कोई सिक्षा देने वाला नहीं है और जिसके मृत्यु नहीं है।१११

اور نیز یہ کہ ہوا اُسکے خوف سے رواں ہے -

اشلوک

۱۱۰

دھنُر دھرو دھنُر بیدو دنڈو دمیتا دمہ - اپراجتہ سرب سہو نینتا نیمو یمہ -

ٹیکا

۱۱۰

دھنُر دھرو دھنکھ دھاری ہے یعنی شری رام چندر دھنُر بیدو علم تیر اندازی کا عالم ہے دنڈو کھوٹی راہ سے ہٹانیوالا اور اچھی راہ پر لگانیوالا ہے دمیتا دھرم راج رُوپ ہے یعنی بصورت ملک الموت ہوکر خلائق کو سزا ے اعمال دیتا ہے دمہ کُمارگیوں کو سُمارگ مین لگانے والا ہے اپراجتہ سبکو جیتے ہوئے ہے کوئی اُسپر غالب نہیں سرب سہو سب کچھ سہنے والا ہے نینتا برھما وغیرہ کو سرشٹ کے رچنے مین لگانے والا ہے نیمو یمہ جسکا کوئی سکھانیوالا نہیں اور جسکے موت نہیں ہے -

वर्द्धनः जगत का बढ़ानेवा-
ला है ॥ १०८ ॥ १०८ ॥ १०८ ॥

मू॰ भारभृत्कथितो योगी
योगीशः सर्व्वकामदः। आ-
श्रमः श्रमणः क्षामः सुप-
र्णो वायुवाहनः ॥ १०९ ॥

टी॰ भारभृत् पृथ्वी का भार धार-
ण करने वाला है कथितो श्रे-
ष्ठ है योगी जीव को ब्रह्म प्राप्त
हो जिस करके ऐसा योगवाला है
योगीशः योगियों का मालि-
क है सर्व्वकामदः सब काम-
ना देने वाला है आश्रमः सु-
ख देने वाला है श्रमणः ज-
न्म मरण करके जीवों को भर-
माता है अर्थात बुद्धिमानों
को भोग्य देता है क्षामः सब
कामना को अन्त काल में दू-
र कर देता है और अति पवि-
त्र है सुपर्णो अच्छे वेद रूपी
पत्ती अर्थात संसार वृक्ष रूप शरी-
र वेद पत्ती रूप है वायुवाहनः
प्राणों का धारण करने वाला है

بر دھن جگت کا بڑھانیوالا ہے —

اشلوک

۱۰۹
بھار بھرت کتھتو جوگی جوگیشہ
سرب کام دہ - آشرمہ شرمنہ
چھامہ سپرنو بایو باہنہ -

ٹیکا

۱۰۹
بھار بھرت پرتھوی کا بوجھ دھارن
کرنیوالا ہے کتھتو سریشٹھ یعنی اچھا ہے
جوگی جس جوگ سے جیو کو برہم پراپت ہو
ایسے جوگ والا ہے جوگیشہ جوگیوں کا
مالک ہے سرب کام دہ سب کامنا
کا دینے والا ہے آشرمہ سکھ کا دینے والا ہے
شرمنہ جنم مرن کرکے جیوونکو بھرماتا ہے
یعنی تقدیر دہندہ عاقلان ہے چھامہ سب
کامنا انت کال میں دور کر دیتا ہے اور نہایت
لطیف و پاک ہے سپرنو اچھے بید روپی
ہے پتی جسکی یعنی عالم صورت درخت ہے
اور بید صورت برگ ہے بایو باہنہ
پرانوں کا دھارن کرنے والا ہے

सिवाय ध्यान के नहीं पासक्ता है
बृहत् चिन्ता करने योग्य नहीं है
अर्थात् अत्यन्त श्रेष्ठ है कृशः
सूक्ष्म रूप अर्थात् बहुत महीन
है स्थूलो विराट् रूप अर्थात् बहु
त भारी है गुणभृत् गुणों का
धारण करने वाला है अर्थात् उ
त्पत्ति जिसकी नाश के तुल्य है
निर्गुणो कोई गुण नहीं रख
ता है महान् [illegible]
वाला है अर्थात् जिह्वा से कोई
उसका बखान नहीं कर सक्ता है हाथ
से कोई पकड़ नहीं सक्ता आँख से
कोई देख नहीं सक्ता है अधृतः
नहीं है किसी से धारण करने योग्य
अर्थात् कोई उसका बोझा उठा
नहीं सक्ता स्वधृतः अपने को
आप आधार है अर्थात् आ
प अपनी सामर्थ्य से स्थित है
किसी के बल के आधीन नहीं
स्वास्यः अच्छा है मुख जि
सका और यह कि वेद उस
का मुख है प्राग्वंशो प
हिले ही पहिले हुआ है वं
श जिस का ब्रह्म रूप वंश

جان نہیں سکتا برہت چنتا کرنے کے جوگ
نہیں یعنی بزرگ و عالیشان نہایت کرشہ ستوکشم
روپ یعنی نہایت باریک و شکل ہے
استھولو براٹ روپ یعنی نہایت بھاری
اور بہت بڑا ہے گنبھرت بہت گنون کا دھا
رن والا ہے یعنی پیدایش جسکی فنا کے ساتھ
موصوف ہے نرگنو کوئی صفت نہیں
رکھتا ہے مہان سکل ایشورج والا
ہے یعنی زبان سے اسکا بیان نہیں ہو سکتا
جا سکتا ہاتھ سے پکڑا نہیں جا سکتا آنکھ
سے دکھائی نہیں دیتا ہے ادھرت
کسی سے دھارن کرنے کے جوگ نہیں
ہے یعنی کوئی اسکا بوجھا اٹھا نہیں
سکتا ہے سودھرت اپنے کو
آپ ہی آدھار ہے یعنے بذات خود
قایم ہے دوسرے کی قوت سے کچھ
سروکار نہیں رکھتا ہے سواسیہ
اچھا ہے مکھ جسکا اور یہ کہ بید نفس
ذات پاک اسکا ہے پراگ
بنشو پہلے ہی پہلے ہوا ہے بنش
جسکا برہم روپ بنش

हैं अर्थात् सूर्य चन्द्रमा आदि सात नक्षत्र **सप्तवाहनः** सात हैं घोड़े जिसके अर्थात् सात दिन जो हैं वही उसके सात घोड़े हैं और सूर्य के रथ में जो घोड़ा है उसके सात मुख हैं **अमूर्त्तिः** चराचर भोजन करके रहित है अर्थात् कुछ भोजन नहीं करता वह ऐसा है कि इन्द्रियों से परे और निरूप है **अनघो** पाप दोष से रहित है **अचिन्त्यो** चिन्ता करने योग्य नहीं है अर्थात् ध्यान में नहीं आता है **भयकृत्** कुकर्मियों को नरक का भय देनेवाला है **भयनाशनः** भक्तों का भय दूर करनेवाला है ॥ १०७ ॥

یعنی سات ستارے سپت باہنہ سات ہیں گھوڑے جسکے یعنی سات دن جو ہیں وہ اسکے گھوڑے ہیں اور سورج کی سواری میں جو گھوڑا ہی اسکے سات منہ ہیں **امورتہ** چراچر بھوجن سے رہت ہی یعنی کچھ بھوجن نہیں کرتا ہی یہ وہ ذات ہی کہ محسوس نہیں ہی اور صورت نہیں رکھتا **انگھو** پاپ دوش سے رہت ہی یعنی بے عیب و بے علت ہی **اچنتیو** چنتا کرنیکے جوگ نہیں یعنی بیچ تصور دل کے نہیں آتا ہی **بھیکرت** بدکارونکو نرک کا خوف دینے والا ہی **بھیناشنہ** دھرماتما لوگون کا خوف دور کرنے والا ہی -

मू॰ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् । अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः ॥ १०८ ॥

اشلوک ۱۰۸

انو برہت کرشہ استھولو گن بھرت نرگنو مہان - ادھرت سودھرت سواسیہ پراگ ونشو ونش بردھنہ

ٹیکا ۱۰۸

टी॰ **अणुः** पाप दोष से रहित है अर्थात् ऐसा है कि उसका कोई

انو پاپ دوش سے رہت ہی یعنی وہ ایسا ہی کہ بجز اندیشہ دل کے اسکو کوئی

सुन्दर है संकल्प जिसका **सिद्धः** सिद्ध पुरुष है **शत्रुजित्** शत्रुओं को जीतने वाला अर्थात् मारने वाला है **शत्रुतापनः** शत्रुवों को दण्ड देने वाला है **न्यग्रोधो** सब के ऊपर प्रीति करनेवाला और भुलाने वाला भी है **उदुम्बरो** आकाश से अधिक निर्मल और संसार की उत्पत्ति का कारण है **अश्वत्थः** जगत रूप है अर्थात् वह ऐसा है कि जड़ ऊपर और पालव नीचे **चाणूरान्ध्रनिषूदनः** चाणूर और अन्ध्रजात राक्षसों को नाश करने वाला है ॥१०६॥ १०६॥

मू॰ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः। अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः॥१०७॥

टी॰ **सहस्रार्चिः** अनन्त हैं किरण जिसके **सप्तजिह्वः** सात हैं जिह्वा जिसके अर्थात् सातों द्वीप की अलग स्वामी हैं **सप्तैधा** सात तरह के प्रकाश अग्निरूप

سُندر ہین سنکلپ جسکے سدّھہ سدّھ پُرش
یعنی ذات کامل ہی شترجت دشمنونکو مارنے
والا ہی شترتاپنہ دشمنونکو عذاب دینے والا ہی
نیگرودھو سبسے پریت کرنیوالا ہی اور پردۂ
غفلت بھی ڈالنے والا ہی ادمبرو آکاش سے
بھی اچھا نرمل ہی اور سبب پیدایش عالم کا ہی
اشوتھہ جگت روپ ہی یعنی وہ ایسا
درخت ہی کہ جسکی جڑ اوپر اور شاخ نیچے ہے
چانور اندھر نشودنہ چانور اور
اندھر ذات راچھسون کو نیست و نابود
کرنے والا ہے

اشلوک ۱۰۷

سہسرارچہ سپت جہوہ سپت
ودھا سپت باہنہ - امورت
انگھو چنتو بھی کرد بھی ناشنہ -

ٹیکا ۱۰۷

سہسرارچہ انت ہین کرن جس کے
سپت جہوہ سات ہین زبان جسکے یعنی
ساتو دیپون کی الگ الگ بولی ہی سپت
ودھا سات ہین پرکاش اگن روپ

प्राप्त होने वाला अर्थात् पृथ्वी का
देने वाला है जैसे परशुरामजी ने
अश्वमेध यज्ञ करके ऋषभमन्त्रः
पीश्वर को सम्पूर्ण पृथ्वी दक्षि-
णा में दे दी कुन्दः कदली के
वृक्ष की तरह अच्छे फल का दे-
ने वाला है कुन्दः पृथ्वी का देने
वाला है जैसे परशुरामजी ने पृ-
थ्वी को दक्षिणा में दे दी पर्ज-
न्यः मेघ की तरह अपने भक्तों
को सुख देने वाला है पावनो
स्मरणमात्र करने से पवित्र करदेता
है अनिलः प्रेरने वाला नहीं है अमृ-
ताशो अमृत का पीने वाला है
अमृतवपुः सत है शरीर जि-
स का सर्वज्ञः सब का जानने
वाला है सर्वतोमुखः सब
तरफ है मुख जिस का ॥१०५॥

मू॰ सुलभः सुव्रतः सिद्धः
शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्य-
ग्रोधो दुम्बरोऽश्वत्थश्चाणू-
रान्ध्रनिषूदनः ॥१०६॥

दी॰ सुलभः सहज पूजा क-
रने से मिल जाता है सुव्रतः

پراپت ہونے والا ہی یعنی زمین کو خیرات
مین دینے والا ہی جیسے پرشرام جی نے
بعد اشومیدہ جگ کے رکھبہ رکھیشور کو
تمام زمین خیرات مین بطور دچھنا کے دیدی
کند کیلا کے درخت کی طرح اچھے پھل
کا دینے والا ہی کند پرتھوی کا دینے
والا ہی جیسے پرشرام جی نے پرتھوی کو خیرات
مین دیدیا پرجنیہ میگھ کی طرح اپنے
بھگتون کو سکھ دینے والا ہی پاونو سمرن
ماتر کے پوتر کردیتا ہی انلہ کوئی پیرنے
والا نہین ہی امرتاشو امرت کا کھانے
والا ہی امرت بپو امرت ہی شریر جسکا
سرب گیہ سب کا جاننے والا ہی سرتومکھ
مکھ سب طرف کو ہی جسکا۔

اشلوک ۱۰۶

سلبہ سبرت سدھہ ششرجت
ششرتاپنہ نیگرودھو دمبرو
شوتھ چانورانھرنشودنہ ۱۰۶

ٹیکا ۱۰۶

سلبہ سہج پوجا کرنے سے ملجاتا ہی سبرتہ

मू॰ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः
सर्व्ववागीश्वरेश्वरः। म
हाह्रदो महागर्त्तो महा
भूतो महानिधिः॥२०४॥

टी॰ सुवर्णबिन्दु ओंकाररूप
है और यजुर्वेद में लिखा है कि स
ब अङ्ग सुवर्ण रंग के हैं अक्षो
भ्यः राग और द्वेष वालों से वि
कार को प्राप्त नहीं होता अर्था
त् शत्रु मित्र किसी से उसको भ
य नहीं है अपनी जगह पर स्थि
त है सर्व्ववागीश्वरेश्वरः
सब ब्रह्मादिकों का ईश्वर है
महाह्रदो बे अन्त है महा
गर्त्तो ज्ञान बिना नहीं प्राप्त
होता है महाभूतो बड़ा ऐश्व-
र्य्य वाला है महानिधिः बड़ा
खजाना ब्रह्मानन्द का है॥२०४॥

मू॰ कुमुदः कुन्दरः कुन्दः
पर्जन्यः पावनोऽनलः। अ
मृतांशोऽमृतवपुः सर्व्वज्ञः
सर्व्वतोमुखः॥ २०५ ॥

टी॰ कुमुदः पृथ्वी में आनन्द को

اشلوک ۱۰۴

سُورن بندُ رکشوبھیہ سرب باگیشو
ایشورہ ۔ مہا ہردو مہاگرتو مہا
بھوتو مہاندھہ ۔

۱۰۴
ٹیکا ۔ سُورن بند اونکار روپ ہے
اور یجر بید مین لکھا ہی کہ تمام بدن مانند طلا
کے ہی رکشوبھیہ راگ اور دویش والون
سے کچھ اسکو نقصان نہین پہنچتا یعنی دوستی
دشمنی و اندیشہ و وسواس شیطانی سے اپنی جگہ
سے نہین جاتا ہمیشہ برقرار رہتا ہی سرب
باگیشو ایشورہ سب جسپ کلاان برہما
وغیرہ کا مالک ہی مہا ہردو بے انت ہے
مہاگرتو بغیر گیان کے نہین پراپت ہوتا ہے
مہا بھوتو بڑا ایشورج والا ہی مہاندھہ
بڑا خزانہ ہی گیان اور آنند کا ۔

اشلوک ۱۰۵

کمدہ کندرہ کندہ پرجنیہ پاونو
انلہ امرتا شو امرت بپہ
سربگیہ سربتومکھہ ۔

۱۰۵
ٹیکا

کمدہ پرتھوی یعنی زمین مین آنند کو

रत्ननाभः सुलोचनः ऋ
कोवाजसनः शृङ्गी जयं-
तः सर्व्व विज्जयी ॥१०३॥

टी॰ उद्भवः जन्म रहित और ज-
गत का जन्म करने वाला है सुन्द
रः मङ्गल का मङ्गल और भा-
ग्यवान है सुन्दो दया करने
वाला और गुणवान है रत्नना
भः अच्छी है नाभि जिसकी अ-
र्थात लाल के सदृश प्रकाशित
है सुलोचनः सुन्दर है नेत्र
जिसके अर्को ब्रह्मादिकोंसे
पूजित है सब देवता उसको
पूजते हैं वाजसनः अन्नका
देने वाला है अर्थात सब प्रकार
के अच्छे अच्छे भोजन देता है
शृङ्गी मत्स्य रूप भगवान है
अर्थात प्रलयकाल में मत्स्य
रूप होकर जल में वास कर-
ता है जयंतः वेअन्त वीरों
को जीता है जिसने अर्थात को-
ई शत्रु उसपर बल नहीं कर
सक्ता है सर्व्व विज्जयी सब
को जीतने वाला और जानने वाला है १०३

رتن نابھہ سلوچنہ ۔ ارکو
باجسنہ شرنگی جینتہ سرب بجّی ۔

ٹیکا

١٠٣

اُدبھوہ آپ جنم رہت ہی اور جگت کا
جنم کرنیوالا ہی سُندرہ منگلوں کا منگل
اور صاحب اقبال ہی سُندو دیا کرنیوالا
اور مجمع فضائل ہی رتن نابھہ اچھی ہی ناف
جسکی یعنی مانند لعل کے روشن و درخشان
ہی سُلوچنہ سُندر ہین نیتر جسکے یعنی چشم
زیبا رکھتا ہی ارکو برہما دکوں سے پوجت
ہی یعنی سب دیوتا اسکو پوجتے ہیں باجسنہ
ان کا دینے والا ہی یعنی سبکو رزق بخشتا ہی
شرنگی مچھ روپ بھگوان یعنی قیامت
مین بصورت نہنگ بالا سے آب قرار
پاتا ہی جینتہ بے انتہا دلاوروں کو جیتا
ہی جسنے یعنی سب دشمن اس سے مغلوب ہین
سرب بجّی سب کا جیتنے والا
اور سب کا جاننے والا ہے ۔

दुर्गो दुःख करके प्राप्त होता है अर्थात योगी जनों के हृदय में कठिनता से आता है दुराबासो दुःख करके योगी जन उस को हृदय में लाते हैं दुरारिहा दुष्टों और दानवों का मारने वाला है ॥ १०१ ॥

मू॰ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुबर्द्धनः। इन्द्रकर्म्मा महाकर्म्मा कृतकर्म्मा कृतागमः॥ १०२॥

टी॰ शुभाङ्गो सुन्दर है अङ्ग जिसका लोकसारङ्ग भँवर होकर भक्त जनों की सुगन्धि लेने वाला है सुतन्तुः अच्छा है विस्तार करने वाला जगत का तन्तुबर्द्धनः जगत का बढ़ाने वाला है इन्द्रकर्म्मा प्रतापवाला है महाकर्म्मा बड़े हैं कर्म्म जिसके कृतकर्म्मा किया है धर्म्म रूप कर्म्म जिसने कृतागमः रचा है वेद जिसने ॥ १०२ ॥

मू॰ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो

درگو مشکل سے ملتا ہی یعنی جوگی لوگ بعد دشواری تصور اسکا کرکے دل میں جگہ دیتے ہیں دُرآباسو بڑی مشکل سے جوگی لوگ اسکو اپنے ہردی میں لاسکتے ہیں دُراریہا دُشٹوں اور دانووں کا مارنیوالا ہی۔

اشلوک ۱۰۲

شُبھانگو لوک سارنگہ سُتنتُس تنتُ بردھنہ۔ اِندر کرما مہاکرما کرت کرما کرتاگمہ۔

ٹیکا ۱۰۲

شُبھانگو سندر ہی انگ جسکا لوک سارنگہ بھونرا ہوکر بھگت جنوں کی سگندھ لیتا ہی سُتنتُس اچھا ہی اوپستار کرنیوالا جگت کا ہی تنتُ بردھنہ جگت کا بڑھانیوالا ہی اِندر کرما پرتاپ والا ہی مہاکرما بڑے ہیں کرم جسکے کرت کرما کیا ہی دھرم روپی کرم جسنے کرتاگمہ بید کو رچا ہی جسنے یعنی پیدا کیا ہی

اشلوک ۱۰۳

ادبھوہ سندرہ سندو

चतुर्भावः धर्म अर्थ काम मो-
क्ष का उत्पन्न करने वाला है चतु-
र्वेद विद् चारों वेद का जानने वा-
ला है एकपात् सब प्राणी एक
हिस्सा हैं और कुछ हैं तीन हिस्सा
अर्थात् एक चरण रखता है॥२००॥

मू॰ समावर्तोनिवृत्ता-
त्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरा
वासो दुरारिहा ॥ २०१॥

टी॰ समावर्त्तो अज्ञानियों को
जन्म मरण देने वाला है निवृ-
त्तात्मा विषयभोग से हटा हु-
आ है मन जिसका दुर्जयो
दुःख करके जीता जाय भक्तों
को अर्थात् कोई उसपर अवश
नहीं हो सक्ता है दुरतिक्रमः
दुःख करके आलिङ्गन नहीं हो
सक्ता अर्थात् बुद्धि का भी पहुँच
ना कठिन है दुर्लभो दुःख कर
के भक्तों को मिलता है अर्थात्
घोर तपस्या करके उसतक मनु
ष्य पहुँचता है दुर्गमो दुः
ख करके जानने में आता है

چتر بھاوہ دھرم ارتھ کام موکش کے
پیدا کرنے والا ہے یعنی نیکوکاری و دولت و
مراد و رستگاری اسی سے حاصل ہوتی ہے
چتر بید بد چاروں بیدوں کا جاننے والا ہے
ایک پات سب پرانی ایک حصہ ہیں اور
کچھ تین حصہ یعنی ایک قدم رکھتا ہے

اشلوک ٢٠١

سماورتو نیورتاتما درجیو درتکرمہ
درلبھو درگمو درگو دراواسو درارہا

ٹیکا ٢٠١

سماورتو اگیانیوں کو جنم مرن دینے والا ہے
نیورتاتما بیشے بھوگ سے ہٹا ہوا ہے من جسکا
یعنی وہ ذات ہے کہ جسکو لذت کی خواہش نہیں
ہے درجیو دکھ سے بھگت لوگ اسکو پاتے
ہیں اور کوئی اس پر غالب نہیں ہے درتکرمہ
کٹھن سے دکھ سے پایا جاتا ہے یعنی مشکل ہے یعنی
عقل و تدبیر بھی اس تک نہیں پہنچ سکتی ہے
درلبھو دکھ سے بھگتوں کو ملتا ہے یعنی بعد
عبادت بسیار کے یا نہایت کوشش اور ریاضت
اسکی ذات تک وہ واصل ہوتے ہیں درگمو
بہت مشکل سے جاننے میں آتا ہے

को कहते हैं ॥९९॥९९॥

मू॰ चतुर्मूर्त्तिश्चतुर्बाहु
श्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्माचतुर्भावश्चतु
र्वेदविदेकपात् ॥१००॥

टी॰ चतुर्मूर्त्तिः चार हैं मूर्त्ति
जिसकी बिराट रूप हिरण्यग-
र्भ रूप माया युक्त रूप माया र-
हित रूप चतुर्बाहुः चार हैं भु-
जा जिसके शङ्ख चक्र गदा पद्म
चतुर्व्यूहः चार हैं व्यूह अ-
र्थात् पुरुष यथा श्रीकृष्ण बलदे-
व प्रद्युम्न अनिरुद्ध और भी प्रथ-
म शरीर पुरुष दूसरे छंद पुरुष अ-
र्थात् शास्त्र तीसरे वेद पुरुष चौथे
महापुरुष अर्थात् ब्रह्मा चतुर्ग-
तिः चारो आश्रमों को फल देनेवा-
ला है चतुरात्मा अच्छा है आत्मा
जिसका और ऐसा है कि शत्रुता मित्र-
ता लोभ अचेतपन से रहित है और
चित्त चेत ज्ञान आनन्द से युक्त है

اشلوک

۱۰۰
چتر مورتش چتر باہش چتر
بیوہش چترگتہ چتر اتما چتر
بھاوش چتر بید بدیک پات

ٹیکا

۱۰۰
چترمورتہ چار ہیں مورت جسکے یعنی
براٹ ہرنیہ گربھ مایا سہت مایا رہت
اول صورت کل عالم دوم صورت بید سوم
صورت دنیا یعنی کچھ عمل رکھتا ہی چہارم
لاہوت چتر باہہ چار ہیں بھجا جسکے
سنکھ چکر گدا پدم چتر بیوہہ چار ہیں
بیوہ یعنی پرش سری کرشن بلدیو پردمن
انردھ اول سریر پرش دوم چھند پرش
یعنی شاستر سوم بید پرش چہارم مہا پرش
یعنی برہما چترگتہ چاروں آشرم کو پھل
دینے والا ہی چتر اتما اچھا ہی اتما جسکا
یعنی یہ وہ ذات ہی کہ چاروں صفتوں یعنی
دوستی و دشمنی و طمع و غفلت سے پاک ہے
اور چار قوت رکھتا ہی دل و عقل و خودی و اندیشہ

वाला है ॥ ९८ ॥ ० ॥ ० ॥

मू० तेजोवृषो द्युतिधरः
सर्व्वशस्त्रभृतांवरः ।
प्रग्रहोनिग्रहोव्यग्रोनैक
शृङ्गोगदाग्रजः ॥ ९९ ॥

टी० तेजोवृषो तेजका बरसाने वाला है अर्थात सूर्य्य रूप होके [illegible] काल का जल बरसाता है द्युतिधरः शोभा का धारण करनेवाला है सर्व्वशस्त्रभृतांवरः सब शस्त्र धारण करने वालो में श्रेष्ठ है प्रग्रहो भक्तों [illegible] मार्गों से रक्षा करनेवाला है निग्रहो अपनी शक्ति करके सब प्राणियों को ग्रहण करने वाला है व्यग्रो नाशसे रहित है नैकशृङ्गो चारों वेद मस्तक हैं जिसके अर्थात् चारों वेद के उच्चस्थान रखता है गदाग्रजः बलदेव रूप अर्थात गदानाम वसुदेवजी का है और वसुदेवजी से हलधरजी उत्पन्न हुवे इस से गदाग्रज बलदेवजी

کرنے والا یعنی متحمل بار زمین کا ہے۔

اشلوک

۹۹

تیجو برکھو دیوتی دھرہ سرب
ششتر بھرتا مبرہ۔ پرگرہو نگرہو
بیگرو نیک شرنگو گدا گرجہ۔

ٹیکا

۹۹

تیجو برکھو پانی برسانے والا ہے یعنی مانند آفتاب کے ہو کر باران برسات کا پانی برساتا ہے دیوتی دھرہ شوبھا دھارن کرنے والا ہے یعنی زینت سرب ششتر بھرتا مبرہ سب ہتھیار باندھنے والوں میں افضل ہے پرگرہو بھگتوں کی اندریوں کو کھینچ کے ارگون سے بچانے والا ہے نگرہو اپنی شکت سے سب جیوں کو لینے والا ہے بیگرو ناش رہت ہے یعنی لازوال ہے نیک شرنگو چاروں بید مستک ہیں جسکے یعنی چار مقام بید کے رکھتا ہے گدا گرجہ بلدیو جی کا روپ ہے یعنی گدا نام بسدیو جی کا ہے اور بسدیو جی سے بلدیو جی پیدا ہوئے اس وجہ سے گدا گرج بلدیو جی کو کہتے ہیں۔

मू॰ अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥९८॥

टी॰ अमानी नहीं है मान जिसको अर्थात् किसी बात पर उसको घमण्ड नहीं है मानदो अज्ञानियों को मान देने वाला अर्थात् दुर्जनों को दण्ड देने वाला और सज्जनों को आदर करनेवाला है मान्यो मानने योग्य है अर्थात् उसको बड़ा समझ कर सब पूजते हैं लोकस्वामी सब लोकों का स्वामी है त्रिलोकधृक् तीनों लोक का धारण करने वाला है और जिसके तेज को कोई नहीं सह सकता सुमेधा सुन्दर है बुद्धि जिसकी अर्थात् अत्यन्त ज्ञानी है मेधजो अश्वमेध यज्ञ से उत्पन्न होने वाला है जैसे रामचन्द्र अवतार धन्यः सब कार्य पूर्ण हों जिससे सत्यमेधा सत्य है बुद्धि जिसकी धराधरः सब पृथ्वी का धारण करने-

اشلوک

۹۸
امانی مان دو مانیو لوک سوامی
ترلوک دھرک سمیدھا میدھجو
دھنیہ ستیہ میدھا دھرادھرہ

۱۰
امانی نہیں ہے مان جسکو یعنی اسکو دولت حشمت پر گھمنڈ نہیں ہے مان دو جاہلوں کو مان دو ہے بدکاروں کو ذلت و خواری دینے والا ہے اور نیک مردوں کو عزت مانیو پوجنے کے لائق ہے اور اسکو بزرگ سمجھکر پرستش کرتے ہیں لوک سوامی لوک کا مالک ہے ترلوک دھرک تینوں لوک کا دھارن کرنیوالا ہے یعنی قائم رکھنیوالا ہے اور جسکے تیج کو کوئی سہہ نہیں سکتا سمیدھا سندر ہے بدھ جسکی یعنی عقل جسکی کمال رکھتا ہے میدھجو جو اشومیدھ جگ سے پیدا ہونیوالا ہے جیسے شری رام چندر کا اوتار دھنیہ سب کام پورے ہوں جسکے ستیہ میدھا سچی ہے بدھ جسکی دھرادھرہ پرتھوی کا دھارن

करने वाला है ॥ ९६॥

मू. सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी । वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ९७ ॥

टी. सुवर्णवर्णो सुवर्ण का ऐसा रङ्ग है अर्थात ज्योतिस्वरूप है हेमाङ्गो सुवर्ण का ऐसा रंग है जिसका वराङ्गः श्रेष्ठ है अङ्ग जिसका चन्दनाङ्गदी आनन्द देनेवाला है बिजायठ जिसका वीरहा हिरण्यकश्यप ऐसे शूरवीरों का मारने वाला है विषमः जिसके बराबर कोई नहीं है शून्यो अच्छों से अच्छा है और शरीर नहीं रखता है घृताशीः किसी का आसरा नहीं रखता है अचलः ज्ञान से नहीं चला हुआ है अर्थात कोई रूप उसके नहीं है चलः वायु रूप होकर चलता है ॥ ९७ ॥

کرنے والا ہے —

اشلوک

٩٧ سبرن برنو ہیمانگو برانگش
چندنانگدی - بیرہا یکھمہ
شونیو دھرتاشیر چلش چلہ -

٩٧ سبرن برنو سونے کا ایسا رنگ ہے جسکا یعنی جوت سروپ ہے ہیمانگو سونے کا ایسا اچھا انگ ہے جسکا برانگہ سریشٹھ ہے انگ جسکا چندنانگدی آنند دینے والا ہے بازو بند جسکا بیرہا ہرنیکشپ ایسے سورببیرون کو مارنیوالا ہے یکھمہ طاق و واحد ہے یعنی اسکے برابر کوئی نہیں ہے شونیو اچھون سے بھی اچھا ہے یعنی صفت والون سے بھی بہتر ہے اور مانند ہوا کے جسم نہیں رکھتا ہے دھرتاشی آسا رہت ہے یعنی کسی سے کسی بات کی امید نہیں رکھتا ہے اچلہ اچل یعنی قائم ولازوال و مستقل و بے خوف ہے چلہ بایو روپ ہوکر چلتا ہے یعنی بصورت باد ہوکر رواں ہوتا ہے —

नहीं है प्रत्यक्ष मूर्त्ति जिसकी अर्था-
त् उसकी उपमा किसी मूर्त्ति के सा-
थ नहीं कर सक्ते अल्पमूर्त्तिः [illegible]
[illegible] है मूर्त्ति जिसकी आत्मानन्दः
[illegible] है सुख जिसके ॥ ९५ ॥

मू॰ [illegible] कः किं
यत्तत्पदमनुत्तमं । लोक
[illegible] बान्धु
[illegible] वत्सलः ॥ ९६ ॥

टी॰ एकः केवल अर्थात एक है
नैकः माया से अनेक रूप है स-
वः यज्ञ रूप है और सोम नाम घा-
स का है जो यज्ञ से पैदा होती है
कः सुख रूप है किं विचारने यो-
ग्य है यत्तत् शुद्ध वस्तु [illegible]
[illegible] पद मोक्ष होने वाले पुरुष जि-
सको प्राप्त हों अनुत्तमं नहीं है
उत्तम उससे को ई लोकबन्धुः लो-
कों के बन्धु अर्थात सब के भरोसे का
स्थान है लोकनाथः लोकों को अ-
च्छे मार्ग में लगाता है और सब की
कामना पूर्ण करता है माधवः
मधुवंश में उत्पन्न हुआ है भ-
[illegible]

نہیں ہے پرتکش صورت جسکی یعنی اسکی
تشبیہ کسی صورت کے ساتھ نہیں کر سکتی
[illegible]
[illegible]

اشلوک ۹۶

[illegible]
[illegible] لوک بندھر لوک ناتھو
مادھو بھکت وتسل

ٹیکا ۹۶

ایکو ایک یعنی ذات واحد ہے نیکہ مایا
کے انیک روپ ہیں یعنی بہت طرح سے ظاہر ہوتا ہے
سوہ یگ روپ ہے اور سوم نام گھاس
ہے کہ یگیات سے پیدا ہوتی ہے کہ سکھ
روپ ہے یعنی آرام صورت ہے کم سب بچار کرنے
جوگ ہے یت تت شدھ بستو [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

आनन्द को देनेवाला है और आ-
नन्दरूप है दुर्द्धरः तथा दुःखक-
रके धारण करते है योगी जिसको
अर्थात् बड़े परिश्रम से प्राप्त होता
है अपराजितः किसी से जीता
नहीं जाता अर्थात् युद्ध प्रकार
किसी से नहीं हारता ॥ ९४ ॥

मू॰ विश्वमूर्त्तिर्महामूर्त्ति
र्दीप्तमूर्त्तिरमूर्त्तिमान् । अ-
नेकमूर्त्तिरव्यक्तः शतमू-
र्त्तिश्शताननः ॥ ९५ ॥

टी॰ विश्वमूर्त्तिः चराचर है मू-
र्त्ति जिसकी अर्थात् सब सृष्टि उस
की मूर्त्ति है और वह सब का प्राण है
महामूर्त्तिः प्रमाणरहित है मूर्त्ति
जिसकी अर्थात् प्रकाश रूप होक-
र संसार में प्रकट हुआ है दीप्तमू-
र्त्तिः ज्ञानमूर्त्ति है अर्थात् मनोहर
रूप है अमूर्त्तिमान् मूर्त्तिरहि
त है अर्थात् देह नहीं रखता है
अनेकमूर्त्तिः भक्तों की अनुग्र-
ह के वास्ते अनेक हैं मूर्त्ति उसकी
अर्थात् सृष्टि की रक्षा के वास्ते अ-
वतार धारण करता है अव्यक्तः

آنند کا دینے والا ہی اور وہ آنند روپ ہے
دُردھرو تتھا دکھ سے دھارن کرتے
ہیں جوگی جسکو یعنی بمحنت و بدقت تمام حاصل
ہوتا ہی اپراجِت کام کرودھ وغیرہ کوئی
دشمن اسکو جیت نہیں سکتا ہی یعنی ظاہر
و باطن میں کسی سے مغلوب نہیں ہوتا ہی

اشلوک ۹۵

وشو مورتر مہا مورتر دیپت مورت
مورت مان - انیک مورت
رویکت شت مورت شتانن -

ٹیکا ۹۵

وشو مورت چراچر ہی مورت جسکی یعنی تمام عالم
اسکی صورت ہی اور وہ جان ہی مہا مورت
بے پرمان رہت ہی مورت جسکی یعنی بصورت روشنی
تمام عالم میں پیدا ہی دیپت مورت گیان
مورت ہی یعنی بصورت خوب و دلکش ہے
امورت مان کوئی صورت نہیں رکھتا ہے
انیک مورت بھگتوں کی بھلائی کیواسطے
بہت ہیں مورت اسکی یعنے واسطے محافظت
خلائق کے اوتار دھارن کرتا ہی اویکت

ऐश्वर्य जिसका और सृष्टिरूप
होकर प्रकट होता है सत्य-
परायणः सत्पुरुषों का स्था-
न है शूरसेनः शूरवीर है से-
ना जिसकी हनुमानादि यदु-
श्रेष्ठः यादवों में श्रेष्ठ है स-
न्निवासः सत्पुरुषों का आ-
श्रय है सुयामुनः अच्छे हैं
श्री राम और श्री कृष्ण जिनको
गोप प्यारे हैं अर्थात् जिसके ब-
न्धु लोग अच्छे हों और ग्वाल
जिसके साथ हों ॥ ९२। ९३॥

मू० भूतावासो वासुदेवः
सर्वासुनिलयोनलः ।
दर्पहादर्पदोदृप्तोदुर्द्धरो
ऽथापराजितः ॥ ९४ ॥

टी० भूतावासो प्राणियों का स्था-
न है वासुदेवः सब जगत् को
ढकने वाला है और प्रकाशक है
सर्वासुनिलयो सब प्रा-
णियों का आसरा है अनलः पू-
र्णता को रखता है दर्पहा गर्व
का दूर करने वाला है दर्पदो

اَیشوَرج جسکا یہ وہ ذات ہی کہ بصورت
عالم کے ظہور کرتا ہی سَت پرایَنہ سچے
لوگونکا آسرا ہی یعنی مقام سالکان راہ وحدت
شُوْرسینو بہادر ہی فوج جسکی مثل ہنومان وغیرہ
جَدُ شریشٹھہ جادون مین بزرگ تر ہے
سَن نِواسہ اچھے لوگون کا آسرا یعنی
پناہ ہی سُیامنہ اچھے ہین شری رامچندر
اور شری کرشن مہاراج جنکو گوپ پیارے ہین
یعنی جسکے وابستگان اچھے ہین گوال ہمراہ ہین -

اشلوک ۹۴

بھوتا باسو باسدیوہ سربا سنلیو
نلہ - درپہا درپدو درپتو
دردھرو تھا پراجتہ -

ٹیکا ۹۴

بھوتا باسو سب جانداروں کا مقام ہے
باسدیوہ تمام عالم کا ڈھکنے والا اور پرکاش
کرنیوالا ہی سربا سنلیو سب پرانیونکا آسرا ہے
یعنی تمام عالم کی امیدگاہ ہی نلہ قدرت کامل
رکھتا ہی درپہا گرب کا دور کرنیوالا ہی یعنی جو
مخالف راہ حق ہین انکا غرور کھو دیتا ہی درپدو

सब जगह पहुंचता है तीर्थ-
करो तीर्थ का करने वाला अ-
र्थात् सकल विद्याओं का उत्प-
न्न करने वाला है वसुरेता
द्रव्य है गिरा हुआ जिसका अ-
र्थात् जब सब पानी ही पानी था
तब उसने अपने वीर्य्य को पा-
नी में डाला तब उस से सुवर्ण का
अण्डा पैदा हुआ और उस अ-
ण्डे से सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई
वसुप्रदः धन का देने वाला है वसु-
प्रदो मोक्ष फल का देने वाला है वा-
सुदेवो वसुदेव का पुत्र है वसुर्व-
सुमना राग और द्वेष से रहित है मन जि-
सका हविः ओंकार करके युक्त है ९२

मू॰ सद्गतिः सत्कृतिः स-
त्ता सद्भूतिः सत् परायणः
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवा-
सः सुयामुनः ॥ ९३ ॥

टी॰ सद्गतिः सत्पुरुषों का स्थान
है सत्कृतिः सत्य है काम जिस
का जगत् की रक्षा के वास्ते स-
त्ता सत्ता है सद्भूतिः सत्य है

مانند دل کے تیز رو ہوا اور سب جگہ پہنچتا ہے
تیرتھ کرو تیرتھوں کا کرنے والا ہے یعنی سب
ودیاؤں کا پیدا کرنے والا ہے بسو ریتا درب
ہے گرا ہوا جسکا یعنی جبکہ تمام عالم پانی تھا تب
اُسنے اپنے تخم کو پانی میں ڈالا اُس سے بیضہ
طلائی پیدا ہوا اُس بیضہ سے تمام عالم پیدا ہوا
بسپردہ دھن کا دینے والا ہے بسپردہ
موکش پھل کا دینے والا ہے یعنی قید جہان
سے آزادی عطا کرتا ہے باسدیو وسدیو
کا بیٹا ہے بسر سمنا راگ اور دویش سے
رہت ہے من جسکا یعنی کسی بات کی خواہش نہیں
رکھتا ہے ہوی اونکار سے شامل ہے

اشلوک
۹۳
سدگت ست کرت ستا سدبھوت
ست پراین - شورسینو جدو
شریشٹھ سن نواس سیامن

ٹیکا
۹۳
سدگت اچھے پرشوں کا استھان ہے ست
کرت ست ہے کام جسکا جگت کی رچھا کے واسطے
وہ ذات ہے کہ کام اسکا مخلوقات کی حفاظت کرنا
[illegible]

स्तोत्रं जिस करके स्तुति करें
स्तुतिः गुण वाला है स्तोता
भीष्म आदि रूप होकर स्तुति
करने वाला है रणप्रियः युद्ध
है प्यारा जिसको अर्थात् भक्तों
की रक्षा के वास्ते सुदर्शन चक्र
रखता है पूर्णः सब तरह से पू-
र्ण है पूरयिता भक्तों की का-
मना पूर्ण करने वाला है अ-
र्थात् सब सामर्थ्य और मनो-
र्थ मनुष्यों को देता है पुण्यः
पवित्र रूप है अर्थात् अपने
नाम स्मरण से मनुष्यों के पापों
को शुद्ध करता है पुण्यकी-
र्त्तिः सब कीर्त्ति उसकी पवित्र
है अनामयः विकार रहित
है अर्थात् किसी तरह का रोग
दोष नहीं रखता है ॥९१॥

मू॰ मनोजवस्तीर्थकरो व-
सुरेता वसुप्रदः। वसुप्र-
दो वासुदेवो वसुर्वसुम-
ना हविः ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

टी॰ मनोजवः मन की
तरह है वेग जिसका अर्थात्

استوتر یعنی جس سے استت کریں
استتہ گن والا ہی استوتا بھیشم آد
روپ ہوکر استت کرنیوالا ہی رن پریہ
جدہ ہی پیارا جسکو یعنی بھگتوں کی رکشا
ہی اور سدرشن چکر واسطے محافظت خلق کے رکھتا
ہی پورنہ پورن ہی یعنی سب قدرت اور
سب آرزو اسکو حاصل ہیں پورئتا بھگتوں
کی سب کامنا پوری کرتا ہی یعنی سب قدرت
و آرزو آدمیونکو عطا کرتا ہی پنیہ پوتر
روپ ہی یعنی اپنی یاد کرنیوالوں کے سب
گناہ معاف کردیتا ہی پنیہ کیرت
پوتر ہی کیرت جسکی یعنی سب اوصاف جسکے
پاکیزہ ہیں انامیہ بیاد رست ہی یعنی
امراض ظاہری و باطنی نہیں رکھتا ہی

اشلوک ۹۲

منوج وس تیرتھ کرو بس
ریتا بس پردہ۔ بس پردو
باسدیو وبسر بس مناہویہ

ٹیکا ۹۲

منوج وہ من کی طرح ہی بیگ جسکا یعنی

अर्थात् वामन रूप महाकर्मा
बड़ा है कर्म जिसका अर्थात् अ-
प्रमाण सृष्टि का रचना उसी का का-
म है महातेजो बड़ा है तेज जि-
सका अर्थात् सब तरह की बड़ी
योग्यता रखता है महोरगः
वासुकि नाग अर्थात् सब सांपों
में बड़ा है महाक्रतुः अश्व-
मेध यज्ञ रूप है महायज्वा
बड़ी यज्ञ करने वाला है अर्था-
त् जप तप में सब से बड़ी यज्ञ है
महायज्ञो जप यज्ञ रूप है
महाहविः सम्पूर्ण जगत्
स्थूल सूक्ष्म होकर लीन करदे
महा का अर्थ बड़ा है और ह-
वि का अर्थ हवन है ॥ ८० ॥

मू· स्तव्यः स्तवप्रियः स्तो-
त्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्य
कीर्त्तिरनामयः ॥ ८१ ॥

टी· स्तव्यः स्तुति करने योग्य है
अर्थात् उसकी स्तुति सब करते
हैं वह किसी की स्तुति नहीं करता
स्तवप्रियः स्तुति है प्यारी जिसको

کرم مراد قدم اور باون روپ سے ہے
مہاکرما بڑا ہے کرم جسکا یعنی پیدائش
عالم کی کرنا اسی کا کام ہے مہاتیجو بڑا
ہے تیج جسکا یعنی سب فضیلت بدرجہ
اتم رکھتا ہے مہورگہ باسک ناگ ہے
یعنی سب سانپوں میں بڑا ہے مہاکرتو
اشومیدہ جگ روپ ہے مہایجوا بڑی
جگ کرنے والا ہے یعنی جپ تپ میں
سب سے بڑی جگ ہے مہایگیو جپ
جگ روپ ہے مہاہبہ سب جگت
استھول اور سوکشم جسمیں مل جاتا ہے
مہا کے معنی بزرگ کے ہیں اور ہبہ کے
معنی ہوم کے ہیں

٨١
اشلوک
استبیہ استوپریہ استوترنگ
استتہ استوتا رن پریہ - پورنہ
پورتا پنیہ پن کیرت رنامیہ -

ٹکا
٨١
استبیہ استت کرنیکی لائق ہے یعنی وہ ذات
کہ اسکی صفت سب کرتے ہیں وہ کسیکی صفت نہیں
کرتا ہے استوپریہ استت ہے پیاری جسکو

टी· ब्रह्मण्यो ब्राह्मणों का क-
ल्याण करने वाला है अर्थात् जो
तप करते हैं ब्रह्म को जानते हैं
उनको मित्र रखता है ब्रह्म
कृद् तप करने वाला है ब्रह्मा
तप रूप अर्थात् विद्या ज्ञान आ-
नन्द से परिपूर्ण सदा सर्वदा बना
रहता है ब्रह्म ब्रह्मविवर्द्ध-
नः तप का बढ़ाने वाला है ब्र-
ह्मविद् ब्रह्म जानने वाला अ-
र्थात् वेद का जानने वाला है ब्रा-
ह्मणो ब्राह्मण होकर वेद पढ़ा-
वे अर्थात् अवतार धारण करके
सब देखता है ब्रह्मी दिव्य वाणी ब्रा-
ह्मणों का मालिक है अर्थात् वेद
की मूर्त्ति है ब्रह्मज्ञो ब्रह्म का जा-
नने वाला है अर्थात् वेद रूप है
ब्राह्मणप्रियः ब्राह्मण प्या-
रे हैं जिसको ॥ ८९ ॥ ८९ ॥

मू· महाक्रमो महाकर्म्मा
महातेजो महोरगः । म-
हाक्रतुर्महायज्वा महाय-
ज्ञो महाहविः ॥ ९० ॥

टी· महाक्रमो बड़े हैं कर्म जिसके

٨٩ ٹیکا

برھمنیو براھمنوں کا کلیان کرنیوالا
ہی یعنی جو لوگ ریاضت کرتے ہیں اور
برہم کو جانتے ہیں انکو وہ دوست
رکھتا ہے برہم کرد تپ کرنیوالا ہے
یعنی ریاضت کرتا ہے برھما تپ روپ
ہے یعنی بدیا اور گیان اور آنند سے پورن
ہے برہم برہم ببردھنہ تپ کا
بڑھانے والا ہے برہمبد برہم کا جاننے
والا ہی یعنی دانندہ بید و معنی ہی براھمنو
براھمن ہوکر بید کو پڑھاتا ہی یعنی بصورت
ہستی ہوکر مشاہدہ کرتا ہی برھمی بید بانی
کا جاننے والا ہی یعنی بید کی صورت ہے
براھمن پریہ براھمن پیارے ہیں جسکو

٩٠ اشلوک

مہاکرمو مہاکرما مہاتیجو مہورگہ
مہاکرتر مہایجوا مہایگیو مہا
ہبیہ

٩٠ ٹیکا

مہاکرمو بڑے ہیں کرم جسکے

अर्थवाला है अर्थात् उसके सब मनोर्थ सिद्ध होते हैं कान्तः सुन्दर रूप है कृतागमः वेद को शुद्ध करने वाला है अर्थात् सब विद्याओं को उसी ने उत्पन्न किया है अनिर्देश्य वपुः सत्य रूप आनन्द रूप है और यह भी है कि वह कोई रूप और गुण नहीं रखता है विष्णुः भक्तों के हृदय में प्रवेश करनेवाला है और पृथ्वी से आकाश तक व्याप्त होकर स्थित है वीरो शूरवीर है अर्थात् सब से अधिक बल रखता है अनन्तो अविनाशी है अनन्त है धनञ्जयः दिग विजय में सब धन को जीत लेना है अर्थात् अर्जुन व राजा रूप हो कर लोगों से बहुत दौलत लेना है ॥८८॥८९॥

मू॰ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्र-
ह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्द्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्र-
ह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥९०॥

ارتھ والا ہی یعنی اُسکی سب مُرادین پوری ہوتی ہین کانتہ سُندر رُوپ ہی یعنی قالب زیبا کو اختیار کرتا ہی کرتاگمہ بید کو شُدّھ کرنے والا ہی یعنی سب شاستر اور علوم اُسی نے پیدا کیے ہین - انردیشیہ بپہ سَتّ رُوپ آنند رُوپ سچّدانند رُوپ ہے اور یہ بھی ہی کہ وہ کوئی صفت نہین رکھتا ہی بشنہ بھکتون کے ہردے مین پرویش کرنیوالا ہی یہ وہ ذات ہی کہ زمین سے آسمان تک محیط ہوکر قایم ہی بیرو شُور بیر ہی یعنی قوت سب سے زیادہ رکھتا ہی اننتو ابناشی ہی بے انت ہی دھننجیہ دگ بجے مین سب دھن کو جیت لیتا ہے یعنی بصورت ارجن اور راجا کے ہوکر لوگون سے دولت لیتا ہے -

اشلوک ۹۰

برہمنیو برہم کرد برہما برہم
برہم بردھنہ - برہم بد براہمنو
برہمی برہمگیو براہمن پریہ -

वीरः शूरवीर है शौरिः शूरसेन
के वंश में पैदा हुआ है शौरि-
जनेश्वरः इन्द्र आदिका
ईश्वर है त्रिलोकात्मा ती-
नों लोक का जीव है त्रिलो-
केशः तीनों लोकों का मा-
लिक है अर्थात् तीनों लोकउ-
स की आज्ञा में हैं केशवः
सूर्यों की कान्ति है अर्थात् सू-
र्य चन्द्रमा का मालिक है और
केशव उसको कहते हैं जो स-
ब तरह की सामर्थ्य रखता हो
केशिहा केशी दैत्य का मा-
रने वाला है हरिः अवगुणका
मिटाने वाला है ॥८७॥८७॥

मू॰ कामदेवः कामपालः
कामी कान्तः कृतागमः
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वी-
रो नन्तो धनंजयः ॥८८॥

टी॰ कामदेवः कामना का देने
वाला है और प्रकाश रूप है काम
पालः भक्तों की कामना का पूर-
ण करने वाला अर्थात् सब का म-
नोर्थ पूरण करने वाला है कामी

ویرہ شور بیر یعنی شجاع ہے شوری
شورسین کے بنس میں پیدا ہوا ہے
شورجنیشورہ اندر وغیرہ کا بھی
مالک ہے تری لوکاتما تینوں لوک کی آتما
ہے یعنی ہر سہ عالم کی جان ہے تری لوکیشہ
تینوں لوک کا مالک ہے یعنی ہر سہ عالم تابع
حکم اسکے ہیں کیشوہ سورج کی روشنی
ہے یعنی یہ وہ ذات ہے کہ صاحب خطوط شعاع
آفتاب و ماہتاب کا ہے اور جو سب طرح کی
قوت و قدرت رکھتا ہو اسکو کیشو کہتے ہیں
کیشہا کیشی نام دیت کا مارنیوالا ہے
ہرہ اوگن کا مٹانے والا ہے

اشلوک ۸۸

کامدیوہ کامپالہ کامی کانتہ
کرتاگمہ - انردیشیہ بپر بشنر
بیرو ننتو دھننجیہ -

ٹیکا ۸۸

کامدیوہ کامنا کا دینے والا اور پرکاش
روپ ہے کامپالہ بھگتوں کی کامنا کی پورا کرنے
والا یعنی سبکی آرزو پوری کرنیوالا ہے کامی

पूजने के योग्य है अर्चित: पूजित
है कुक्षौ सारा ब्रह्माण्ड जिसके भी-
तर है विशुद्धात्मा विशुद्ध है आ-
त्मा जिसकी अर्थात् अपनी प्रशंसा
कराने का अभिलाषी नहीं है वि-
शोधन: सबका शुद्ध करने वा-
ला है अर्थात् जो कोई उसका स्म-
रण थोड़ा भी करता है उसके पापों
को दूर कर देता है अनिरुद्धो
नहीं है किसी से रुकने वाला अर्था-
त् निष्काम और निरभिलाषी है अप्र-
तिरथ: नहीं है पक्ष जिसके अ-
र्थात् तरफदारी नहीं है और उस
के बराबर कोई नहीं है प्रद्यु-
म्नो बहुत है जात जिसकी अ-
र्थात् दौलत बहुत है अमितवि-
क्रम: बेप्रमाण है पराक्रम जि-
नके अर्थात् उसके बराबर किसी
को सामर्थ्य नहीं है ॥ ८६ ॥५०॥

मू. कालनेमिनिहा वीर: शू-
र: शौरिर्जनेश्वर: । त्रिलो-
कात्मा त्रिलोकेश: केश-
व: केशिहा हरि: ॥ ८७ ॥

टी. कालनेमिनिहा कालने-
मि राक्षस का मारने वाला है।

پوجنے کے لائق ہی آرچتہ پوجا گیا ہے
کُکشو سب برہمانڈ یعنی تمام عالم اُسکے
اندر ہی بِشُدّھاتما پاک و صاف ہے
دل جسکا یعنی اپنی نیکی کی تعریف کرانیکا
خواہشمند نہیں ہے بِشودھنہ سبکو
پاک کردیتا ہے یہ وہ ذات ہے کہ اگر کوئی تھوڑا
بھی یاد اُسکی کرے تو اُسکو گناہوں سے پاک
کردیتا ہے انردّھو نہیں ہے کسی سے رُکنے
والا یعنی لاطمع و لاپرواہ ہے اپرتی رتھہ
نہیں ہے پچّھ یعنی طرفداری جسکے اور اُسکے
برابر کوئی نہیں ہے پردیُمنو بہت سے
ذات جسکی یعنی دولت زیادہ ہے امیت
بکرمہ بے انتہا ہیں پراکرم جسکے یعنی اُسکے
برابر کسیکو قوت و قدرت نہیں ہے

اشلوک

کالنیم نہا بیرہ سوُرہ سورجنیشورہ
ترلوکاتما ترلوکیشہ
کیشوہ کیشیہا ہرہ

ٹیکا

کالنیم نہا کالنیم راکشس کا مارنیوالا ہے

नहीं है अर्थात उससे बड़ा और
कोई नहीं है शाश्वतः स्थिरः
निरन्तर और स्थिर है अर्थात सदा
बना रहता है कभी नाश नहीं होता
भूशयो पृथ्वी में शयन करता है
जैसे श्री रामचन्द्रावतार और ऐसा
है कि पृथ्वी और जल पर शयन क-
रता है भूषणो पृथ्वी की शोभा है
अर्थात अपनी इच्छा से अवतार
धारण करके पृथ्वी को अपने प्रका-
श से प्रकाशित किया भूतिः स-
त्य रूप है विशोकः शोक से रहि-
त है अर्थात आनन्द रूप है शो-
क नाशनः भक्तों का शोक दू-
र करने वाला है अर्थात जो उस
की शरण आता है उसका सब
दुःख दूर कर देता है ॥ ८५ ॥

**मू॰ अर्चिष्मानर्चितः कु-
म्भो विशुद्धात्मा विशोधनः
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्यु-
म्नोऽमितविक्रमः ॥ ८६ ॥**

टी॰ **अर्चिष्मान्** चैतन्य प्रकाश
है अर्थात ब्रह्मा विष्णु महेश
सब उसको पूजते हैं और सबके

نہیں ہے یعنی اُس سے بزرگ کوئی نہیں ہے
شاشوتہ استھرہ نرنتر اور استھر ہے
یعنی ہمیشہ قائم ہے اور موت نہیں رکھتا ہے
بھوشیو پرتھوی پر شین کرتا ہے جیسے
شری رام چندر اوتار ہے وہ ذات ہے کہ زمین
و دریا پر آرام کرتا ہے بھوکھنو پرتھوی
کی شوبھا ہے یعنی بخواہش اپنے اوتار لیکر
اپنے نور سے زمین کو منور کرتا ہے بھوتیہ
سب روپ ہے بشوکہ رنج و غم سے
دور ہے یعنی کوئی غم نہیں رکھتا ہے محض
بصورت آرام ہے شوک ناشنہ
بھگتوں کا دکھ دور کرتا ہے یعنی جو اسکی
طرف رجوع ہوتا ہے اسکے سب دکھ دور کرتا ہے

اشلوک ٨٦

**ارچشمان ارچتہ کمبھو بشدھاتما
بشودھنہ - انردھو پرت
رتھہ پردمنو متبکرمہ**

ٹیکا ٨٦

ارچشمان چیتن پرکاش ہے یعنی وہ ذات ہے
کہ جسکو برہما بشن مہیش ہمیشہ پوجتے ہیں اور

टी॰ स्वक्षः अच्छे हैं नेत्र जिसके स्वङ्गः अच्छे हैं अङ्ग जिसके शतानन्दो सैकड़ों तरह के आनन्द का रूप है नन्दिः आनन्द का रूप है ज्योतिर्गणेश्वरः ज्योति गण करके ईश्वर है अर्थात सूर्य्य चन्द्रमा तारा गण अग्नि आदि सब उसके प्रकाश से प्रकाशित हैं विजितात्मा जीता है जिसने मन अविधेयात्मा नहीं है पराधीन आत्मा जिस का अर्थात कोई उसको बुद्धि के द्वारा जीत नहीं सक्ता सत्कीर्त्तिः श्रेष्ठ है कीर्त्ति जिसकी छिन्नसंशयः दूर है संदेह जिसके ८४

मू॰ उदीर्णः सर्व्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः। भूशयो भूषणो भूति र्विशोकः शोकनाशनः ॥ ८५ ॥

टी॰ उदीर्णः सब से अधिक है सर्व्वतश्चक्षुः सब का देखने वाला है अर्थात सब सृष्टि की आंख है अनीशः जिसका कोई स्वामी

ٹیکا

۸۴ سوکشہ اچھے ہیں نیتر جسکے سونگہ اچھے ہیں انگ جسکے شتانند و سیکڑوں آنند کا روپ ہے نندہ آنند کا روپ ہے جیوتر گنیشور جوت گن کا ایشور ہے یعنی سورج چندرماں اگن تارا گن وغیرہ سب روشنی اُس سے روشن ہیں بجتاتما جیتا ہے جسنے من اپنا بدھے یاتما نہیں ہے پرادھین آتما جسکا یہ وہ ذات ہے کہ کسیکی عقل اُسکا بھید نہیں جان سکتی ست کیرت شریشٹھ ہے کیرت جسکی یعنی اُسکی نکوکاری کا آوازہ ہمیشہ بلند ہے چھن سنشیہ دور ہیں سندیہ جسکے

اشلوک ۸۵

اُدیرنہ سرب تشچکش رنیشہ شاشوتہ استھرہ - بھوشیو بھوشنو بھوتر بیشوکہ شوک ناشنہ

ٹیکا

اُدیرنہ سب سے زیادہ ہے سرب تشچکش سب کا دیکھنے والا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ تمام عالم کی آنکھ ہے انیشہ جسکا کوئی مالک

श्रीमान्लोकत्रयाश्रयः ८३
टी० श्रीदः लक्ष्मीका देनेवाला है
श्रीशः लक्ष्मीका ईश है श्री
निवासः शोभा का स्थानहै श्री
निधिः माया का खजाना है श्री
विभावनः शोभावाली वस्तु प्राणि-
योंको देनेवाला है अर्थात् अन्न ध-
न संतति भाग्य के अनुसार सबको
देता है श्रीधरः लक्ष्मी का धारण
करनेवाला है श्रीकरः भक्तजनों
को लक्ष्मी देता है अर्थात् अपने स्म-
रण करने वालों को नित्यानन्द कर
देता है श्रेयः कल्याणरूप है जि-
स का कभी नाश नहीं है श्रीमा-
न् शोभावान् अर्थात् सब सम्पत्ति
वाला है लोकत्रयाश्रयः ती-
नों लोक का आश्रय है । ८३ ॥
मू० स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो
नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। वि-
जितात्मा विधेयात्मा सत्की-
र्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ८४ ॥

شری مان لوک تریا شریہ ۸۳
ٹیکا
شری دہ لچھمی کا دینے والا ہے شری
شہ لچھمی کا ایش یعنی مالک ہے شری
نواسہ شوبھا کا استھان ہے شری
ندھہ مایا کا خزانہ ہے شری بھاونہ
شوبھا والی بست پرانیونکو دیتا ہے یعنی ان
دھن اولاد وغیرہ نعمتیں موافق نصیب کے
سبکو دیتا ہے شری دھرہ لچھمی کا دھار
کرنیوالا ہے شری کرہ بھگتوں کو لچھمی
دینیوالا ہے یعنی اپنے یاد کرنے والوں کو
بے زوال کردیتا ہے شرے سیہ
کلیان کا روپ ہے کبھی زوال نہیں ہے
جسکو شری مان شوبھاوان ہے
یعنی سب دولت رکھتا ہے لوک تریا شریہ
تینوں لوک کا آسرا یعنی امیدگاہ ہر سہ عالم ہے
اشلوک ۸۴
سوکشہ سونگہ شتانندو نند
جیوتر گنیشورہ بجتاتما بدھے
یاتما ستکیرتہ چھن سنشیہ

कल्याण रूप है अर्थात् उस के स्म-
रण से मनुष्य शुद्ध और सुख का
भागी होता है **श्रीवत्सवक्षाः**
भृगु की लता का चिन्ह है उसकी छा-
ती पर अर्थात भृगुजीने विस्नुभग-
वान् की सहनशीलता की परीक्षा ले-
ने के वास्ते सोते हुवे भगवान्‌की छा
ती पर लात मारी परन्तु विस्नुभग-
वान ने कुछ बुरा न माना और भृ-
गु जी से कहा कि मेरी छाती अति
कठोर है और आप के चरण अति
कोमल हैं आप के चरणों में मेरी
छाती की चोट लगी होगी सो अप-
राध क्षमा कीजिये **श्रीवासः**
लक्ष्मी जिसमें वास करती है **श्रीप-
तिः** लक्ष्मी के पति हैं **श्रीमतां
वरः** शोभावालो में श्रेष्ठ है ॥ ८२ ॥

**मू॰ श्रीदः श्रीशः श्रीनि-
वासः श्रीनिधिः। श्रीवि-
भावनः श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः**

کلیان روپ ہی یعنی اپنے نام کے یاد
کرنیوالونکو پاک و لطیف کر دیتا ہے
شری بتس بکشاہ بھرگ جی کی
لات کا چنھ ہی جسکی چھاتی پر یعنی کسی زمانہ
مین بھرگ براہمن نے بشن بھگوان کا حلم
و برداشت آزمانے کے واسطے بشن بھگوان
کی چھاتی پہ جبکہ وہ سو رہے تھے لات
ماری تب بشن بھگوان نے بھرگ جی سے
کہا کہ میری چھاتی اَت کٹھور ہی اور آپکا
چرن اَت کومل ہی سو آپکے چرنوں مین میری
چھاتی کی چوٹ لگی ہوگی سو اپرادھ چھما کیجیے
شری باسہ لکھمی بستی ہی جسکے یعنی دولت
لازوال یعنی ازلی رکھتا ہی **شری پتہ**
لکھمی کے پت ہین یعنی صاحب دولت ہین
شری متام ورہ شوبھا والون مین
سریشٹھ یعنی افضل ہے

اشلوک

**شری دہ شری شہ شری
نواسہ شری ندھہ شری بھاونہ
شری دھرہ شری کرہ شریسے**

पृथ्वी का भार उतारने के वास्ते अवतार लिया गोपतिः पृथ्वी का पति है गोप्ता अपने आप को रक्षा करने वाला और संसार को सब आपत्ति से छुड़ाने वाला और अपने आप को अपनी महिमा में गुप्त रखने वाला है वृषभाक्षो अपनी दृष्टि से सब की कामना पूरण करता है वृषप्रियः धर्म्म है प्यारा जिसको।८१

मू॰ अनिवर्त्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः।८२।

टी॰ अनिवर्त्ती धर्म्म से नहीं हटने वाला है और धर्म का रक्षक है निवृत्तात्मा निवृत्त है आत्मा जिसकी संक्षेप्ता उत्पत्ति काल में सब जगत को फैलाता है और संहार काल में अपने में लीन करता है क्षेमकृच्छिवः कल्याण करने वाला

زمین کا بوجھ اُتارنیکے واسطے اوتار لیوی گوپتہ پرتھوی کاپت یعنی مالک زمین کا ہی گوپتا اپنے آپ کو رچھا کرنیوالا ہی یعنی تمام عالم کو حملہ آفات سے امن مین رکھی اور اپنے آپ کو پردہ صفات مین نہان رکھی برکھبھاکشو اپنی نظر سے سبکی آرزو پوری کرتا ہی یعنی سب پر نظر رحم و کرم کی رکھتا ہی برکھ پریہ دھرم ہی پیارا جسکا۔

اشلوک ۸۲

انرورتی نبرتاتما سنچھیپتا چھیم کرچھوہ۔ شری بتس بکشاہ شری باسہ شری پتہ شری متامبرہ ٹیکا ۸۲

انروَرتی دھرم سے نہین ہٹنے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ طریقہ نیکوکاری کو دوست رکھتا ہی نبرتاتما ہٹا ہوا ہی من جسکا سنچھیپتا پیدایش کے وقت تمام عالم کو پھیلاوی اور سنگھار کال مین اپنے مین لین کری یعنی قیامت مین سبکو فنا کرے چھیم کرچھوہ کلیان کرنے والا

कुमुदः कुवलेशयः। गो-
हितोगोपतिर्गोप्ता वृष
भाक्षो वृषप्रियः॥ ८१॥

टी॰ शुभाङ्गः अच्छे हैं अङ्ग जिसके शांतिदः शांति देनेवाला है अर्थात् मित्रता शत्रुता से रहित करदेता है स्रष्टा सब का उत्पन्न करने वाला है कुमुदः पृथ्वी पर अवतार लेकर आनन्द करने वाला है अर्थात् जब सब जल ही जल था तब कुमुद के फूल के सदृश पानी में विष्णु रूप होकर खिला इसवास्ते कुमुद नाम पाया कुवलेशयः जल में शयन करनेवाला है कुवलय उसको कहते हैं कि जो पृथ्वी को अपने में छिपावै और शय शयन करने को कहते हैं जो कि यह दोनों गुण विष्णु रूप में हैं इससे यह नाम हुआ गोहितो गौवों की रक्षा करने वाला है अर्थात् गौवों की रक्षा के वास्ते गोवर्द्धन को उठालिया और गो अर्थात्

کمدہ کبلے شیہ - گوہتو گوپتر
گوپتا برکھبھا کشو برکھ پریہ -

ٹیکا

۸۱ شبھانگہ اچھے ہیں انگ جس کے شانتدہ شانت دینے والا ہی یعنی دوستی و دشمنی سے نجات دیتا ہے سرشٹا سب کا پیدا کرنیوالا ہی کمدہ پرتھوی پر اوتار لیکر آنند کرنیوالا ہی یعنی جب تمام عالم پانی ہی پانی تھا تب بصورت گل نیلوفر کے پانی میں بشن روپ ہوکر کھلا اسواسطے کمد نام پایا کبلیشیہ پانی میں سونے والا ہی کبل اسکو کہتے ہیں کہ جو زمین کو اپنے میں پوشیدہ کرلے اور شیہ بمعنی استراحت کے ہیں چونکہ یہ دونوں صفت بشن روپ میں ہیں اسواسطے یہ نام ہوا گوہتو گؤوں کی بہتری کرنیوالا ہی یہ وہ ذات ہے کہ واسطے محافظت مادہ گاوان کے گوبردھن پہاڑ اپنی بائیں چھنگنیا یعنی خنصر دست چپ پر اٹھالیا اور گوہتو اسکو بھی کہتے ہیں کہ جو گو یعنی

अनुसार सामको गाता है सामगः साम
वेद करके गाने में आवे अर्थात् गान
विद्या में भी वही है साम सामवेद
रूप है निर्वाणम् मोक्षरूप अर्था-
त् सब दुःखों का नाश करने वाला है
भेषजं औषधि अर्थात् सब क्लेशों को
नाश करने वाला है भिषक् वेदरूप
है अर्थात् जन्म मरण से छूटने के वास्ते
विद्या सिखाता है संन्यासकृत्
संन्यास कर्म करने वाला है अर्थात्
सर्व त्याग का सिखाने वाला है श-
मः प्रलय काल में सब का हित कर-
ने वाला है अर्थात् चारों आश्रम
और त्यागी को परम पद देने वा-
ला है शान्तो राग और द्वेष से र-
हित है अर्थात् शत्रुता मित्रता न-
हीं रखता है निष्ठा प्रलय काल में
सब जगत जिसमें रहे शान्तिः
अज्ञान का हटाने वाला है परा-
यणः परमाश्रय है ॥ ८७ ॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा

موافق کام کرتے ہیں سامگہ سام وید
کرکے گانے میں آتا ہے یعنی علم موسیقی
میں بھی وہی ذات ہے سام سام
بید روپ ہے نربانم موکش
روپ ہے یعنی سب دردوں کی دوا ہے
بھیشجم دوا ہے مرض غفلت
وہی ہے بھشک بید روپ ہے یعنی
واسطے دور کرنے مرض زادن و مُردن
کے علم سکھاتا ہے تاکہ موجب خلاصی کا ہو
سنیاس کرت سنیاس کرم کرنیوالا
ہے یعنی آموزندہ ترک کل ہے شمہ پرلے
کے سمے سب کا ہت کرنیوالا ہے یعنی چارو
آشرم والوں کو اعلیٰ درجہ پہ پہنچاتا ہے
شانتو راگ اور دویش سے رہت ہے
یعنی محبت و عداوت سے پاک ہے نِشٹھا
پرلے کال میں سارا جگت جس میں رہتا ہے
شانت اگیان کا ہٹانے والا ہے یعنی
جہالت کو دور کر دیتا ہے پرایَن
پرم آسرا ہے ۸۷
اشلوک
شبھانگ شانتدہ سرشٹا

अर्थात् अधर्म बुद्धियों को मा-
रने वाला है द्रविणप्रदः वां-
छा का पूरण करने वाला है दि-
वस्पृक् स्वर्ग का स्पर्श मथन क-
रने वाला है और भक्तजनों को
पदार्थ देने वाला है सर्वदृग्
व्यासो सब को देखनेवाला है
अर्थात् प्रकट करनेवाला सब
विद्याओं और बुद्धियों का है
सर्वदृग का अर्थ यह है कि सब
का देखने वाला हो और व्यास
शब्द का अर्थ यह है कि एक वे-
द से चार वेद करै ऋग्वेद यजुर्वेद
सामवेद अथर्वणवेद वाचस्प-
तिः वाणी का पति है अर्थात् चित्त
की बात भी उसको सुन पड़ती है अ-
योनिजः योनि अर्थात् किसी के
पेट से नहीं पैदा हुआ है ॥७९॥

**मू॰ त्रिसामा सामगः साम
निर्वाणं भेषजं भिषक्। सं-
न्यासकृच्छमः शान्तो नि-
ष्ठा शान्तिः परायणः ॥८०॥**

टी॰ त्रिसामा तीनों वेद का के खि-
त है अर्थात् देवता तीनों वेद को

یعنی جو لوگ دھرم کے دشمن ہیں انکو مارتا
ہے دروین پردہ آرزو کا پورا کرنیوالا
ہے دوس پرک سورگ کا شمن
کرنیوالا یعنی مالک بہشت ہے بھگتوں کا سے
سرب درگ بیاسو سبکو دیکھنیوالا
ہے یعنی سب علوم و عقول کا ظاہر کرنیوالا ہے
سرب درگ کے یہ معنی ہیں کہ سبکا دیکھنے
والا ہو اور بیاس کے یہ معنی ہیں کہ ایک
بید سے چار بید کرے اول رگ بید دوم یجر
بید سوم سام بید چہارم اتھربن بید
باچسپت بانی کا مالک یعنی صاحب
سخن ہے اشلوکوں کا سخن بھی معلوم ہو جاتا ہے
الونیجہ یعنی شکم سے نہیں پیدا ہوا

اشلوک

**ترسا ما سامگہ سام نربانگ
بھیکھج بھکھک سنیاس
کرچھما شانتو نشٹہا شانتہ پرایہ**

ٹیکا

ترسا ما تینوں بید کر کے استت
ہے یعنی دیوتا لوگ تینوں بید کے

अर्थात् उसी ने पृथ्वी का जोतना बी-
ना सिखाया और हलधर श्री कृष्ण
जी के भाई का भी नाम है आदित्यो
सूर्य्य रूप है अर्थात् उसी के द्वारा सब
संसार प्रकाशित है और अदिति
के पेट से कश्यप के घर वामन अवता-
र भी हुआ है ज्योतिः प्रकाश रूप है
आदित्यः वामन रूप है सहि-
ष्णुः सरदी गरमी का सहने वाला है अ-
र्थात् सब काल में एकतरह है गति-
सत्तमः श्रेष्ठ परमात्मा रूप है अर्था-
त् अच्छा स्वभाव रखता है ॥ ७८ ॥

مینی اسی نے کاشت کرنا زمین کا بتلایا اور
ہلدھر شری کرشن مہاراج کے بھائی کو بھی
کہتے ہیں آدتیو سورج روپ ہے یعنی اسی
کے سبب سے تمام عالم روشن ہے اور باون
جی کا اوتار بخانہ کشیپ از شکم ادت ہوا
جیوتہ پرکاش روپ ہے آدتیہ باون
روپ ہے سہشنو جاڑا اور گرمی کا سہنے والا
ہے یعنی ہر وقت میں یکساں رہتا ہے ۔
گت ستمہ سریشٹہ پرماتما روپ ہے یعنی
طریقہ نیک رکھتا ہے ۔

मू० सुधन्वा खण्डपरशु-
र्दारुणो द्रविणप्रदः । दि-
वस्पृक् सर्व्वदृग्व्यासो वाच-
स्पतिरयोनिजः ॥ ७९ ॥

اشلوک ۷۹
سدھنوا کھنڈ پرشر دارنو درون
پردہ ۔ دوس پرک سرب
درک بیاسو باچسپت ریونجہ ۔

टी० सुधन्वा अच्छा है धनुष जि-
सका और धनुष अभिप्राय है नेत्र और
भृकुटी इत्यादिक से अर्थात् वह ऐ-
सा है कि नेत्र और भृकुटी के सैन से
सब काम करता है खण्डपरशुः
शत्रुओं का नाश करने वाला है कु-
ठार जिसका परशुरामावतार दारु-
णः [illegible] दानवों का मारने वाला है

ٹیکا
سدھنوا اچھا ہے دھنک جسکا دھنک کمان
کو کہتے ہیں اور کمان مراد چشم و ابرو و دیگر
اعضا سے ہے یعنی وہ ایسا ہے کہ ساتھ اشارہ
چشم و ابرو کے دلوں کو قبضہ کرتا ہے کھنڈ پرشو
دشمن کو فنا کرنے والا ہے کلہاڑا جسکا یعنی
پرشرام اوتار دارنو دانووں کا مارنے والا

जो कुछ उसको कहैं उचित है वृ-
क्षः वृक्षरूप होकर स्थित है पु-
ष्कराक्षो शुद्ध हृदय में प्रकाश
करता है अर्थात् मनुष्यों के हृदय
में विद्यारूप होकर स्थित है म-
हामना: सृष्टि की स्थिति और
नाश करने में मन है जिसका ॥७७॥

मू. भगवान्भगहानंदी
वनमालीहलायुधः। आ-
दित्योज्योतिरादित्यः स-
हिष्णुर्गतिसत्तमः ॥७८॥

टी. भगवान् ऐश्वर्य्यवाला है
भग का अर्थ धन धान्य शुभ कर्म्म
प्रतिष्ठा यश विरक्तता है और वा-
न का अर्थ रखने वाला है भग
हा पापियों का ऐश्वर्य्य हरनेवा-
ला है नंदी सुखवाला अर्थात स-
दा सुखी रहता है वनमाली तुल-
सी की माला धारण किये है अर्थात् तु-
च्छ पदार्थ को भी उत्तम बनाता है ह-
लायुधः हल है शस्त्र जिसका

جو کچھ اسکو قرار دین بجا ہی برکشہ بصورت
درخت قائم و مستحکم ہی پشکراکشو شدھ
ہردی مین پرکاش کرتا ہی یعنی آدمیون کے
سینہ مین بصورت علم قیام رکھتا ہی مہا
مناہ خلقت کو پیدا و فنا کرنے مین دل ہی جسکا -

اشلوک

بھگوان بھگہا نندی بن مالی
ہلایدھہ - آدتیو جیوت
رادتیہ سہشنرگت ستم

ٹیکا

بھگوان ایشور یج والا ہی بھگ کے
معنی یہ ہین کہ حشمت و نکوکاری و نام
نیک و دولت و ترک تعلقات و آزادی و
رکھتا ہو اور وان کے معنی صاحب اور
مالک کے ہین بھگہا پاپیون کا جاہ و حشم
کھو دینے والا ہی نندی سکھ والا
ہی یعنی ہمیشہ خوش و خورم رہتا ہی
بنمالی تلسی کی مالا پہنے ہی یعنی یہ وہ ذات
ہی کہ عاجز و ناچیز کو بھی عزت دے کر
قائم و برقرار رکھتا ہے
ہلایدھہ ہل ہے ہتھیار جسکا

और देख नहीं पड़ता है चक्रगदाधरः चक्र गदाधारी है और यह कि ज्ञान का गोल चक्र रखकर सब ओर से संसार की रक्षा किये हुवे है ॥ ७६ ॥ ७६ ॥ ७६ ॥

मू॰ वेधाः स्वाङ्गो जितः कृ-
ष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ७७ ॥

टी॰ वेधाः ब्रह्मा रूप अर्थात् सृष्टि करता है स्वाङ्गो अपने स्वरूप के सामर्थ्य से विश्व को रचा है अजितः नहीं जीतने में आता है किसी के कृष्णो भक्तों की ताप मिटाता है दृढः निराकार अर्थात् एक रूप है संकर्षणो प्रलयकाल में सब प्रजा को खींच ले अर्थात् सब को नाश करके आप रहै अच्युतः नाश रहित है वरुणो अपनी किरणों को खींच लेता है अर्थात् सूर्य्य की तरह अन्त को पश्चिम में चला जाता है वारुणो अगस्त रूप अर्थात् अगस्त मुनि है दोनों वर्णों का पाति है जो कि सब देवताओं का रूप है इस से

اور نظر نہیں آتا چکر گدا دھرہ چکر دھاری
اور گدا دھاری ہی یعنی عقل بصورت چکر کے
محافظت خلق کی کرتا ہے

اشلوک

بیدھاہ سواڑگو جتہ کرشنو
درڑھہ سنکرشنو چتیہ برنو بارنو
برکشہ پشکراکشو مہامناہ

ٹیکا

بیدھاہ برہما روپ یعنی آفرینندہ خلائق
ہی سواڑگو اپنے سوروپ کے سامرتھ سے
سنسار کو رچا اجیتہ کوئی اسکو جیت نہیں
سکتا کرشنو بھگتون کی تاپ مٹاتا ہے
درڑھہ نرکار یعنی ایک قرار ہے
سنکرشنو پرلے کال مین سب سنسار کو
کھینچ لیتا ہی یعنی تمام عالم کو فانی کرکے خود قائم
رہتا ہی اچیتہ ناش سے رہت ہی
یعنی لازوال ہی برنو اپنی کرنونکو کھینچ
لیتا ہی یعنی دن اخیر ہونے پر مثل آفتاب مغرب
مین چلا جاتا ہی بارنو اگست روپ ہی
یعنی اگست منی ہی دونوں برنوں کا پتی ہی
چونکہ سب دیوتونکی صورت وہی ہی اس سے

होकर जल में वास करता है कृ-
तान्तकृत् जगत् का उत्पन्न
करने वाला है और काल को उत्प-
न्न करने वाला है ॥७५॥३५॥

मू. महावराहो गोविन्दः
सुषेणः कनकाङ्गदी । गु-
ह्यो गम्भीरो गहनो गुप्त-
श्चक्रगदाधरः ॥ ७६ ॥

टी. महावराहो वाराहरूप
अति श्रेष्ठ है गोविन्दः गौओं
को ज्ञान भक्ति आदि के द्वारा
प्राप्त होता है सुषेणः अच्छे
काले सिपाही जिस को कन-
काङ्गदी सुवर्ण का बिजायठ
है जिस के सुवर्ण के ऐसे नेत्र हैं जि-
न के गुह्यो वेदों में छुपा हुआ
है अर्थात् उस को हृदय में रखता
है गम्भीरो अनन्त है गहनो
ज्ञान वैराग से पुरुषों को नहीं प्राप्त
हो अर्थात् कठिनता से उसका मि-
लना है गुप्तः वाणी कर के जा-
नने में नहीं आता है अर्था-
त् सब जीवों में छिपा हुआ है

رہتا ہے کرتانت کرت جگت کا ناش
کرنیوالا ہے یعنی قیامت میں عالم کو نیست
و نابود کرتا ہے اور موت کو پیدا کرتا ہے —

اشلوک

مہا براہو گوبندہ سکھین
کنکانگدی گہجو گمبھیرو
گہنو گپتش چکر گدا دھرہ —

ٹیکا

مہا براہو بارہ روپ نہایت بڑا ہے
گوبندہ بھکتوں کو پراپت ہوتا ہے یعنی وہ آ
ہے کہ کلام و علم معرفت سے اسکو پاتے سکھین
پیارے ہیں کالے سپاہی جسکو کنکانگ
گدی سونے کا بازو بند ہے جسکے اور آنکھ [illegible]
تک طلا رکھتا ہے گہجو بیدوں میں چھپا ہوا
یعنی اسکو سینہ میں چھپا رکھتے ہیں
گمبھیرو جسکی تھاہ نہیں ہے گہنو گیان و
بیراگ رہت پرشوں کو نہیں پراپت ہوتا ہے
یعنی بدشواری تمام اسکا ملنا ہے گپتہ مت
بانی سے جانے میں نہیں آتا ہے یعنی
وہ ذات پاک ایسی ہے کہ سب
جانداروں میں پوشیدہ موجود ہے

उससे आनन्द पाते हैं नन्दः वि-
षयानन्द से रहित है सत्यधर्मा
सत्य है धर्म जिसका त्रिविक्र-
मः वामन रूप होकर त्रिलोकी को
तीन पैर से नापा और हरिवंश पुरा-
ण में लिखा है कि (त्रि) त्रिलोक
को कहते हैं ॥७४॥ ७४ ॥

मू. महर्षिः कपिलाचार्यः
कृतज्ञो मेदिनीपतिः। त्रिप
दस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृ-
ङ्गः कृतान्तकृत् ॥७५॥

टी. महर्षिः सब ऋषियों और
ज्ञानियों में श्रेष्ठ है अर्थात् सब वेदों
का ज्ञाता है कपिलाचार्यः क-
पिलदेव है जिसने राजा सगर के बे-
टों को उपदेश दिया और सांख्य
शास्त्र को बनाया कृतज्ञः ज-
गत् को जानता है मेदिनीपतिः
पृथ्वी के पति हैं त्रिपदः जाग्रत स्व-
प्न सुषुप्ति तीनों अवस्था रखता है
त्रिदशाध्यक्षः त्रिदशों का मा-
लिक है महाशृङ्गः मत्स्य रूप अ-
र्थात प्रलयकाल में मत्स्य रूप

اُس سے فیض سرور کا پاتے ہیں نند ۰
بِشَے نند کہ جسے رہت ہے یعنی لذت عیش دنیاوی
نہیں حاصل کرتا ہے ستیہ دھرم ست
ہے دھرم جسکا یعنی خلق و حق ہے ترِوکرم
ہیں بامن کر کے تینون لوک کو پاؤں سے
ہو کرنا پاہی ہر بنش پران میں لکھا ہے کہ
ترِ یعنی ترلوک کے ہیں

اشلوک

مہرکھہ کپلاچارہ کرتگیو میدنی پتی
ترپد تردشادھیکشو مہاسرنگ کرتانت کرت

ٹیکا

مہرکھہ یعنی تمام رکھیوں اور گیانیوں میں ہے وہ وید
کی جاننے والا سب ویدوں کا ہے کپلاچارہ
کپل منی ہیں کہ جسنے راجا سگر کے بیٹون کو اپدیش دیا
اور سانکھیہ شاستر کو کہ علم توحید و تصوف کا ہے تصنیف
کیا کرتگیہ جگت کو جانتا ہے میدنی پتی
کا مالک ہے ترپدس جاگرت سوپن سکھوپت
تینون حالت رکھتا ہے تردشا دھکشو
تینون دشا کا مالک ہے یعنی جبروت و ناسوت
و ملکوت مہا شرنگ مچھلی کی صورت
یعنی وقت فنا ہونے عالم کے دریا میں مچھلی ہو کر بصورت

अंभोनिधिः देवताओं का आ-
सरा है और भी परिपूर्ण नद है अनं-
तात्मा पूर्ण है आत्मा रूप जि-
स का महोदधिशयो प्रलय
काल में समुद्र सागर में शयन कर-
ने वाला है अर्थात् प्रलय काल में स
ब संसार को अपने पेट में रख कर
सो रहता है अन्तकः प्राणियों
का नाश करने वाला है ॥ ७३ ॥

मू॰ अजो महार्हः स्वाभा-
व्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्य
धर्म्मा त्रिविक्रमः ॥ ७४ ॥

टी॰ अजो कामदेव रूप है म-
हार्हः पूजा करने योग्य और सबसे
बड़ा है स्वाभाव्यो सिद्ध रूप है अ-
र्थात् सदा एक रस रहता है कभी उ-
स में हानि किसी प्रकार की नहीं हो
ती है जितामित्रः जीते हैं शत्रु
जिसने अर्थात् रावणादि प्रमो-
दनः आनन्द को प्राप्त है आ-
नन्दो आनन्द रूप है नन्दनो सब
तरह बढ़ा हुआ है अर्थात् सब जीव

یہ وہ ذات ہے کہ قوت زائد از حد مقدار
رکھتا ہے امبھونِدھیہ دیوتاؤں کا آسرا
ہے اور نیز دریائے اعظم محیط عالم وہی ہے
اننت آتما پورن ہے آتما روپ جسکا
مہودد ہشیو پرلی کال میں سمندر
ساگر میں شین کرنیوالا ہے یہ وہ ذات ہے کہ تمام
عالم کو وقت قیامت کے اپنے شکم میں رکھکر
استراحت کرتا ہے انتکہ پرانیوں کا ناش کرنیوالا ہے
یعنی تمام عالم و جاندار انکو آخر کرتا ہے —

اشلوک

۷۴

اجو مہارہہ سوابھاویو جتامترہ پرمودنہ
آنندو نندنو نندہ ستیہ دھرما تروکرمہ

ٹیکا

۷۴

اجو کامدیو روپ ہے مہارہہ پوجا کرنے
جوگ یعنی لائق پرستش و بزرگ ہے سوابھاویو
سدھ روپ ہے یہ وہ صفت ہے کہ ساتھ ایک
صورت کے رہتا ہے اور نقصان اسمیں راہ نہیں
پاتا ہے جتامترہ جیتا ہے دشمن کو جسنے یعنی راون
وغیرہ پر غالب آیا ہے پرمودنہ آنند کو پراپت ہے
یعنی ہمیشہ مسرور ہے آنندو آنند روپ ہے
نندنو سب طرح بڑھا ہوا ہے یعنی سب جاندار

जिसका अर्थात् सत्य का चाहने
वाला है **दाशार्हः** भक्तों की पूजा
सीकार करने वाला है और दाशा
र्हः नाम है यादवों के पुरुषों का कि
जिस कुल में श्री कृष्ण जी ने अव-
तार लिया था **सात्वतांपतिः**
भगवत धर्म्मों का पति है और सा-
त्वत नाम भी है यादवों के पुरुषों का
जहां श्री कृष्ण जी ने जन्म लिया ७०

**मू॰ जीवो विनयिता साक्षी
मुकुंदो मित विक्रमः । अं-
भो निधिरनन्तात्मा महो-
दधिशयोन्तकः ॥ ७२ ॥**

टी॰ **जीवो** देह में रहने वाला है
अर्थात् प्राण रूप होकर देह की र-
क्षा करने वाला है **विनयिता-
साक्षी** जो भांति है उसका साक्षी व-
ही है और गुप्त और प्रकट संसारी
व्यवहार को आंख की सहायता
के बिना देखता है **मुकुन्दो** मु
क्ति का देने वाला है अर्थात् संसारी
बन्धन से छुटा देता है **मित विक्र
मः** बेप्रमाण है पराक्रम जिसका

جسکا یعنی وہ ذات ہی کہ راستی کا چاہنے
والا ہی **واشارہہ** بھگتوں کی پوجا
قبول کرنیوالا ہی اور داشارہہ نام جادوون
کے بزرگ کا تھا جنکے کل مین شری کرشن
مہاراج نے اوتار لیا تھا **ساتوتانپت**
پتہ بھگوت دھرمونکا پت ہی اور ساتوت نام
بزرگ خاندان جادو کا تھا کہ جس خاندان
مین سری کرشن مہاراج نے اوتار لیا تھا۔

اشلوک

۷۲ **جیوو بنیتا ساکشی مکندو مت
بکرمہ۔ انبھو ندھرننتاتما
مہودد ہشیو نتکہ۔**

ٹیکا

۷۲ **جیوو** دیہہ مین رہنیوالا ہی یعنی وہ ذات
ہی کہ بصورت نفس ہوکر اسکو قائم رکھتا ہی
بنیتا ساکشی جو شانت ہی اسکا ساکشی
ہی یہ وہ ذات ہی کہ ظاہر و پوشیدہ بغیر
مدد نگاہ کے ملاحظہ احوال عالم کا کرتا ہی
مکندو مکت کا دینے والا ہی یہ وہ
ہی کہ بند جہان سے خلاصی عطا کرتا ہی
مت بکرمہ بے پایان ہی پراکرم جسکا

बहुत है जिसके अर्थात शुभ
कर्मों की रक्षा करता है ॥७१॥

मू॰ सोमपोमृतपः सोमः
पुरुजित्पुरुषोत्तमः । वि
नयो जयः सत्यसंधो दा
शार्हः सात्वतांपतिः ७२

टी॰ सोमपो अमृत को पिये
है और भी यह कि यज्ञ करके
धर्म्म का प्रचार करता है और
भी सोम नाम घास का है कि जो
अमृत से उत्पन्न है और वह य
ज्ञादिक में काम आती है अमृ
तपः यजमान होकर यज्ञ के
सोम को खाता है और भी ऐसा
है कि जिसने अमृत को उत्पन्न
किया है सोमः औषधि में रस
डालने वाला है अर्थात चन्द्रमा
रूप है और प्रकाश रूप अर्थात
महादेव रूप है पुरुजित शत्रु
ओं को जीतने वाला है पुरुषोत्त
मः बहुत श्रेष्ठ है अर्थात अति उ
च्चस्थानी है विनयो नम्र अर्थात
गरीब है जयः सब प्राणियों को जी
तता है सत्यसंधो सच्चा है वचन

بہت ہی جسکے یعنی وہ ذات ہی کہ طریقۂ
نیکوکاری کو قائم رکھتا ہی

اشلوک ۷۲

سومپو مرتپہ سومہ پرجت
پرکھوتمہ بنیو جیہ ستیہ سندھو
داشارہہ ساتوتانگ پتہ

ٹیکا ۷۲

سومپو امرت پینے والا اور جگ کرکے
طریقۂ نیکوکاری کو ظاہر کرنیوالا ہی اور سوم
نام گھاس کا ہی کہ جو امرت سے پیدا ہی اور وہ
اکثر جگ میں کام آتی ہی مرتپہ ججمان ہوکر
جگ کا سچا ہوا کھاتا ہی اور وہ ایسا ہی کہ
جسنے آب حیات کو پیدا کیا ہی سومہ
دواؤں میں رس ڈالنے والا ہی یعنی چندرما
روپ اور وہ ذات ہی کہ محض نور و لطافت
ہی یعنی مہادیو پرجت دشمنوں کا جیتنے
والا یعنی فتح کرنیوالا ہی پرکھوتمہ بہت اتم
ہی یعنی سب جانداروں سے افضل ہی
بنیو ملائم و غریب مزاج ہی جیہ سب
پرانیوں کو جیتتا ہی ستیہ سندھو سچا ہی کہنا

भूरि दक्षिणः ॥ ७१ ॥
टी· उत्तारो जन्म संसार बन्धन
से तरा हुआ है अर्थात् जन्म
मरण से रहित है गोपतिः
गऊवों का स्वामी है जैसे कृष्णा
वतार में गऊवों की पालना की
और गोपाल नाम पाया और
पृथ्वी के मालिक को भी कह
ते हैं गोप्ता रक्षा करने वाला है
और सब प्रजा की पालना क-
रता है ज्ञानगम्य ज्ञान क-
रके लाभ हो जो अर्थात् वह
ईश्वर ज्ञान के द्वारा प्राप्त भी
हो सक्ता है पुरातनः काल
करके नाशवान् नहीं है अ-
र्थात् सदा सर्वदा स्थित है श-
रीरभूत शरीर को प्राणी रू-
प होकर रक्षा करने वाला है
अर्थात् सब सृष्टि की पालना
करता है भृद्भोक्ता सब
का पालने वाला है कपी-
न्द्रो हनूमानजी के मालि
क श्री रामचन्द्र रूप अथवा
वाराह रूप भूरि दक्षिणः
यज्ञ करने वालों को दक्षिणा

بھور دکشنہ
ٹیکا
اُتّرو سنسار کے جنم کے بندھن سے
تراہوا ہے یعنی قید زادن و مُردن سے
پاک و خلاصی یافتہ ہے گوپتی گؤونکا
مالک ہے جیسے شری کرشن اوتار مین
حفاظت و پرورش مادہ گاوان کی
کی اور گوپال نام پایا اور گوپتی زمین
کے مالک کو بھی کہتے ہین گوپتا رچھا
کرتا ہے وہ ذات ہے کہ پرورش جملہ
خلائق کی کرتا ہے گیان گمیہ گیان
کر کے لابھ ہوتا ہے یعنی وہ ذات ہے عقل
کے ساتھ پہچانا جاتا ہے اور حاصل ہوتا ہے
پُراتنہ پُرانا ہے یعنی وہ ذات ہے کہ ہمیشہ
قائم ہے شریر بھوت شریر کو پرانی روپ
ہوکر رچھا کرتا ہے یعنی سب جاندارون کی پرورش
کرتا ہے بھرد بھوکتا سب کا پالنے
والا اور بھوگ کرنے والا ہے
کپیندرو ہنومان جی کا مالک ہے
شری رام چندر روپ پایا یا رام روپ کر
بھور دکشنہ جگ کرنیوالونکو دچھنا

टी॰ गभस्तिनेमिः किरण
रूपी चक्र है जिसके अर्थात्
सूर्य्य चन्द्रमा उसी से प्रकाशित
हैं सत्वस्थः सतोगुण है स्थि-
त जिसके अर्थात् वह ऐसा है कि
सब शरीरों में व्याप्त हो कर स्थित है
सिंहो नरसिंह रूप अर्थात् सिं-
ह के तुल्य बलवान् है भूतमहे-
श्वरः प्राणियों का महा ईश्वर है
अर्थात् सब जीवों में बड़ा वही है
आदिदेवो सब प्राणी जिसमें
रहें प्रलय काल में अर्थात् वह ऐ-
सा है कि पहिले प्रकाश रूप प्र-
कट हुआ है महादेवो सब
में पूजनीय है और उसकी बड़ा-
ई कुछ विद्या बुद्धि बल धन धा-
न्य ही पर नहीं है किन्तु बिना
किसी ऐश्वर्य्य के वह स्वतः प्र-
तिष्ठावान् है देवेशो देवता-
ओं का मालिक है देवभृद्गुरुः
इन्द्र का गुरु है अर्थात् सकल
विद्याधिकारी है ॥७०॥

मू॰ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञा-
नगम्यः पुरातनः। शरीर
भूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो

ٹیکا

گبھستی نیمہ کرن روپی چکر ہے جسکے
یعنی سورج یعنی وہ ذات ہے کہ جس سے سورج
چاند وغیرہ روشن ہیں ستوستھہ ستوگن
ہے استھت جسکے یہ وہ ذات ہے کہ تمام جسموں
میں بصورت جان قائم ہے سنگھو نرسنگھ
روپ یعنی مانند سنگھ کے قوت رکھتا ہے -
بھوت مہیشورہ پرانیونکا مہا ایشور
ہے یہ وہ ذات ہے کہ سب جاندارونمیں بزرگ ہے
آدی دیوو سب پرانی پرلی کال میں جسمیں
رہیں یعنی وہ ذات ہے کہ پہلے بصورت روشنی
ظاہر ہوا ہے مہا دیوو سب اسکو پوجتے
ہیں یہ وہ ذات ہے کہ بزرگی اسکی منحصر
کچھ علم و قوت و دولت ہی پر نہیں ہے
دیویشو دیوتاؤنکا مالک ہے دیو بھرد
گرو اندر کا گرو یعنی دانای جملہ علوم بھی
دنیوی کا ہے

اشلوک

اُتّرو گوپتر گوپتا گیان گمیہ پراتنہ
شریر بھوت بھرد بھوکتا کپیندرو

अर्थात् बालक है रत्नगर्भो रत्न है गर्भ में जिस के धनेश्वरः बड़ा धनवान् है ॥६८॥

مु॰ धर्म्मगुप धर्म्मकृद्धर्म्मी सदसत्क्षरमक्षरं । अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥६९॥

टी॰ धर्म्मगुप् धर्म्म की रक्षा करने वाला है धर्म्मकृत धर्म्म का करने वाला है धर्म्मी धर्म्मवान है सदसत परब्रह्म है क्षरं नाशवान है अक्षरम् अविनाशी है अविज्ञाता जिसका जान्ने वाला और कोई नहीं है सहस्रांशुः हजारों हैं किरण जिसके सूर्यादि का विधाता सम्पूर्ण जगत् को धारण [illegible] सिद्ध है चैतन्य रूप है ॥६९॥

मू॰ गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूत महेश्वरः । आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥७०॥

ہیں رتن گربھو رتن ہے گربھ میں جسکے یعنی جواہرات اعظم اسکے شکم میں ہے وہ دھنیشور ہ صاحب دولت عظیم ہے

اشلوک

۶۹

دھرمگپ دھرمکرد دھرمی سدست کشرمکشرنگ - اگیاتا سہسرانشر بدھاتا کرت لکشنہ

ٹیکا

۶۹

دھرمگپ دھرم کی رچھا کرنیوالا ہے دھرمکرت دھرم کا کرنیوالا ہے دھرمی دھرم والا ہے سدست پربرہم ہے کشرم ناش مان کشرنگ اناشی ہے اگیاتا جسکا جاننے والا کوئی نہیں ہے سہسرانشو ہزاروں ہیں کرن جسکے سورج آدک بدھاتا سب جگت کو دھارن کرنیوالا ہے کرت لکشنہ سدھ ہے

اور چیتن روپ ہے

اشلوک

۷۰

گبھستنیمی ستوستھہ سنگھو بھوت مہیشور - آدیدیو مہادیو دیویشو دیوبھرد گرو -

मू॰ स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्म्मकृत् । वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

टी॰ स्वापनः अपनी माया करके अज्ञानियों को सुलाता है और आप जागता है स्ववशो अपनेही वश्य है किसीके आधीन नहीं व्यापी नैकात्मा सब में व्याप रहा है और सृष्टि रचने के वास्ते अनेक आत्मा प्रकट करता है नैककर्म्मकृत् अनेक कर्म्म करने वाला है उत्पत्ति पालन नाश इत्यादिक वत्सरो सम्पूर्ण जगत में बसता है और सम्पूर्ण जगत उसमें बसता है वत्सलो दयावान है अर्थात् भक्तुवोंपरभी दया करता है वत्सी गउवों के बछड़े उसको प्रिय हैं जैसा कि श्री कृष्णावतार में गौवों की पालना की और यह कि सब सृष्टि का पिता है सब जीव उसके वत्स

اشلوک

۶۸

سواپنہ سوبشو ویاپی نیکاتما نیک کرم کرت۔ بتسرو بتسلو بتسی رتن گربھو دھنیشورہ۔

ٹیکا

۶۸

سواپنہ اپنی مایا کرکے اگیانیون کو سلاتا ہی اور آپ جاگتا رہتا ہی سوبشو اپنے اپ ہی کسیکے تحت نہین ویاپی نیک آتما سب مین بیاپ رہا ہی یعنی وہ ذات ہی کہ واسطے اجراے کارخانہ عالم کے ہزارون طرح کی تجلی کرتا ہی۔ نیک کرم کرت انیک کرم کرنیوالا یعنی پیدایش و پرورش و فنا وغیرہ بتسرو سب جگت مین بستا ہی اور سب جگت اسمین ہی بتسلو دیاوان ہی یہ وہ ذات ہی کہ دشمنون کے ساتھ بھی دوستی کرتا ہی بتسی گئوون کے بچھے اسکو پیارے ہین چنانچہ شری کرشن اوتار مین گئوونکی پرورش کی اور تمام عالم کا پتا یعنی باپ ہی اور یہ مردمان عالم اسکے بال بچے

अति सुन्दर है और उसने ब्र-
ह्मा और वेद को उत्पन्न कि-
या है और उनको विद्या सि-
खाया है सूक्ष्मः महीन है
आकार जिस का और सम्पू-
र्ण स्थानों में व्यापक है सुघो-
षः सुन्दर है शब्द जिस का
अर्थात् मधुर वाणी है सुख
दः सुख का देने वाला है और
भी ऐसा है कि सज्जनों को सु-
ख और दुर्जनों को दुःख दे-
ता है सुहृत् उपकारी है औ-
र भी ऐसा है कि सम्पूर्ण सृ-
ष्टि का कार्य्य बिना किसी प्र
योजन और बदले के सिद्ध
करता है मनोहरो योगियों के
मन में आने वाला है और सदा आ
नन्ददायक है जितक्रोधो जी-
ता है क्रोध जिसने अर्थात् उस
को कभी क्रोध नहीं आता है
वीरबाहुः वीर है भुजा जि
स की अर्थात् वेद के वचनों के
बने रहने के वास्ते असुरों को
मारता है विदारणः पापी औ
र दुर्जनों को मारता है ॥ ६६ ॥

زیبا رُو ہی اور وہ ذات ہی کہ جسنے برہما
اور بید کو پیدا کیا اور اُنکو علم سکھلایا
سُوکشم باریک ہی آثار جسکا یہ وہ ذات
ہی کہ سب جگہ موجود ہی سُگھوکھم
سُندر ہی شبد جسکا یعنی خوش الحان ہی
سُکھ دہ سُکھ کا دینے والا ہی یہ وہ
ذات ہی کہ نیکوکاران کو راحت دیتا ہی
اور بدکاروں کو عذاب میں گرفتار کرتا ہی
سُہرت اُپکاری ہی یہ وہ ذات ہی
کہ کام تمام عالم کا بغیر کسی غرض وعوض
کے کرتا ہی منوہرو جوگیوں کے ہردے
میں آنے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ راحت
جاوید ہی جت کرودھو جیتا ہی
کرودھ جسنے یعنی وہ ذات ہی کہ جس کو
کبھی غصہ نہیں آتا ہی بیر باہو شُور بیر
ہیں بھجا جسکی یعنی واسطے قائم رکھنے
بید کے دشمنوں کو مارتا ہی بدارنہ
پاپیونکو مارنے والا ہی یعنے جو کوئی کہ
اُسکے سادھ سنتوں بھگتوں کو دکھ
دینے لگتا ہی تو اپنے بھگتوں کے سکھ
ملنے کیواسطے دُرجنوں کو مار ڈالتا ہی —

सतांगतिः सत पुरुषों को ग-
ति देनेवाला है अर्थात् वह ऐ-
सा दयालु है कि सब मुक्ति के
चाहने वाले उससे मुक्ति की
इच्छा रखते हैं सर्व्वदर्शी
सब को देखने वाला है अर्था-
त् सब के कर्म्मों को देखता औ-
र जानता है विमुक्तात्मा
विमुक्त है आत्मा जिसकी सर्-
व्वज्ञो सब का जान्ने वाला है
अर्थात् सब में है ज्ञानमुत्त-
मम् ज्ञान रूप है और बड़ी
बुद्धि ठीक ठीक बेघटाव ब-
ढ़ाव स्थिर रखता है ॥ ६६ ॥

मू॰ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः
सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीर
बाहुर्विदारणः ॥ ६७ ॥

टी॰ सुव्रतः सुन्दर है संकल्प
जिसका और वह ऐसा है कि
जो उसको शरण गया वह दुख
से छूट गया सुमुखः अच्छा
है मुख जिसका अर्थात्

ستانگت اچھے لوگون کو اچھی
گت دینے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ سب
خواہندگان نجات اُس سے رستگاری
چاہتے ہین سرب درشی سبکو
دیکھنے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ تمام اعمال
مردمان کو دیکھتا اور جانتا ہی بمکتاتما
آزاد ہی آتما جسکی سربگیو سب کا
جاننے والا ہی یہ وہ ذات ہی کہ سب مین
ہی گیان اتمم گیان روپ ہی یہ
وہ ذات ہی کہ دانش بزرگ و بے
کم و کاست رکھتا ہی اور راست اور
ثابت ہے –

اشلوک ٦٧

سبرت سمکھ سوکشم سگھو
سکہدو سہرت – منوہرو جت
کرودھو ویربا ہرودارنہ –

ٹیکا ٦٧

سبرت سندر ہی سنکلپ جسکا یہ وہ ذات ہی
کہ جو پناہ اُسکی لے گیا سب دکھون سے
چھوٹ گیا سمکھ اچھا ہی مکھ جسکا یعنے

अपने में लीन करलेता है और आप ही आप स्थिर है **समीहनः** सृष्टि के वास्ते भले प्रकार मे व्यवहार करता है और सृष्टि की उत्पत्ति और पालन और नाश उस की इच्छा से होती है ॥ ६५॥

मू॰ यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः। सर्व्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्व्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ६६॥

टी॰ **यज्ञ** यज्ञरूप है और सब देवताओं का उत्पन्न करने वाला **इज्यो** पूजने योग्य है और ऐसा है कि कोई किसी देवता को पूजे वह प्रसन्न होता है हरिवंश पुराण में लिखा है कि देवता और पितरों की जो यज्ञ करता है वह प्रसन्न होता है **महेज्यश्च** पूजने वालों में यज्ञ अर्थात् पूजने योग्य है **क्रतुः** विष्णु रूप है **सत्रम्** ब्रह्म रूप और सन्त पुरुषों की रक्षा करने वाला है

اپنے میں لین یعنی محو کر لیتا ہے یہ وہ ذات ہے کہ خود بخود قائم ہے **سمی ہنہ** سرشٹ کے واسطے اچھے پرکار سے ہوتا کرتا ہے یہ وہ ذات ہے کہ ایجاد اور بقا اور فنا ے عالم کی ساتھ خواہش اسکے ہے

۶۶ **اشلوک**

جگیہ اجیو مہیجیہ کرتہ ستر ستانگ گتہ - سرب درشی بمکتاتما سرب گیان مُتمم -

۶۶ **ٹیکا**

جگیہ جگ روپ ہے یہ وہ ذات ہے کہ آفرینندہ تمام فرشتگان ہے **اجو** پوجنے کے قابل ہے یہ صفت ذات پرمیشور کی ہے کہ کوئی چاہے جس دیوتا کی پوجا کرے وہ اسی میں خوش ہو جاتا ہے چنانچہ ہربنش پران میں لکھا ہے کہ دیوتا اور پتروں کے واسطے بھی جو کوئی جگ کرتا ہے اس سے بھی وہ خوش ہوتا ہے **مہیجیشچ** پوجنے والوں میں جگیہ ہے یعنی پوجنے کے لائق ہے **کرتہ** بشن روپ ہے **ستر** برہم روپ ہے اور اچھے لوگوں کی رچھیا کرنے والا ہے

जिसको अर्थात् वह ऐसा है कि
सब तरह की सामर्थ्य होने पर
भी घमंड नहीं रखता है **स्थवि**
ष्ठो अतिशय करके स्थूल है
अर्थात् सब सृष्टि उसमें ठहरी
हुई है वेद में कहा है कि अग्नि
कोश उसका शिर है और सू
र्य्य चन्द्रमा उसके नेत्र हैं **भू**
सत्य रूप है **धर्म्मयूपो** भ
गवत् धर्म्म के वश्य हैं अर्थात्
यज्ञ करके सब कर्म्म स्थित हैं
महामखः बड़ी है यज्ञ जि
सकी अर्थात् जो कोई नीति क
रके यज्ञ को करता है उसको
वह परमगति देकर संसार बंध
न से छुड़ा देता है **नक्षत्रने**
मिर्नक्षत्री नक्षत्र में चन्द्रमा
जैसे अर्थात् चन्द्रमा रूप भग
वान् ने कहा है कि नक्षत्रों में
चन्द्रमा मैं हूं **क्षमः** सम्पूर्ण
जगत् वरताने की समर्थ है
अर्थात् सब बातों की साम
र्थ्य रखता है और सब बा
तों के सहने में पृथ्वी के स
दृश है **क्षामः** सब जगत को

جسکو یہ وہ ذات ہی کہ باوجود حاصل
ہونے سب قدرت کے غرور نہین
رکھتا ہی **استھوِشٹھو** بہت استھول
ہی یعنی وہ ذات ہی کہ کل عالم اُس
سے قائم ہی چنانچہ بید مین کہا ہی کہ
کرۂ آتش اُسکا سر ہی اور آفتاب
ماہتاب اُسکی آنکھین ہین **بھور**
ست روپ ہی **دھرمو یوپو** بھگو
دھرم کے بس ہی یعنی وہ ذات ہی کہ جگ
کرکے سب اعمال قائم ہین **مہا مکھہ**
بڑی ہی جگ جسکی یہ وہ ذات ہی کہ جو کوئی
جگ نیت کرکے اُسکے ہیت کری اُسکو قید
عالم سے خلاصی بخشے **نکشتر نیمر نکشتری**
نکشترون مین چندرمان جیسے یعنی چندرمان
روپ سری بھگوان نے کہا ہی کہ ستارون
مین چاند مین ہون **کشمہ** سب جگت کو
برتاونے کو سمرتھ ہی یہ وہ صفت ہی
کہ سب افعال پر قدرت رکھتا ہی
اور تحمل و بردباری مین مثل زمین کے
ہے یعنی سبکی تقصیرات کو معاف کرتا
ہے **کشامہ** سب جگت کو

मनुष्य उसको नित्यानन्द सम-
झ कर उसकी चाहना करते हैं
अपनर्थी नहीं है प्रयोजन जि
स को धर्म्म अर्थ काम मोक्ष
से महाकोषो बहुत खजा
ना रखना है अर्थात् प्राणमय
ज्ञानेन्द्री विज्ञान आनन्द स्थूल
शरीर कारण इत्यादि इस वा
स्ते कि खजाना बहुत रखता
है इससे उसका नाम महाको-
ष है महाभागो बड़ा है भा
ग जिसका अर्थात् बड़े आनंद
रूप है महाधनः बड़ा धन
वाला है अर्थात् सम्पूर्ण धन
धान्य को जो सुख और आन
न्द का कारण है उसने उत्प-
न्न किया है ॥ ६४ ॥

**मू॰ अनिर्विण्णः स्थ
विष्ठो भूर्धर्म्मयूपो म-
हामखः । नक्षत्रने-
मिर्नक्षत्री क्षमः क्षा-
मः समीहनः ॥ ६५ ॥**

टी॰ अनिर्विण्णः नहीं है घमण्ड

مردم اُسکو باعث سرور جان کر اُسکے
طالب ہیں انرتھو نہیں ہے پریوجن
جسکو دھرم اور ارتھ اور کام اور
موکش سے مہاکوشو بہت خزانہ
رکھتا ہے یعنی پران سہت گیان اندری
بگیان انند استھول شریر کارن وغیرہ
اسواسطے کہ خزانہ بہت رکھتا ہے اس
وجہ سے اُسکا نام مہاکوش ہے۔
مہابھاگو بڑا ہے بھوگ جسکا یعنی
صاحب عیش و عشرت عظیم کا ہے
مہادھنہ بڑا ہے دھن جسکا یعنی
یہ وہ ذات ہے کہ تمام دولت کو جو باعث
حصول لذت و عیش کی ہے پیدا کرتا ہے

اشلوک

۶۵

انرونمہ استھوِشٹھو بھوردھرم
یوپو مہامکھہ نکشترنیمر نکشتری
کشمہ کشامہ سمی ہنہ

ٹیکا

۶۵

انربنمہ نہیں ہے گھمنڈ

दक्षो सम्पूर्ण कार्य्यों को शीघ्रक
रता है **विश्रामो** मोक्ष कोदेता
है अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि को जो
उसका ध्यान करता है मुक्ति दे
ता है **विश्वदक्षिणः** सब
जगत् में चतुर है सब कर्म्मों
का जान्नेवाला है ॥ ६३ ॥

मू॰ विस्तारः स्थावरः स्था
णुः प्रमाणं बीजमव्ययं ।
अर्थोनर्थो महाकोशो महा
भागो महाधनः ॥ ६४ ॥

टी॰ **विस्तारः** सम्पूर्ण जग
त् जिसमें विस्तार को प्राप्त
हो **स्थावरः** शील स्वभावहै
अर्थात धीर है और सब को
धीरता देता है **स्थाणु** जिस
में पृथ्वी पति आदिक स्थितहों
प्रमाणं प्रमाण करने वालाहै
और प्रकट है **बीजमव्ययं**
अविनाशी है और उसके बीज
से नाना प्रकार की प्रजा उत्पन्न
हुई हैं **अर्थो** सब जिसकी
प्रार्थना करें और वह ऐसाहै कि

وکشتی سب کاموں کی جلد کرتا ہے وشرامو
موکش کو دیتا ہے وہ ذات ہے کہ تمام
عالم کو جو اسکا دھیان کرتا ہے نجات
دیتا ہے بشو دکشن سب جگت
سے چتر ہے یہ وہ ذات ہے کہ دانا سب
تمام افعال و اعمال ہے

اشلوک
٦٤

وستارہ استھاورہ استھان
پرماناں بیج مبیہ یاپ - ارتھو
نرتھو مہاکوشو مہابھوگو مہا دھنہ

ٹیکا
٦٤

وستارہ تمام عالم جس سے وسعت پاوے
استھاورہ ثبیل سبھاو والا ہے یہ وہ
ذات ہے کہ خود قائم ہے اور سب چیزوں کو
قیام بخشتا ہے استھانہ جسمیں پرتھی
پت وغیرہ قیام کریں پرمانک پرمان
کرنیوالا ہے وہ ذات ہے کہ ظاہر ہے بیج مبیہ
پنک ابناشی ہے یعنی وہ ذات ہے کہ جسکے
تخم سے طرح طرح کی خلقت ظاہر ہوئی ہے
ارتھو سب جسکی استت کرتے ہیں یہ وہ ذات ہے کہ

कहा है कि ऋषघोषजः उसको कहते हैं कि जो सब जगह उत्पन्न होये ॥ ४२॥ ६२ ॥ ६२ ॥

मू ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः सम्वत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ६३ ॥

टी· ऋतुः समय रूप है अर्थात् सब ऋतु उसी का रूप है सुदर्शनः सुख पूर्वक भगवान् को देखै अर्थात् वह ईश्वर ऐसा है कि जिसके दर्शन से मनुष्य विरक्त होकर मुक्ति को प्राप्त होता है कालः सबको गिन लेता है अर्थात् समय रूप है परमेष्ठी हृदय में रहने वाला है अर्थात् जो उसकी शरण जावै उसको बन्धन से छुटा देवै परिग्रहः शरण आने वालों को हाथ आवै जैसे प्रह्लाद को उग्र सम्वत्सरो सूर्यादिक को भय देने वाला है अर्थात् गहन से भय नाश होना-ने का है सम्पूर्ण प्राणी जिस में हैं

کہا ہی کر اُدھوکشی اُسکو کہتے ہیں جو سب جگہ پیدا ہو —

اشلوک

۶۳

رِتُہ سُدرشنہ کالہ پرمیشٹھی پرگرہہ - اُگرہ سمبت سرو دکشو بشرامو بشو دکشنہ -

ٹیکا

۶۳

رِتُہ کال یعنی سمی روپ ہی یہ وہ صفت ہی تمام موسم کی صورت ہی سُدرشنہ سکھ پوربک بھگوان کو دکھائی دیتا ہی یہ وہ ذات ہی کہ جسکے دیدار زیبا سے دولت آزادی حاصل ہوتی ہی کالہ سبکو گن لیتا ہی یعنی شمار کر لیتا ہی یعنی ہم صفت زمانہ کے ہی پرمیشٹھی ہردی میں رہنے والا ہی یہ وہ صفت ہی کہ جو پناہ اُسکی لیوی اُسکو بلا سے چھڑا دے پرگرہہ سرن آنے والونکو ہاتھ آتا ہی جیسے پرہلاد کو اُگرہ سمبت سرو سورج آدک کو بھی ڈر دینے والا ہی یعنی گرہن سے خوف فنا کا ہی سب پران جسمین ہیں

और वायु रूप होकर सब को चै-
तन्य करता है प्राणदः प्राणोंका
संहार करता है और प्रलयकालमें
सब को अपने में खींच लेता है
प्रणवः सब वेद नमस्कार करें जि-
स को तथा सनत्कुमारने कहा है
कि प्रणव वह है जिसको सब नम-
स्कार करें पृथुः जगत स्वरूप है अ-
र्थात् संसार में प्रकट होकर सब
को सावधान करता है हिर-
ण्यगर्भः सम्पूर्ण जगत जि-
स में हो यह गुण उस परमेश्वर में
है कि अण्डेके सदृश होकर सृष्टि
को अपने पेट से उत्पन्न करता है
शत्रुघ्नः देवताओं के शत्रुओं को
मारने वाला है व्याप्तः सब का-
र्यों में कारण रूप होकर व्याप्त है
वायुः गन्ध रूप है अर्थात् श्रीभ-
गवान ने अर्जुन से कहा है कि हे
अर्जुन सुगन्ध में मैं हूं अधोक्ष-
जः जन्म मरण करके रहित है
और वह ऐसा है कि किसी काल
में बल से रहित नहीं है महाभारत में

یہ وہ ذات ہی کہ بصورت باد یعنی ہوا ہوکر
سبکو ہوشیار کرتا ہی پران وہ پرن
کو سنگھار کرتا ہی یہ صفت اُس ذات کی
ہی کہ وقت قیامت کے سب انفاس کو
اپنے مین یکجا کرلیتا ہی پرنو وہ سب
بید نمسکار کرتے ہین جسکو چنانچہ
سنت کمار نے کہا ہی کہ پرنو وہ ہی
جسکو سب سجدہ کرین پرتھ
جگت رُوپ ہی یہ وہ صفت ہی کہ تمام
عالم مین ظاہر ہوکر سب کو آگاہ کرتا ہی
ہرنگربھ کہ سب جگت جسمین ہی
یہ صفت ذات اُس پرمیشور کی ہی کہ مانند
بیضہ کے محل تخم پیدایش تمام عالم کا
اُسکے شکم مین ہی ستروگھن دیوتاؤن
کے دشمنونکو مارنے والا ہی بیاپت
سب کارج مین کارن رُوپ ہوکر بیاپت
ہی بایو گندہ رُوپ ہی چنانچہ شری
بھگوان نے ارجن سے کہا ہی کہ
ہے ارجن خوشبو مین مین ہون ادھوکشج
جنم مرن سے رہت ہی اور یہ وہ ذات
ہی کہ کسیوقت بے طاقت نہو مہابھارت مین

देने वाला नहीं है नेयो जीव
को ब्रह्मरूप करदेना है वाधी-
त मनुष्यों को दयालुता और
कृपालुता सिखाता है नेयो
नयः मोक्ष को प्राप्त कर देता
है और नहीं हैं परमाण अग्नि वा-
ला जिस का और कर्म्म जा-
ना है शक्ति मतां श्रेष्ठो
सामर्थ्य वालों में श्रेष्ठ है धर्मो
सब प्राणियों का धारण करने
वाला है धर्म विदुत्तमः
धर्म जानने वालों में उत्तम है ।६१।

मू॰ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः
प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्या-
प्तो वायुरधोक्षजः ॥ ६२ ॥

टी॰ वैकुण्ठः नहीं है संकोच
जिस को और वह ऐसा है कि जि-
स ने पृथ्वी को पानी पर और वायु को
आकाश में ठहरा रक्खा है पुरु-
षः मनुष्यों के सब पापों को भ-
स्म करता है और सब के पहिले है
प्राणः क्रिया शक्ति वाला है

دینے والا نہیں ہی نیئو جیو کو برہم روپ
کر دیتا ہی یعنی آدمیونکو رحم و عنایت
سکھلاتا ہی نیئو نیہ موکش کو پراپت
کر دیتا ہی اور نہیں ہی پرمان جس والا
جسکا ہی ۵ کرم والا ہی شکت
متانگ سریشٹھو سامرتھ والون
مین سریشٹھ ہی دھرمو سب پرانیون
کا دھارن کرنے والا ہی دھرم ودتم
دھرم جاننے والون مین اُتّم ہی ۶۱

اشلوک ۶۲

بیکنٹھہ پرش پران پراندہ پرنو پرتھہ
ہرن گربھ شترگھنو ویاپتو وایو ادھوکشج

ٹیکا ۶۲

بیکنٹھہ نہیں ہی سنکوچ جسکو یہ وہ ذات
ہی کہ جسنے زمین کو پانی پر اور ہوا کو آسمان پر
قائم کیا پرش سب پاپونکو بھسم کرتا
پہ وہ ذات ہی کہ سب سے اول
ہی اور تمام گناہ آدمیون سے معدوم
کرتا ہی پران کریا شکت والا ہی

स्थित है पुष्टः सम्पूर्ण गुणों
वारके युक्त है और सब स्थानों
मे वर्तमान है शुभेक्षणः शु-
भ रहे हैं नेत्र जिसके और ऐ-
सा है कि मुमुक्षु को मुक्ति दे-
ता है और अज्ञान को दूरक-
रता है ॥६०॥

मू॰ रामो विरामो विरजो
मार्गोनेयोनयोनयः। वी-
रःशक्तिमतांश्रेष्ठोधर्मो
धर्मविदुत्तमः ॥६१॥

टी॰ रामो सब योगी जिसमें
रमण करें उसको राम और प-
रब्रह्म कहते हैं विरामो सब
प्राणी जिसमें लीन होजावें अ-
र्थात् वह ऐसा है कि जिसमें स-
ब सृष्टि अन्त को मिल जाती
है विरजो नहीं है विषय की
इच्छा जिसको अर्थात् वह ई-
श्वर सकल दुःखों से परे है औ-
र वेदों में भी कहा है कि वह प-
वन से भी अधिक पवित्र है मा-
र्गो मोक्ष का उपाय है अर्थात् सिवा-
य उसके और कोई दूसरा मोक्ष का

قائم ہے پشٹہ یعنی سنتوکھ کو پراپت ہے
تشٹہ یعنی سب گن کرکے مکمل ہوا ہے
وہ ذات ہے کہ سب جگہ موجود ہے
شبھیکشنہ اچھے ہیں نین جسکے یہ وہ ذات
ہے کہ خواہندگان نجات کو نجات دیوے اور
غفلت کو معدوم کرے

اشلوک ۶۱

رامو برامو برجو مارگو نیو نیو نیہ
ویرہ شکت متانگ شریشٹو
دھرمو دھرم ودتمہ

ٹیکا ۶۱

رامو سب جوگی جسمیں رمن کریں اسکو
رام اور برہم کہتے ہیں برامو سب
پرانی جسمیں لین ہوجاویں یعنی وہ ذات
ہے کہ جسمیں تمام جہان آخر کو مل جاوے
برجو نہیں ہے بشے کی اچھا جسکو یعنی یہ
صفت اس ذات میں ہے کہ کلفت اور
کدورت سے پاک ہے بید میں بھی کہا ہے
کہ وہ پون سے بھی پوتر ہے مارگو موکش
کا اپاے ہے یعنی یہ وہ ذات ہے کہ
سوا اسکے اور کوئی دوسرا نجات کا

टी· **व्यवसायो** निश्चय रूप व्ह ईश्वर है कि संसार रूप प्रकार है **व्यवस्थानः** सम्पूर्ण जगत् को अलग अलग स्थित करने वाला है अर्थात सकल सृष्टि उसके ज्ञान और अज्ञान से वर्त्तमान है **संस्थानः** पहिले प्रकार जो स्थित हो क्षीर सागर में योगियों के हृदय में सूर्य्य मण्डल में उस ईश्वर का स्वभाव है कि अंतको उसके होने के वास्ते यह स्थान अच्छे हों **स्थानदो** स्थान देने वाला है अर्थात् वह ऐसा है कि ध्रुव इत्यादि को उनके कर्मानुसार स्थान देता है **ध्रुवः** स्थिर है अर्थात् वह ईश्वर ऐसा है कि अविनाशी है और किसी तरह से कभी नाश को प्राप्त नहीं होता **परर्द्धिः** परम है ऐश्वर्य्य अर्थात् ऋद्धि वाला है यह उसमें गुण है कि विभव अत्यन्त रखता है **परमस्पष्टः** आत्मा में प्रकाशवान है और प्रकाश रूप होकर केवल आप ही आप

ٹیکا

۶۰

بیوسایو نشچے روپ ہے وہ ذات ہے کہ بصورت عالم ہے **بیوستھانہ** تمام عالم کو علیحدہ علیحدہ قائم کرنیوالا ہے۔ وہ صفت ہے کہ تمام عالم حیوانات و نباتات و مکروہات وغیرہ بعلم اُسکے حاضر و موجود ہے **سنستھانہ** پہلے پرکار جو استحقت ہو چھیر ساگر مین یا جوگیون کے ہردے مین یا سورج منڈل مین اُس ذات کی یہ صفت ہے کہ آخرکو واسطے ہونے اُسکے کے یہ مقامات اچھے ہون **استھان دو** استھان دینے والا ہے یہ وہ ذات ہے کہ قطب وغیرہ کو موافق عمل کے جگہ بخشتا ہے **دھروہ** قائم ہے یہ وہ ذات ہے کہ لازوال ہے اور کسیوجہ سے فنا اُسپر گذر نکرے **پررد ھ** پرم الیشورج والا ہے یہ صفت اُس ذات کی ہے کہ دولت و حشمت اعظم رکھتا ہے **پرمسپشٹ** آتما مین پرکاش وان ہے وہ ذات ہے کہ بصورت عقل محض خود بخود

करणंकारणं कर्त्ता वि-
कर्त्ता गहनो गुहः॥ ५९॥

टी. उद्भवः सारा जगत जिससे पैदा हुआ क्षोभणो माया औ
र पुरुष को उत्पत्ति में लगावै देवः प्रकाश रूप है श्रीगर्भः
लक्ष्मी है गर्भ में जिसके परमे-
श्वरः सब से अधिक ईश्वर है करणं सिद्ध करनेवाला है का-
रणं करनेवाला है कर्त्ता बनाने वाला है विकर्त्ता रूप जगत को
अनेक प्रकार का बनाता है गहनो
जो दुःख करके जानने योग्य है गु-
हः अपनी माया करके आपने रू-
प से लुकै अर्थात अपने आपको
संसार रूप में छिपावे ॥ ५९॥

मू. व्यवसायो व्यवस्थानः
संस्थानः स्थानदो ध्रुवः। पर-
र्द्धिः परमः स्पष्टस्तुष्टः पु-
ष्टः शुभेक्षणः॥ ६०॥

کرنم کارنم کرتا بکرتا گہنو گہہ

۵۹

اُدبھوہ تمام عالم جس سے پیدا ہوا
کشوبھنو مایا اور پرش کو اتپت
میں لگاتا ہے دیوہ پرکاش روپ
ہے شری گربھہ لکشمی جس کے گربھ
میں ہے پرمیشورہ سب سے ادھک
ایشور ہے کرنم سدھ کرنے والا ہے
کارنم کرنے والا ہے کرتا کرتا ہے
بکرتا تمام جگت کو انیک پرکار کا بناتا
گہنو دکھ کرکے جاننے جوگ ہے گہہ
اپنی مایا کرکے اپنے روپ میں لکے یعنی
وہ صفت ہے کہ اپنے آپ کو بیچ صورت
عالم کے پوشیدہ کرے

اشلوک

۶۰

بیوسایو بیوستھانہ سنستھانہ
استھان دو دھروہ
پرردھہ پرمہ سپشٹ
تشٹہ پشٹہ شبھیکشنہ

दूसरा अर्थ यह है कि उसके पेट
में सब सृष्टि है और तीसरा अर्थ
यह है कि श्री कृष्णजी को यशो
दाजी ने रस्सी से बांधा था सहः
सहने वाला है अर्थात् किसी के
बुराई करने से बुरा नहीं मानता
यह गुण केवल ईश्वर ही में है
महीधरो पृथ्वी का धारण क
रने वाला है अर्थात् पहाड़ होकर
पृथ्वी को स्थित किये है विष्णु
पुराण में लिखा है कि जंगल
और पहाड़ और दिशा सब उ
सी का रूप है महाभागो
बड़ा है भाग जिन का और व
ह ईश्वर ऐसा है कि अपनी इ
च्छा से संसार में प्रकट हुआ
जैसे श्री कृष्णावतार और रामा
वतार वेगवान् मन से भी
अधिक है वेग जिनका अमिता
शनः वे प्रमाण है भोजन जिन
का अर्थात् प्रलय के समय स
ब सृष्टि को खा जाता है॥ ५९॥

मू॰ उद्भवः क्षोभणो दे
वः श्रीगर्भः परमेश्वरः।

یا ایسا ذات ہی کہ ساتھ ضبط حواس ظاہر و
باطن سکے اُسکو نہ پا سکے اور دوسرے معنی
یہ ہین کہ اُسکے پیٹ مین تمام عالم ہی اور
تیسرے معنی یہ ہین کہ شری کرشن مہاراج
کو جسودا جی نے رسّی سے باندھا تھا —
سہ سہنے والا ہی یعنی کسیکے برائی کرنے
سے برا نہین مانتا یہ صفت صرف ذات
پرمیشور مین ہی مہی دھرو پرتھوی کا
دھارن کرنیوالا ہی یعنی بشکل پہاڑ ہوکر
زمین کو قائم رکھا تھا وشن پران مین
لکھا ہی کہ صحرا و کوہ و جملہ اطراف صورت
اُس پرمیشور کی ہی مہا بھاگو بڑا ہی
بھاگ جسکا اور یہ وہ ذات ہی کہ بخواہش
اپنے عالم مین ظہور کیا جیسے شری کرشن
اور رام اوتار بیگوان من سے بھی ا
دھک جسکا یعنی اندیشۂ دل سے بھی
زیادہ تیز رفتار امتا شنہ بے پایان ہی
خوراک جسکا یعنی قیامت مین سب جہان کو کھا جاتا ہی

اشلوک

اُدبھوہ کشوبھنو دیوہ
شری گربھہ پرمیشورہ

भौम और सूर्यादि जिस से डरते है समयज्ञो उत्पत्ति पालन संहार का जानने वाला है हवि हरिः यज्ञ के भागों का लेनेवाला है हवि के अर्थ यह है कि जो कुछ होम में जल जाय और हरि के अर्थ यह है कि सब पापों को हर के मनुष्य को शुद्ध कर देवे सर्व्वलक्षण सारे लक्षणोंको देखता है लक्षण्यो देखता हुआ है लक्ष्मीवान् लक्ष्मीवाला है समितिंजयः संग्राम का जीतने वाला है ॥५७॥

मू॰ विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः । महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ५८ ॥

टी॰ विक्षरो अविनाशी है रोहितो लाल है वर्ण जिनका मार्गो मुक्ति की इच्छा वालोंको विचारने योग्य है हेतुः मुक्ति का देने वाला है दामोदरः रस्सी जिसके उदर में बंधी हुई है

بھوم اور سورج وغیرہ جس سے ڈرتے ہیں سمیگیو اتپت پالن سنگھار کا جاننے والا ہے ہبر ہرہ جگ کے بھاگون کا لینے والا ہے ہبر کے یہ معنی ہیں کہ جو کچھ ہوم کے جل جاے اور ہرہ کے یہ معنی ہیں کہ سب گناہوں کو بخش کر آدمی کو پاک کر دے سرب لکشن لکشنیو سب لکشنوں کو دیکھتا ہے لکشمی وان دولت مند ہے ستمتم جیہ سنگرام کا جیتنے والا ہے

اشلوک

۵۸

بکشرو روہتو مارگو ہیتو داموودرہ سہہ۔ مہی دھرو مہا بھاگو بیگ وان متاشنہ

ٹیکا

بکشرو ابناشی یعنی لازوال ہے روہتو لال ہے رنگ جسکا مارگو مکت کی اچھا والون کو بچارنے جوگ ہے ہیتو مکت کا دینے والا ہے داموودرہ رسی جس کے پیٹ مین بندھی ہوئی ہے

मू· पद्मनाभोरविन्दाक्षः
पद्मगर्भश्शरीरभृत । म
हर्द्धिरृद्धोवृद्धात्मामहा
क्षोगरुडध्वजः ॥ ५६ ॥

टी· पद्मनाभो कमल है ना-
भि में जिनके अर्थात् ब्रह्मारूप
अरविन्दाक्षः कमलवत हैं नेत्र जि
नके पद्मगर्भः कमल है ग
र्भ में जिनके शरीरभृत श-
रीर को धारण करे है महर्द्धि
बड़ी है ऋद्धि अर्थात् तपस्या
जिसकी वृद्धो बढ़ता हुआ
है वृद्धात्मा ब्रह्मादिकों की
आत्मा है महाक्षो अच्छे हैं
नेत्र जिनके गरुड़ध्वजः ग-
रुड़ है ध्वजा में जिनके ॥ ५६ ॥

मू· अतुलः शरभोभीमः
समयज्ञो हविर्हरिः । सर्व
लक्षणलक्षण्यो लक्ष्मी
वान्समितिंजयः ॥ ५७ ॥

टी· अतुलः नहीं बराबर है
जिसके कोई शरभो शरीर
का दिखानेवाला है भीमः

اشلوک ۵۶

پدم نابھو رہندا کشہ پدم گربھ
شریربھرت۔ مہر دھر ردّھو
برڈھاتما مہا کشو گرڑ دھوجہ

ٹیکا ۵۶

پدم نابھو پدم ہی نابھ جسکی یعنی برہما
روپ اربندا کشہ کمل ایسے ہیں نیتر
جسکے پدم گربھہ کمل ہی گربھ میں جسکے
شریر بھرت شریر کو دھارن کرتا ہی
مہر دھر بڑی ہی ردھ یعنی تپسیا جسکی
برڈھو بڑھتا ہی برڈھاتما برہما دیکو
کی آتما ہی مہا کشو اچھے ہیں نیتر جسکے
گرڑ دھوجہ گرڑ ہی دھوجا میں جسکے۔

اشلوک ۵۷

اتلہ شربھو بھیمہ سمیگیو ہور ہری
سرب لکشن لکشنیو لکشمی وان سمتنجیہ

ٹیکا ۵۷

اتلہ نہیں ہی برابر اسکے کوئی شربھو
شریر کو دکھانے والا ہی بھیمہ

वासुदेवो वसुदेव के पुत्र हैं-
[illegible] बड़ी है कीर्ति
जिन की आदिदेवः आदिदेव
हैं अर्थात् वेद रूप होकर शुभ
[illegible] को प्रकाश किया पुरुषर्षभः
[illegible] है॥५४॥
[illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
को जानने वाला है [illegible]
म करने वाला है [illegible]
न का पीता है अर्थात् [illegible]
रूपी [illegible]
का बड़ा ईश्वर है [illegible]
लः सब का आनन्द देने वा-
ला है पीतवर्णः सैकड़ों हैं
अवतार जिसके पद्मी कम-
ल है हाथ में जिसके पद्म
निभेक्षणः कमल के ऐसे
हैं नेत्र जिसके ॥५५॥

باسدیو وسدیو کے پتر ہیں برہد
بھانُ بڑی ہے کرن جس کی
آدی دیوہ آدی دیو ہیں یعنی بیدروپ ہو
کر [illegible] کی ہدایت کی
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] والا ہے [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] سب کو آنند دینے
والا ہے [illegible] سیکڑوں ہیں اوتار
جسکے پدمی کمل ہے ہاتھ میں جسکے پدم
[illegible] کمل کے ایسے ہیں نیتر جسکے

सब को व्यवहार करने वाला है आण[illegible] देवताओं को प्रा-
ण का देने वाला है अमस्वा-
नुजः इन्द्र के छोटे भाई वे-
[illegible] अवतार [illegible]
[illegible]
[illegible] अधिष्ठान [illegible] का आ-
[illegible]
[illegible] स्वरूप [illegible]
[illegible] अपनी [illegible]
हित है ॥ ५३ ॥

मू० [illegible]

औ[illegible] ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादि
देवः पुरन्दरः ॥ ५४ ॥

टी० स्कन्दः अमृत रूप करके दि-
रै अर्थात् दम कै स्कन्दधरो
देवताओं का सेनापति अर्थात्
स्वामि कार्त्तिक धुर्य्यो जगत् की
उत्पत्ति और पालन और संहार का
धारण करने वाला वरदो वर-
दान देने वाला है वायुवा-
हनः वायु है सवारी जिसकी

سب کا بیوہار کرنے والا ہی [illegible]
دیوتاؤں کو بھی پران کا دینے والا ہے
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

ٹیکا
[illegible]
[illegible]
دیوتاؤں کا سیناپت یعنی سوامی کارتک
[illegible] لوکات کی اتپت اور پالن
اور سنگھار کرنے والا ہی [illegible]
بردان دینے والا ہی [illegible]
پون یعنی ہوا ہے سواری جس کی

विश्वबाहुर्महीधरः ॥५२॥

टी॰ इष्टः सब को प्यारा है विशिष्टः अन्तर्यामी रूप और अच्छा है शिष्टेष्टः अच्छे पुरुष प्यारे हैं जिस को शिखण्डी मोर का पंख है जिसके शिर के ऊपर नहुषः अपनी माया करके बाँध लेता है वृषः भक्तों की कामना देता है क्रोधहा साधुओं का क्रोध दूर करने वाला है क्रोधकृत् पापियों के ऊपर क्रोध करने वाला है कर्त्ता सम्पूर्ण जगत् का करने वाला है विश्वबाहुः जगत् की भुजा है महीधरः पृथ्वी का धारण करने वाला है अर्थात् वाराह रूप शेष रूप होकर ॥५२॥

मू॰ अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥५३॥

टी॰ अच्युतः जन्म से रहित है प्रथितः विख्यात है प्राणः

بشوباہری مہی دھرہ ۔

ٹیکا ۵۲

اِشٹو سبکو پیارا ہی وشِشٹہ انترجامی روپ اچھا ہی شِشٹیشٹہ اچھے پُرش پیارے ہیں جسکو شکھنڈی مور کا پنکھ ہی جسکے سر کے اوپر نہکھو اپنی مایا سے باندھ لیتا ہی برکھ بھگتون کی کامنا دینے والا ہی کرودھ ہا سادھوون کا کرودھ دور کرنیوالا ہی کرودھ کرت پاپیون کے اوپر کرودھ کرنیوالا ہے کرتا سب جگت کا کرنیوالا ہی بشو باہو جگت کی بھجا ہی مہی دھرہ پرتھوی کا اٹھانیوالا ہی باراہ یا شیش روپ ہوکر

اشلوک ۵۳

اچیوتہ پرتھتہ پران پرانڈو باسوانجہ۔ اپانِدھ ادھشٹھانم پرمتہ پرتشٹھتہ

ٹیکا ۵۳

اچیوتہ جنم سے رہت ہے پرتھتہ کہیا یعنی مشہور ہے پرانہ

मू॰ युगादिकृद्युगावर्त्तो
नैकमायोमहाशनःअदृ-
श्यो व्यक्तरूपश्चसहस्र
जिदनन्तजित ॥ ५२ ॥

टी॰ युगादिकृत् जगत का आ-
दि करनेवाला है युगावर्त्तो यु-
गों का वर्त्तावने वाला है नैकमा-
यो नहीं है एक माया जिसके म-
हाशनः बड़ा है भोजन जिस
का अर्थात् सब संसार को एक
ग्रास करके समाप्त करता है अ-
दृश्यो देखने में नहीं आता है य-
ह भी ईश्वर का एक गुण है कि इ-
न्द्रियों से परे है व्यक्तरूपः
स्वयंप्रकाश है रूप जिसका अ-
र्थात् सृष्टि रूप होकर आप ही
प्रकट और प्रकाशित है सहस्र-
जित् हजारों को जीतने वाला
है अनन्तजित बहुतों को
जीतने वाला है ॥ ५२ ॥

मू॰ इष्टोविशिष्टःशिष्टे-
ष्टःशिखण्डीनहुषोवृ-
षः। क्रोधहाक्रोधकृत्कर्त्ता

اشلوک
۵۲
یگادکرد یگاورتو نیک مایو
مہاشنہ ۔ ادرشیو ویکت روپشچ
سہسرجد ننت جت ۔

ٹیکا
۵۲
یگادکرد یگ کا آدکرنیوالا ہی یگاورتو
یگون کا برتاؤ کرنیوالا ہی نیک مایو
نہین ہی ایک مایا جسکی مہاشنہ بڑا ہی
بھوجن جسکا یعنی یہ وہ ذات ہی کہ تمام عالم
کو آخرکار ساتھ ایک لقمہ کے تمام کریگا
ادرشیو دیکھنے مین نہین آتا ہی یہ بھی
ایک صفت ذات پرمیشور کی ہی کہ حواس
خمسہ مین گنجایش پذیر نہین ہی ویکت
روپہ سویم پرکاش ہی روپ جسکا
یعنی آپ ہی بصورت عالم باختیار خود ظاہر
و روشن ہوا ہی سہسرجد ہزارونکو جیتنے
والا ہی یعنی اوپر شیاطین کے بھی مظفر و منصور
اننت جت بے انتہا جیتنے والا ہی ۔

اشلوک
۵۳
اشٹو وششٹہ ششٹیشٹہ شکھنڈی
نہکھو برکھہ ۔ کرودھہا کرودھ کرت کرتا

शशबिन्दुः खरगोश की ऐसी बिन्दी है जिसके सुरेश्वरः देवताओं का मालिक है औषधं भक्तों की दवा है जगत्सेतुः जगत का पुल है सत्यधर्म पराक्रमः सत्य और धर्म का पराक्रम है जिसको ॥ ४९ ॥

मू· भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोनलः। कामहा कामकृत् कान्तः कामी कामप्रदः प्रभुः ॥ ५० ॥

टी· भूतभव्यभवन्नाथः हो गया होगा है इन तीनों का मालिक है पवनः सारे जगत् को पवित्र करने वाला है पावनो पवित्र मानी पाक ज़ात है अनलः प्राणों का धारण करने वाला है कामहा भक्तों का कामदेव दूर करने वाला है कामकृत साधुओं के काम पूरे करै कान्तः सुन्दर है कामी मोक्ष चाहनेवाले जिस की कामना करैं हैं कामप्रदः कामना का देने वाला है प्रभुः समर्थ है ॥ ५० ॥

ششبندو چاند رمان کی ایسی بندی ہی جسکے سریشورہ دیوتاون کا مالک ہی اوکھدھنگ بھگتون کی دواہی جگت سیتہ جگت کا پل ہی ستیہ دھرم پراکرم ہ اچھے گیان کا پراکرم ہی جسکو

اشلوک

بھوت بھبیہ بھونا تھہ پونہ پاونونلہ۔ کامہا کام کرت کانتہ کامی کام پردہ پربھہ

ٹیکا

بھوت بھبیہ بھونا تھہ ہوگیا ہوگا ہی ان تینون زمانونکا مالک ہی پونہ سب جگت کو پوتر کرنیوالا ہی پاونو سب جگہ پاک ہی انلہ پرانون کا دھارن کرنیوالا ہی کامہا بھگتون کا کام دور کرنیوالا ہی کامکرت ساد ھو لوگون کی منورتھ پورن کرنے والا ہی کانتہ سندر ہی کامی موکش چاہنے والے جسکی اچھا کرتے ہین کام پردہ کامنا کا دینے والا ہی پربھہ سمرتھ ہی

मू॰ ओजस्तेजो द्युतिधरः
प्रकाशात्मा प्रतापनः। ऋ-
द्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रां-
शुर्भास्करद्युतिः ॥ ४८ ॥

टी॰ ओजस्तेजो द्युतिधरः
प्राण का बल तेज प्रकाश का धा-
रण करने वाला प्रकाशात्मा
ज्ञान रूप है आत्मा जिसकी प्र
तापनः जगत् का प्रकाश क-
रने वाला जैसे सूर्य्य और चन्द्र-
मा ऋद्धः धर्म्म ज्ञान वैराग का
आसरा स्पष्टाक्षरो ओंकार
है अक्षर जिसका मन्त्रः मन्त्र का जानने
वाला है चन्द्रांशुः चन्द्रमा है कि-
रण जिसकी भास्करद्युतिः
सूर्य्य है प्रकाश जिसका ॥ ४८ ॥

मू॰ अमृतांशूद्भवो भा-
नुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः
औषधं जगतः सेतुः स-
त्यधर्म्मपराक्रमः ॥ ४९ ।

टी॰ अमृतांशूद्भवो अमृत
रूपी किरणों से पैदा हुआ अर्थात्
औषधि भानुः प्रकाशवाला है

اشلوک

۴۸ اوجس تیجو دیوت دھرہ پرکاشا
تما پرتاپنہ رِدّھہ اسپشٹاکشرو
منترش چندرانشر بھاسکر دیوتہ

ٹیکا

۴۸ اوجس تیجو دیوت دھرہ پران کا
بل تیج پرکاش دھارن کرنے والا ہے
پرکاشاتما گیان روپ ہے آتما جسکا
پرتاپنہ جگت کا پرکاش کرنیوالا ہے جیسے
سورج اور چندرماں رِدّھہ دھرم گیان
بیراگ کا آسرا ہے اسپشٹاکشرو اونکار ہے
اچھر جسکا منترہ گیت کا جاننے والا ہے چندرانشہ
چندرماں ہے کرن جسکی بھاسکر دیوتہ
سورج ہے پرکاش جسکا ۔

اشلوک ۴۹

امرتانگ شودبھوو بھانہ ششبندہ
سریشورہ اوکھدھنگ جگتہ سیتہ
ستیہ دھرم پراکرمہ ۔

ٹیکا ۴۹

امرتانگ شودبھوو امرت روپی کرنوں سے
پیدا ہوا یعنی اوکھدھ بھانہ پرکاش والا ہے

दानादिक दिया उसको बढ़ाता है वर्द्धमानश्च ब्रह्मादिक सम्पूर्ण प्रजा को बढ़ाता है विविक्तः उत्पत्ति रहित है श्रुति सागरः सकल वेदों का समुद्र है ॥ ४६ ॥

मू॰ सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः । नैकरूपो वृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ ४७ ॥

टी॰ सुभुजो अच्छे हैं भुजा जिसके अर्थात् वह संसार की रक्षा के वास्ते अच्छे भुजा रखता है दुर्द्धरो दुःख करके धारणा होती है जिसकी वाग्मी वेद वाणी का पैदा करने वाला है महेन्द्रो ब्रह्मादिक का पति है वसुदो धनदायक है वसुः वायु रूप है नैकरूपो अनेक रूप है वृहद्रूपः बड़ा है रूप जिसका शिपिविष्टः जग के जीवों में वास करने वाला है प्रकाशनः प्रकाश करने वाला है ॥ ४७ ॥

دان وغیرہ دیا اسکو بڑھاتا ہے
بردھمانش برہما وغیرہ سب
پرجاکو بڑھاتا ہے ببکتہ اتپت
سے رہت ہے شرت ساگرہ تمام
بیدون کا سمندر ہے

اشلوک

سبہجو دردھرو باگمی مہیندرو
بسو دو بسہ۔ نیک روپو برہد
روپہ شپیشٹہ پرکاشنہ۔

ٹیکا

سبہجو اچھے ہیں بھجا جسکے یعنی یہ وہ ذات
ہے کہ جسکے بازو واسطے محافظت خلائق کے
بہت اچھے ہیں دردھرو مشکل سے دھارن
ہوتا ہے باگمی بید بانی کا پیدا کرنیوالا ہے
مہیندرو برہما وغیرہ کا پت ہے بسدو
دھن دینیوالا ہے بسہ بایو روپ ہے
نیک روپو انیک روپ ہیں برہدرو
بڑا ہے روپ جسکا شپیشٹہ جگت
کے جیوون سے تراس کرنے والا ہے
پرکاشنہ پرکاش کرنیوالا ہے۔

स्वरूप जिसका **विशिष्टः** सब
से अधिक है **शिष्टकृत्** अच्छे
आचारों की पालना करने वाला है
श्रुतिः सिद्ध है **सिद्धार्थः** सि
द्ध है अर्थ जिसके **सिद्धसंक-**
ल्पः सिद्ध हैं संकल्प जिसके
अर्थात् चित्त उसका परमानन्द
है **सिद्धिदः** कर्म्म का फल देने
वाला है **सिद्धिसाधनः** सिद्धि
यों का सिद्ध करने वाला है ॥ ४५ ॥

मू॰ **वृषाही वृषभो विष्णुर्वृ**
षपर्वा वृषोदरः । वर्द्धनो
वर्द्धमानश्च विविक्तः श्रु
तिसागरः ॥ ४६ ॥

टी॰ **वृषाही** बारह दिन की य-
ज्ञ करके सिद्ध हो अर्थात् शुभक-
र्म्म का उत्पन्न करने वाला है **वृ-**
षभो भक्तों को कामना दे **वि-**
ष्णुः विशेषता करके सब में चले
अर्थात् अति शीघ्र गामी है **वृ-**
षपर्वा नाना प्रकार की प्रजा उ-
त्पन्न करै **वृषोदरः** बैल का उ-
दर है अर्थात् सब संसार उसके
पेट में है **वर्द्धनो** जो भक्तों ने

سروپ جسکا **بششٹہ** سب سے ادھک
ہی **ششٹ کرت** اچھے آچارون کی
پالنا کرنیوالا ہی **شرتہ** سدھ ہی **سدھارتھ**
سدھ ہین ارتھ جسکے **سدھ سنکلپہ**
سدھ ہی سنکلپ جسکا یعنی دل اسکا
بکمال آرام ہی **سدھ دہ** کرم کا پھل
دینے والا ہی **سدھ سادھنہ**
سدھیون کا سادھنے والا ہی

اشلوک ۴۶

برکھاہی برکھبھو بشنر برکھ پربا
برکھودرہ ۔ بردھنو بردھ
مانشچ ببکتہ شرت ساگرہ

ٹیکا ۴۶

برکھاہی بارہ دن کی جگ کر کے سدھ
ہو یعنی پیدا کنندہ نیکو کاری ہی **برکھبھو**
بھکتون کی کامنا پوری کرتا ہی **بشنہ** خاص
کر کے سب مین چلی یعنی نہایت تیز رو ہی **برکھ پربا**
طرح طرح کی خلقت پیدا کرتا ہی **برکھودرہ**
بیل کا پیٹ ہی جسکا یعنی تمام جہان اسکے
شکم مین ہی **بردھنو** جو بھکتون نے

टी॰ सुप्रसादः अच्छा प्रसन्न है प्रसन्नात्मा सदा रहै प्रसन्न आत्मा जिसकी विश्वधृक् जगत की रक्षा करै और अपने ज्ञान ऐश्वर्य्य करके जगत की संहार करै विश्वभुग् विभुः प्रलय काल में जगत को संहार करै विराट रूप है सत्कर्त्ता ब्रह्मा का सत्कार करने वाला है सत्कृतिः ब्रह्मादिकों का पूज्य है साधुः सब का कार्य्य सिद्ध करता है जह्नुः मनुष्य और सब जीवों को संहार करता है नारायणो जल है स्थान जिसका और नर रूप है नरः भक्तों को कर्म्म में लगाना है ॥४४॥

मू॰ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥४५॥

टी॰ असंख्येयो असंख्य योनि अप्रमेयात्मा नेइच्छा है

ٹیکا
۴۴
ستپرساده اچھا پرسن ہی پرسناتما سدا رہی پرسن آتما جسکی بشودھرک جگت کی رچھا کرنے والا اور اپنے گیان ایشوریج کرکے جگت کو سنگھار کرنیوالا ہی بشوبھک بِبھُہ پرلی کال مین جگت کو سنگھار کرتا ہی براٹ روپ ہو ستکرتا برہما کا ستکار کرنے والا ہی ستکرتہ برہمادکون کا پوجیہ ہی سادھ سب کا کارج سدہ کرتا ہی جہنہ آدمی اور سب جیونکو سنگھار کرتا ہی نارائنو جل ہی استھان جسکا اور نر روپ ہی نرہ بھگتون کو کرم مین لگاتا ہی

اشلوک
۴۵
اسنکھیو پرمے یاتما بششٹہ ششٹ کرت چھچہ سدھارتھ سدھ سنکلپ سدھ ده سدھ ساودھن

ٹیکا
۴۵
اسنکھیو اسنکھ جون یعنی بے انتہا مظہر کاینات ہی پرمے یاتما سب اچھا ہی

आवर्त्तनो उत्पत्ति और पालन और नाश करने वाला और यह कि संसारी चक्र का फिराने वाला है निवृत्तात्मा ज्ञान करके हटा हुआ है संसार से आत्मा जिसका अर्थात् संसारी बन्धन से अलग है सम्पूर्णः पूर्ण शक्ति होकर बढ़ा हुआ है अर्थात् संसार में गुप्त होकर व्यापक है सम्प्रमर्दनः प्रलय काल में संसार को संहार करने वाला है अहः संवर्त्तको मन का बरताने वाला और रस देने वाला है वह्निः जीव का बरताव करने वाला है और महा प्रलय काल रूप है और यह उसके प्रताप की प्रशंसा है अनिलो नहीं है प्रमाण जिसका और यह कि अनादि है धरणीधरः पृथ्वी का धारण करने वाला है ॥ ४३॥

मू. सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः सत्कर्त्ता सत्कृतिः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ ४४ ॥

ٹیکا

۴۳
آبرتتو اتپت اور پالن اور سنگھار کرنے والا ہے اور یہ کہ دائرہ عالم کو گردان کرنیوالا ہے نبرتاتما گیان کرکے ہٹا ہوا ہے سنسار سے آتما جسکا یعنی قیود عالم سے پاک ہے سمپورن پورن شکت کرکے ڈھکا ہوا ہے یعنی پوشیدہ محیط عالم ہے سمپرمردنہ پرلی کال میں جگت کو مردن کرنے والا یعنی فنا کنندہ عالم ہے اہہ سمبرتکو دل کو برتانے والا اور سکھ دینے والا ہے بہنہ جیو کا برتاو کرنے والا اور بصورت قیامت کبری ہے اور یہ اسکے جلال کی صفت ہے انلو نہیں ہے پرمان جسکا اور یہ کہ ابتدا نہیں رکھتا ہے دھرنی دھرہ پرتھوی کا دھارن کرنے والا ہے

اشلوک

۴۴
سپرسادہ پرسناتما بشودھرگ
بشوبھگ بہبھہ ستکرتا
ستکرتہ سادھرجہنر نارائنو نرہ -

टी॰ रूपग्रणीः आनन्द रूप को प्राप्त करदे और भी ढूंढने वाले को परम पद को पहुंचावे ग्रा- मणीः प्राणियों का प्रेरने वा- ला और संसार को सूधी राह पर रखने वाला और हर एक को क- र्म्म का फल देने वाला है श्रीमा न् शोभावाला न्यायो न्याय को जानने वाला अर्थात् न्या- य करने वाला नेता सारे जग त को हरने वाला समीरणः सब को वायु रूप होकर हिलाने वाला अर्थात् श्वास रूप होकर चैतन्य करता है सहस्रमूर्द्धा हजारों माथे हैं जिस के अर्थात् हजार शिर रखता है विश्वा त्मा सारे जगत की आत्मा है सहस्राक्षः हजारों आंखें रखता है सहस्रपात् हजा रों पांव रखता है ॥ ४२॥

मू॰ आवर्त्तनो निवृत्ता- त्मा संवृत्तः संप्रमर्दनः। अहः संवर्त्तको वह्नि र निलो धरणीधरः॥४३॥

ٹیکا

۴۲
اگرنیہ آنند روپ کو پراپت کر دے اور
ڈھونڈھنے والے کو درجۂ اعلی پہنچاوے
گرامنیہ پرانیونکو پریرنے والا اور
خلائق کو راہ راست پر رکھے اور ہر ایک کو
جزا اعمال پہنچاوے شریمان
شوبھا والا ہی نیایو صداقت کا جاننے والا
یعنی صاحب عدل ہی نیتا سب جگت کو ہرنے
والا ہی سمیرنہ سبکو بایو روپ ہوکر ہلانے
والا یعنی ہوشیار کرنے والا ہی بصورت نفس
سہسر موردھا ہزاروں ہیں سر
جسکے اور ہزار مراد کثرت سے ہی وشواتما
سب جگت کا آتما یعنی جان عالم ہی
سہسراکش ہزاروں ہیں چشم جسکے
یعنی بے انتہا نگاہیں رکھتا ہی سہسر
پات ہزاروں پاؤں ہیں جسکے یعنی ہر جگہ
جا سکتا ہی ایک ہی وقت میں۔

۴۳
اشلوک
آورتنو نبرتاتما سمرتہ سم
پرمردنہ۔ اہہ سمبرتکو بہنیر نلو
دھرنی دھرہ۔

नारायण रूप है और यह कि स-
व विद्याओं का सिखाने वाला औ-
र पैदा करने वाला है **गुरुत-**
मो बड़ा गुरू अर्थात् ब्रह्मादि-
को ब्रह्म विद्या का सिखानेवाला
है **धाम** ज्योति स्वरूप प्रका-
श रूप है और यह कि सब केम-
नोर्थों का धाम है **सत्यः** आशि-
र्यों का आसरा है सच्चा है **सत्य**
पराक्रमः सत्य है पराक्रम
जिसका **निमिषो** योग और
निद्रा में अपने नेत्र को पहुंचे
अर्थात् महा माया और सोने
जागने में बराबर है **अनि-**
मिषः नन्द बोध रूप है और
भी निहंग रूप है **स्रग्वी** वैजयं-
ती माला वाला है **वाचस्पति-**
रुदारधीः सारी विद्याओं का
पति और उदार है बुद्धि जिसकी
और यह कि बुद्धि उसकी सब
भेदों के जानने वाली है ॥ ५१ ॥

मू॰ अग्रणी ग्रामणीः श्री
मान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सह-
स्राक्षः सहस्रपात् ॥ ५२ ॥

نارائن روپ ہی اور یہ کہ آفرینندہ وآموزندہ
جملہ علوم کا ہی **گرتمو** بڑا گرو یعنی برہما
وغیرہ کو برہم بدیا کا سکھانے والا ہی
دہام جوت سروپ پرکاش روپ
یعنی محض شعلۂ نور ہی اور یہ کہ سب کے
مطالب کا مکان وہی ہی **ستیہ** مرادوں
کا آسرا ہی اور راست باز ہی **ستیہ**
پراکرمہ سچا ہی پراکرم جسکا **نمکھو** جوگ
نندرا ہی اپنی آنکھوں کو بند کرے یعنی مہامایا
اور یہ کہ خواب و بیداری میں یکسان ہی
انمکہ نند بودھ روپ ہی اور یہ کہ بیصورت
نہنگ ہی **سرگوی** بیجنیتی مالا والا ہی اور
یہ کہ خلاصہ جمیع علم کا اپنے گلو میں رکھتا ہی
باچسپت رداردھی سب بدیاؤں کا
مالک ہی اور اُدار ہی بدہ جسکی اور یہ کہ عقل
اُسکی جاننے والی سب معانی کی ہی

اشلوک ۵۲

اگرنی گرامنی شرمان نیایو
نیتا سمیرنہ سہسر مورودھا
بشواتما سہسراکشہ سہسرپات

जिस की सर्व्वदृक् सब का देखने वाला है सिंहः सिंह है अर्थात् दै-त्य रूपी मृग का मारने वाला है सं-धाता कर्म्म फल करके पुरुषों को गति करने वाला और यह कि सृ-ष्टि को प्रकट किया है संधिमा-न् कर्म्म फल का देने वाला है और कर्म्म का फल भोगने वाला है-स्थिरः एक तरह पर स्थिर है अजो भक्त जनों के हृदय में आने वाला अर्थात् गुप्त प्रकार में आने वाला दुर्मर्षणः दुःख कर के संभालने योग्य है और यह कि कोई उसका सामना नहीं कर सक्ता है शास्ता पुरुषों को कर्म्म का बना-ने वाला विश्रुतात्मा विशेषता करके विख्यात है स्वरूप जिसका सुरारिहा देवताओं के शत्रु लोगों का मारने वाला है ॥ ५० ॥

मू॰ गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यसत्यपराक्रमः। नि-मिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाच-स्पतिरुदारधीः ॥ ५१ ॥

टी॰ गुरुः तप का उपदेश करने वाला

جسکے سرب درک سب کا دیکھنے والا یعنی سب باتوں کو دیکھتا ہے سنگھہ دیت روپی مرگ کا مارنیوالا ہے سندھاتا کرم پھل کرکے پرشون کو گت دینے والا ہے اور یہ کہ پردۂ عدم سے عالم کو منصۂ شہود لایا ہے سندھمان کرم پھل کا بھوگنے والا اور دینیوالا نتیجہ اعمال کا ہے استھرہ ایک طور پر قائم ہے اجو بھگتوں کے ہردے میں یعنی ظاہر و باطن میں آنیوالا ہے درمرکھنہ دکھ کرکے سنبھالنے جوگ ہے اور یہ کہ شیطان مقابلہ اسکا نہیں کرسکتا ہے شاستا پرشون کا کرم بنانے والا ہے وشرتاتما خصوصیت کے ساتھ ظاہر ہے سروپ جسکا - سراریہا دیوتاؤن کے دشمنون کا مارنیوالا ہے

اشلوک ۵۱

گرزگرتمو دھام ستیہ ستیہ پراکرمہ - نمکھو نمکھہ سرگوی باچسپت رواردھی

ٹیکا ۵۱

گرڑہ تپ کا اپدیش کرنے والا

टी॰ **मरीचिः** किरणों वाला सूर्य्य रूप है अर्थात् सब प्रकाश उससे प्रकाशित हैं **दमनो** दुष्टों को अपने धर्म्म पर लाने वाला अर्थात् कुकर्म्मी मनुष्यों को कुकर्म्म का दण्ड देता है **हंसः** संसार के बन्धन को दूर करने वाला और यह कि काल रूप हो कर सृष्टि को संहार करता है **सुपर्णो** सुन्दर हैं पंख जिसके अर्थात् गरुड़ रूप **भुजगोत्तमः** सर्प्पों में श्रेष्ठ जैसे शेष नाग सब सर्प्पों में श्रेष्ठ है **हिरण्यनाभः** सुन्दर है नाभि जिसकी **सुतपाः** सुन्दर है तप जिसका अर्थात् बद्री नाथ **पद्मनाभः** कमल है नाभि में जिसके **प्रजापतिः** सब सृष्टि ब्रह्मा आदि का मालिक है ॥ ३९ ॥

मू॰ अमृत्युः सर्व्वदृक् सिंहः संधाता संधिमान्स्थिरः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ।४०।

टी॰ अमृत्युः नहीं है मृत्यु

۳۹
ٹیکا۔ مریچہ کرنوں والا یعنی سورج روپ ہی یعنی سب روشنی اُس سے روشن ہیں دمنو دشٹونکو اپنے دھرم پر لانیوالا یعنی بدوں کو ساتھ سزاے اعمال بد کے پہنچاتا ہی ہنسہ سنسار کے بندھن کو دور کرنیوالا ہی اور یہ کہ بصورت قضا ہوکر موجودات عالم کو نیست و نابود کرتا ہی سپرنو سندر ہیں پنکھ یعنی بازو جسکے گرڑ روپ کہ وقت پرواز کے ساتھ خوبی اور زیبائی کے نظر آتا ہی بھجگوتمہ سانپوں میں سریشٹھ یعنی افضل جیسے شیش ناگ یعنی بیچ خلقت اژدہا و ماران اُس سے بڑھکر اور کوئی نہیں ہی ہرنیہ نابھہ سندر ہی نابھ جسکی ستپاہ سندر ہی تپ جسکا یعنی بدری ناتھ پدمنابھہ کمل کی ایسی ہی نابھ جسکی۔ پرجاپتہ برہمادکونکا پت یعنی مالک موجودات ہی

اشلوک
۴۰
امرتیہ سرب درک سنگھہ سندھاتا سندھمان استھرہ۔ اجو درمرکھنہ شاستا بشرتاتما سرارہا۔

ٹیکا۔ امرتیہ نہیں ہی مرت

मू॰ महेष्वासो महीभर्त्ता श्रीनिवासः सतांगतिः अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः। ३८।	اشلوک ۳۸ مہیشواسو مہی بھرتا شری نواس ستانگتہ - انردھہ سرانند و گوبندو گوبدانانک پتہ
टी॰ महेष्वासो बड़ा है धनुष जिसका अर्थात संसार की पालना और उत्पत्ति और नाश करता है महीभर्त्ता पृथ्वी का पति है श्रीनिवासः लक्ष्मी बसै है जिसके सतांगतिः सत पुरुषों की गति है अनिरुद्धः नहीं है किसी शत्रु से रुकने वाला सुरानन्दो देवताओं का आनन्द देने वाला है गोविन्दो रसातल लोक से पृथ्वी का लाने वाला है गोविदांपतिः वेद के जानने वालों का पति है ॥ ३८ ॥	ٹیکا ۳۸ مہیشواسو بڑا ہی دھنکھ جسکا یعنی اوسکی پرورش و فنا سے عالم کرتا ہے - مہی بھرتا پرتھوی کا پت یعنی مالک ہی شری نواس لچھمی بستی ہی جسکے ستانگتہ اچھے پرشون کی گت ہی انردھہ نہین ہی کسی دشمن سے رکنے والا - سرانند و دیوتاون کا انند دینے والا ہی گوبندو رسا تل یعنی پاتال لوک سے پرتھوی کا لانے والا ہی گوبدانانک پتہ بید کے جاننے والونکا پت ہی یعنی دانندہ کلام الٰہی -
मू॰ मरीचिर्दमनोहंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥ ३९ ॥	اشلوک ۳۹ مریچر دمنو ہنسہ سپرنو بھجگوتم ہرنیہ نابھہ ستپاہ پدم نابھہ پرجاپتہ -

आनन्द जिसको और यह कि बल और सामर्थ्य उसके बराबर किसी को नहीं है महाबलः बड़ा है बल जिसका अर्थात् उससे अधिक कोई बली नहीं है ॥ ३६ ॥

मू॰ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः । अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ ३७ ॥

टी॰ महाबुद्धिः बड़ी है बुद्धि जिसकी महावीर्यः बहुत है पराक्रम जिसका महाशक्तिः बड़ी है शक्ति जिसकी महाद्युतिः बड़ी है आभा जिसकी अनिर्देश्यवपुः लोकों से अद्भुत है रूप जिसका अर्थात् कोई उसका पता नहीं बतला सकता है और न कोई उसको देख सकता है श्रीमान् लक्ष्मी वाला है अमेयात्मा अप्रमाण है बुद्धि जिसकी अर्थात् कोई उसकी बुद्धि से नहीं पासकता है महाद्रिधृक् मन्दराचल पर्वत का धारण करने वाला है ॥

آنند جسکو اور یہ کہ قوت اور زور اسکے برابر کسیکو نہیں ہے مہابل بڑا ہے بل جسکا یعنی اس سے زیادہ کوئی قوت نہیں رکھتا ہے

اشلوک

۳۷

مہا بدھر مہا ویریو مہا شکتر مہا دیوتہ۔ انردیشیہ بپو شری مان میے یاتما مہادر دھرک ۔

بہاشا

۳۷

مہا بدھ بڑی ہے بدھ جسکی یعنی سب ارباب دانش سے فائق تر ہے مہا ویریہ بہت ہی پراکرم جسکا مہا شکتہ بڑی ہے شکت جسکی یعنی قدرت بے انتہا رکھتا ہے مہا دیوتہ بڑی ہے شوبہا جسکی انردیشیہ بپو لوگوں سے عجیب ہے روپ جسکا یعنی اسکو کوئی بتا نہیں سکتا اور نہ دیکھ سکتا ہے شری مان لچھمی والا یعنی دولت والا ہے امیے آتما بے انتہا ہے بدھ جسکی یعنی کوئی اسکو عقل سے نہیں پاسکتا ہے مہادر دھرک مندراچل وغیرہ بڑے بڑے پربتوں کا دھارن کرنے والا ہے

कीउलंघन करने वाला संग्रहः संहार करने वाला सर्गो संसार रूप अर्थात् सब का पैदा करने वाला धृतात्मा जन्म रहित नियमो प्रजा को अपने धर्म में लगाने वाला यमः समाप्त करने वाला है ॥ २५॥

मू॰ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः । अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ २६॥

टी॰ वेद्यः जिन को संसार में मुक्ति की इच्छा है उन का जानने वाला और मुक्ति का देने वाला वैद्यः सब अङ्गों और चारों वेदों का जानने वाला सदायोगी सदा है योग जिसके वीरहा दैत्यों को मारने वाला माधवो ब्रह्म वेद का पति मधुः आनन्द दायक मधु की तरह अतीन्द्रियो इन्द्रियों से रहित है महामायो बड़ी है माया जिसकी महोत्साहो बड़ा है

کو اُلنگھن کرنے والا ہی سنگرہ پرلے کال
میں سنگھار کرنیوالا ہی سرگو سنسار روپ یعنی
آفرینندہ خلائق ہی دھرتاتما جنم رہت
داپنا سمی ہی نیمو پرجا کو اپنے دھرم میں
لگانے والا ہی یمہ آخر کرنیوالا ہی

اشلوک ۳۶

ویدیو ویدیہ سداجوگی ویرہا
مادھوو مدھہ۔ اتیندریو مہا
مایو مہوتسا ہو مہابلہ

اشلوک ۳۶

ویدیو جنکو سنسار سے مکت ہوجانیکی اچھا
ہی اُنکا جاننے والا اور مکت کا دینے والا ہی
ویدیہ سب انگوں سمیت چار وید کا جاننے
والا ہی سداجوگی سدا ہی جوگ جس کے
ویرہا دیتیون کا مارنے والا یعنی کشندہ
عفریتان ہی مادھو و برہم بید کا پت
ہی مدھہ آنند روپ ہی یعنی مانند شہد
کے حلاوت بخش ہی اتیندریو اندریوں سے
رہت یعنی حواس خمسہ نہیں رکھتا ہی مہا مایو
بڑی ہی مایا جسکی یعنی اسکی مایا بہت
[illegible] مہوتسا ہو بڑا ہے

विश्वयोनिः जगत् की योनि है अर्थात् उत्पत्तिका स्थान है पुनर्वसुः वारम्वार जीवों में वसै अर्थात् देह में रहै ॥ ३४ ॥

मू· उपेन्द्रो वामनः प्रांशु-रमोघः शुचिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहस्सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥३५॥

टी· उपेन्द्रो गोलोक में रहनेवाला है और इन्द्र के छोटे भाई राजा वलि को भी कहते हैं कि जिनके वास्ते वामन अवतार धारण किया वामनः वामन रूप होकर राजा वलि के मद को दूर किया प्रांशुः सवसे ऊंचा है और जो कोई तीनों लोक को तीन पैर से नापै उसको भी प्रांशु कहते हैं अमोघः नहीं है वे अर्थ चेष्टा जिसकी अर्थात् जिसतरह पर जो कोई उसको ध्यान करता है उसतरह पर वह उसको पाता है शुचिः पापियों को पवित्र करनेवाला है ऊर्जितः अर्थ जो बलवान है अतीन्द्रः इन्द्र

بشنو جونہ تمام دنیا کا محل آفرینش ہے پنربسہ بار بار جیووں مین بسی یعنی شریر مین آتا ہے وہ ذات ہے کہ محل آفرینش تمام عالم کا ہے

اشلوک ۳۵

اپیندرو بامنہ پرانشر موگھہ شچ رورجتہ - اتیندرہ سنگرہ سسرگو دھرتاتما نیمو یمہ -

ٹیکا ۳۵

اپیندر وگولوک مین رہنے والا اور اندر کے چھوٹے بھائی یعنی راجا بل کو بھی کہتے ہین جنکے واسطے باون اوتار دھارن کیا بامنہ باون اوتار رکھکر راجا بل کا ابھمان دور کیا پرانشہ سب سے اونچا ہے اور یہ کہ جو کوئی تین لوک کو تین قدم کر کے ناپ لے اسکو بھی پرانش کہتے ہین اموگھہ نہین ہے بے ارتھ چیشٹا جسکی یعنی جو کوئی جسطرح اسکا دھیان کرتا ہے وہ اسکو اسیطرح پاتا ہے شچہ پاپیون کو پوتر کرنے والا ہے اورجتہ بل مین [illegible] صاحب قوت ہے اتیندرہ اندر

दाँत धारण किये हैं चतुर्भुजः
चार हैं भुजा जिनके ॥ ३३ ॥
मू. भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता
सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता वि-
श्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ ३४ ॥
टी. भ्राजिष्णुः प्रकाश चैतन्य
रूप है भोजनं माया रूपी भग-
वान अर्थात् सुख सम्पत्ति रूप
है भोक्ता माया को जीव रूप क-
रके भोगे अर्थात् जीव रूप होक-
र सब सुख भोक्ता है इस से उस
का नाम भोजन और भोक्ता र-
क्खा गया सहिष्णुः हिरण्यक-
श्यप ऐसे दैत्यों का मारने वाला
जगदादिजः जगत के आ-
दि में पैदा हो [illegible]
र्भ होकर सृष्टि रचता है अन-
घो पाप रहित है अर्थात् कोई
बुराई नहीं रखता है विजयो
अपने ज्ञान से ऐश्वर्य्य करके
सारे जगत का संहार करने वा-
ला सब को जीते अर्थात्
सब संसार उससे सुख पाता है

دانت کلاں بصورت شمشیر رکھتا ہے
چترّ بھجہ چار ہیں ہاتھ جسکے -
اشلوک
۳۴
بھراجشنر بھوجنگ بھوکتا
سہشنر جگدادجہ - انگھو بجیو
جیتا بسوجونہ پنر بسہ -
ٹیکا
۳۴
بھراجشنہ پرکاش چیتن روپ ہے -
بھوجنگ مایا روپی بھگوان یعنی اسباب
عیش و لذت کا ہے بھوکتا مایا کو جیو روپ
ہو کر بھوگ کرے چونکہ بصورت جان ہو کر
لذت و عیش حاصل کرتا ہے اسواسطے نام
اسکا بھوجن بھوکتا رکھا گیا سہشنہ
ہرنیکشپ ایسے دیتوں کو مارنیوالا ہے
جگدادجہ جگت کے آدمین پیدا ہوا یعنی
بصورت ہرنیہ گربھ ہو کر آغاز عالم کا کرتا ہے
انگھو پاپ سے رہت ہے یعنی کوئی بدی نہیں
کرتا ہے بجیو اپنے گیان ایشور ج کرکے
جگت کو سنگھار کرتا ہے جیتا سب کو
جیتے یعنی تمام عالم اسکی ذات سے آرام پاتا
صفات سے آسائش وآرام پاتا ہے

विचार करने वाला अर्थात् भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों काल उसी में हैं कविः तीनों काल का जानने वाला है ॥ ३२ ॥

मू. लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्म्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः। ३३।

टी. लोकाध्यक्षः लोकों का मालिक है सुराध्यक्षः देवतों का स्वामी है धर्म्माध्यक्षः धर्मों का मालिक है कृताकृतः कारण कार्य्य रूप है चतुरात्मा चार आत्मा हैं जिनके अर्थात् चार गुण हैं पैदा करना १ पालना २ बनाये रखना ३ संहार करना ४ चतुर्व्यूहः चार हैं भुजा जिनके वासुदेव १ संकर्षण २ प्रद्युम्न ३ अनिरुद्ध ४ और भी यह कि ब्रह्मा विष्णु महेश हिरण्यगर्भ उसकी सृष्टि हैं चतुर्दंष्ट्रः चार है दाढ़ जिसके अर्थात् नरसिंह अवतार में चार

بچارنے والا یعنی اسکی ذات ماضی و حال و استقبال ہی کبہ تر کال کا جاننے والا یعنی سب کا ناظر ہی۔

اشلوک ۳۳

لوکادھیکشہ سرادھیکشو دھرما دھیکشہ کرتا کرتہ۔ چترآتما چترویوہش چترڈنگشٹرش چتربھجہ

ٹیکا ۳۳

لوکادھیکشہ لوکونکا مالک یعنی سب عالم باختیار اسکے ہی سرادھیکشو دیوتاؤنکا مالک ہی دھرمادھیکشہ دھرموں کا مالک ہی یعنی سب کی نیکی اور بدی وغیرہ کا دیکھنے والا ہے کرتا کرتہ کارج اور کارن کا روپ ہی چترآتما چار ہیں آتما جسکے یعنی چار صفت ہیں جسکے یعنی پیدا کرنا۔ پالنا۔ قائم رکھنا۔ نابود کرنا چترویوہہ چار ہیں بھاگ جسکے باسدیو۔ سنکرکھن۔ پردمن اور انردھ اور یہ کہ برھما بشن مہیش ہرنیہ گربھ بھی اسکی خلقت ہیں چترڈنگشٹرہ چار ہیں داڑھ جسکے یعنی نرسنگھ اوتار میں چار

स्थिर है अर्थात् सदा एक रस है
वरारोहो श्रेष्ठ है सवारी जिस
की शेषं और यह कि जो कोई
उसमें लय होजाय फिर संसार
में न आवे महातपाः बड़ा है त
प जिसका ॥ ३१ ॥

मू. सर्व्वगः सर्व्वविद्भानुर्वि
ष्वक्सेनो जनार्द्दनः । वे
दो वेदविदव्यंगो वेदाङ्गो
वेदवित्कविः ॥ ३२ ॥

टी. सर्व्वगः सब में प्राप्त है स
ब जगह पहुंचता है कोई जग
ह उस से खाली नहीं है सर्व्व
विद्भानुः सब को जाने और प्र
काश रूप है विष्वक्सेनो स
ब तरफ है सेना जिसकी जना
र्द्दनः दुष्ट जीवों को पीड़ा देने
वाला और भक्तों की मनोकाम
ना पूर्ण करने वाला है वेदो आ
त्मा को जो दिखावे और वेद को
जानने वाला वेदविद् वेद का
जानने वाला व्यंगो ज्ञान से पू
र्ण है वेदाङ्गो वेद है अ
ङ्ग जिस का वेदवित वेद का

استھر ہی یعنی ہمیشہ یکسان ہی برارُہو
اچھی ہی سواری جسکی شیش اور یہ کہ جو کوئی
اسمین واصل ہوا پھر عالم ہین نہ آیا مہا
تپاہ نہایت ہی تپ جسکا یہ وہ ذات ہی کہ
تمام عالم مین مستغرق ہو کر لذت سبکی لیتا ہی

اشلوک ۲۲

سرب گہ سرب بدبھانر بشوک
سینو جناردن ۔ بید و بید بد
بینگو بیدانگو بیدیت کبہ ۔

ٹیکا ۲۲

سرب گہ سب مین جاتا ہی یہ وہ ذات
ہی کہ سب جگہ پہنچی ہی کوئی جگہ اس سے خالی
نہین ہی سرب بدبھانر سبکو جانتا ہی
اور پرکاش روپ یعنی صاحب نور و ظہور
ہی بشوک سینو سب طرف ہی سینا
یعنی فوج جسکی اور یہ کہ شیطان اس سے
بھاگتے ہین جنار دنہ دشٹ جیوون کو
دکہہ دینے والا اور بھگتون کو سب آرزو کا
پورا کرنیوالا ہی بیدو آتما کا دکھانیوالا اور بید
کا جاننے والا ہی بید بد بید کا جاننیوالا بینگو
گیان سے پورن ہی بیدانگو بید ہی انگ جسکا بیدبد بید کا

अविनाशी है अमोघः जिसने जो इच्छा की उसकी वह इच्छा पूरण की अर्थात् किसी को निराश और बिमुख नहीं रखता है पुण्डरीकाक्षो कमल ऐसे नेत्र हैं जिसके वृषकर्मा वृषाकृतिः धर्म्म है कर्म्म जिसका और धर्म्म के अर्थ है आकार जिसका ॥ ३०॥

मू· रुद्रो बहुशिरो बभ्रुर्विश्वयोनिश्शुचिश्रवाः। अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ ३१ ॥

टी· रुद्रो संहार काल में सब को रुलाने वाले बहुशिरो बहुत हैं शिर जिसके बभ्रुः लोगों को तोषण करनेवाला और प्रीति करनेवाला है विश्वयोनिः जगत् की योनि अर्थात् जगत् उसी से पैदा है शुचिश्रवाः पवित्र करनेवाला है अर्थात् उसका नाम लेने से सब पाप दूर होजाते हैं अमृतः बुढ़ापा और नाश से रहित है शाश्वतः स्थाणुः नित्य है

بے زوال ہی امُوگھہ جسنے جو اچھا کی اسکی وہ اچھا پورن کی یعنی کسیکو محروم نہیں رکھتا پُنڈری کاکشو کمل کے ایسے ہیں نین جسکے برکھو کرما برکھاکرتہ دھرم ہی کرم جسکا اور دھرم کے واسطے ہی ظہور جسکا —

اشلوک

٣١
رُدرو بہہ شِرو ببھرُ بِشُو جونہ شُچ شروا — امرتہ شاشوتہ استھانُو براروہو مہاتپاہ —

ٹیکا

٣١
رُدرو سنگھار کال میں سب جا کو رلادے وہ ذات ہی کہ وقت قیامت کے سبکو فنا کردے بہہ شرو بہت ہیں سر جسکے ببھرو لوگوں کا پالنے والا اور عزیز رکھنے والا اور قائم و سلامت رکھنے والا ہی بشو جونہ جگت کی جون ہی یعنی مخرج پیدائش و محل آفرینش تمام عالموں و موجودات کا وہی ہی شُچ شروا ہو پوتر یعنی پاک کرنے والا ہی یعنی اسکا نام لینا سب گناہوں سے پاک کردیتا ہی امرتہ بڑھاپا اور زوال نہیں رکھتا ہی شاشوتہ استھانُو نتّ ہی

वृषाकपि कामना का देने वा-
ला है और दुख का हरने वाला
अमेयात्मा और बेप्रमाण है
आत्मास्वरूप जिसका सर्व्व
योगविनिःसृतः सब योग उससे
पैदा हुवे हैं और वह तत्त्व है स-
ब विद्याओं का और सब विद्या
उस से उत्पन्न हुई हैं ॥ २९ ॥

मू॰ वसुर्वसुमनाः सत्यः स-
मात्मा संमितः समः । अ-
मोघः पुण्डरीकाक्षो वृष-
कर्म्मा वृषाकृतिः ॥ ३० ॥

टी॰ वसुः सब्बों में वास करता है
वसुमनाः वसु में मन है जिस
का और यह कि मन उसका उस
के वश्य है सत्यः पञ्चतत्त्व अ-
र्थात् अग्नि वायु जल आकाश
पृथ्वी में होने वाला और यह कि
वह सत्य है समात्मा राग और
द्वेष से रहित है अर्थात् भले बुरे
का भय नहीं रखता है संमितः
जिसके समान दूसरा नहीं है स-
मः तीनों काल में एक रूप है अ-
र्थात् सब काल में निर्विघ्न और

برکھا کپیہ کامنا کا دینے والا اور دکھ
کا دور کرنے والا ہی اپرمے یاتما بے پرمان
ہی آتما سروپ ہے جسکا یعنی صورت معنی سے
اُسکو کوئی قرار نہیں دے سکتا سرب
جگ پرکاشک شاستر تمام جگ اُس سے پیدا
ہوئے ہیں اور خلاصہ جمیع علوم کا ہی اور
سب علم اُس سے پیدا ہوئے ہیں -

اشلوک

بسر بسومنا ستیہ سماتما سمتہ
سمہ - اموگھ پنڈریکاکش
برکھ کرمہ برکھا کرتہ -

ٹیکا

بسو بسومناہ سب میں باس کرتا ہی
پرتھوی میں ہی من جسکا اور یہ کہ من جسکا اسکے بس
میں ہی ستیہ پنچ تتو میں ہونے والا
یعنی آکاش بایو جل اگن پرتھوی میں ہر
وقت ہر جگہ موجود ہی اور دراصل ہی سماتما
راگ اور دویش سے رہت یعنی شخص و دوست
علاوہ ہی سمتہ جسکے برابر دوسرا نہیں یعنی
پاک ہی سمہ تینوں کال میں ایک
رس ہی یعنی سب وقت میں بے علت اور

प्रजाभवः प्रजा को उत्पन्न करने वाला है अहः प्रकाश रूप है सम्वत्सरो सम्वत स्वरूप है अर्थात समय रूप होकर वर्त्तमान है व्यालः दुष्टों के वश में नहीं आने वाला है और यह कि वह ऐसा अगम्य है कि किसी के वश्य नहीं हो सक्का प्रत्ययः ज्ञान रूप है सर्व्व दर्शीनः सब को देखने वाला है २८

मू॰ अजः सर्व्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्व्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्व्वयोगविनिःसृतः॥ २९॥

टी॰ अजः जन्म रहित है अर्थात् कभी पैदा नहीं हुआ और न होता है और न होगा सर्व्वेश्वरः सब का ईश्वर अर्थात् मालिक है सिद्धः सदा सत भाव अर्थात् एक तरह पर रहता है सिद्धिः आनन्द रूप फल मोक्ष का देनेवाला है सर्व्वादिरच्युतः सबका आदि कारण और नाशरहित है

پرجا بھوہ خلقت کا پیدا کرنیوالا ہے آتمہ پرکاش روپ ہے سمبت سرو سمبت سروپ ہے یعنی بصورت زمانہ ہوکر قائم ہے بیالہ دشمنوں کے قابو مین نہین آنیوالا ہے اور یہ کہ وہ ذات نہایت لطیف ہے گرفت نہین ہوسکتی ہے پرتیہ یہ گیان روپ ہے یعنی بذات خود عقل خالص ہے سربدرشنہ سب کا دیکھنے والا ہے یعنی دانا سے نہان و آشکارا ہے —

اشلوک

۲۹

اجہ سربیشورہ سدّھہ سدّھہ
سربادرچتوتہ ۔ برکھاکپ رمے
یاتما سربجوگ بنسرتہ —

ٹیکا

۲۹

اجہ یعنی کبھی پیدا نہیں ہوا اور نہوتا ہے اور نہوگا سربیشورہ سب کا ایشور ہے یعنی تمام حاکموں کا حاکم و بادشاہوں کا بادشاہ ہے وہ ذات واحد ہے سدّھہ ہمیشہ ایک صورت نیک پر رہتا ہے سدّھہ آنند روپ پھل موکش کا دینے والا ہے سربادرچتو سب کا آدکارن اور ناش سے رہت ہے

कृतज्ञः जो कृत भक्त जन क-
रते हैं उसका जान्ने वाला है कृ
तिः करै है अर्थात् तीनों लोक
का काम करने वाला है आत्म-
वान् अपने स्वरूप का आधा
र है अर्थात् उसका कोई घर न
हीं है अपनी प्रतिष्ठा में आप
रहता है ॥ २७ ॥

मू॰ सुरेशः शरणं शर्म वि
श्वरेताः प्रजाभवः । अ
हः संवत्सरो व्यालः प्र
त्ययः सर्वदर्शनः ॥ २८ ॥

टी॰ सुरेशः देवताओं के ईश
अर्थात् मालिक है शरणं डर हु-
वे और अपनी शरण में आये हुवे
जीवों की रक्षा करता है जैसे कि
गज की रक्षा करके ग्राह से छुड़ा
या और द्रौपदी की बीच सभा के
लाज रक्खी और बिभीषण को
लंका का राज्य दिया अर्थात् जो
शरण आता है उसका दुःख दूर क
र देता है शर्म सुखरूप है विश्व
रेताः जगत् है बीज उसका अ
र्थात् संसार उसी से उत्पन्न है

کرتگیہ جو کچھ بھگت لوگ کرتے ہیں اسکو
جانتا ہے یعنی دانا ہے اعمال وافعال مردا
پاک دینکو کاران کا ہے کرتہ کرتا ہے یعنی
کرنے والا ہر کام کا وہی ہے آتم وان
اپنے سوروپ کا آپ ہی آدھار ہے یعنی اسکا
دوسرا مکان نہیں ہے اپنی بزرگی میں رہتا ہے

اشلوک

۲۸
سریشہ شرنگ شرم بشو ریتاہ
پرجا بھوہ ۔ اہہ سمبت سرو
بیالہ پرتیہ سرب درشنہ ۔

ٹیکا

۲۸
سریشہ دیوتاؤں کا ایش یعنی مالک ہے
شرنگ ڈرے ہوئے اور اپنی شرن
یعنی پناہ میں آئے ہوؤں کی رچھیا کرتا
ہے جیسے گج یعنی ہاتھی کی رچھیا کرکے گراہ
سے چھڑایا اور دروپدی کی بیچ سبھا
کے لاج رکھ لی اور ببھیکھن کو لنکا کا راج
دیا یعنی دور کرنیوالا درد دردمندوں کا ہے
شرم سکھ روپ ہے یعنی محض سرور ہے
بشوریتاہ جگت کا بیج یعنی تخم جس کا
یعنی جو کچھ دنیا میں ہے اسی سے پیدا ہے

ब्रह्माने वहाँ सृष्टि रची इसी से
कुरुक्षेत्र का स्थान पवित्र और
श्रेष्ठ समझा जाता है ॥ २६ ॥

मू. ईश्वरो विक्रमी ध-
न्वी मेधावी विक्रमः क्रमः
अनुत्तमो दुराधर्षः कृत-
ज्ञः कृतिरात्मवान् ।२७।

टी. ईश्वरो सब कार्य्य करने
वाला है विक्रमी शूरवीर है
धन्वी धनुषधारी है जैसे रामच-
न्द्रावतार मेधावी बुद्धि वाला
जो सुने वह भूलता नहीं सब का
जानने वाला और याद रखने वा-
ला है विक्रमः सारे जगत को उ-
लंघन करै जैसे वामन रूप और
यह कि सब जीवों को चलने फिर-
ने की शक्ति देता है क्रमः चरमू-
र्त्ति चलनेवाला और चलने की श-
क्ति उत्पन्न करने वाला है अनु-
त्तमो नहीं है उत्तम उससे को-
ई दुराधर्षः और कोई उस
को डरा नहीं सक्ता और उसप
र सबल नहीं हो सक्ता है —

برھما جی نے وہاں پر سرشٹی کو رچا اور اسی سے
کُرکھیتر کی جگہ بہت متبرک و پاک شمار کیجاتی ہے

اشلوک
۲۷
ایشورو بکرمی دھنوی میدھاوی
بکرمہ کرمہ - انتمو دُرادھرکھہ
کرتگیہ کرت راتموان -

ٹیکا
۲۷
ایشورو سب کام کرنیوالا یعنی حاکم
حقیقی و قادر مطلق ہے بکرمی شوبیر ہے
یعنی شجاع اعظم و مرتبہ بلند ہے دھنوی
دھنکھ دھاری ہے جیسے شری رام چندر جی
میدھاوی بدھ والا ہے جو کچھ سنتا
ہے اسکو کبھی بھولتا نہیں ہے وہ ذات ہے
کہ حافظہ و دریافت بدرجۂ کامل رکھتا ہے
بکرمہ تمام جہان کو طے کر جاے جیسے باون
اوتار اور یہ کہ قوت رفتار جاندارونکو عطا
کرتا ہے کرمہ چلنے والا اور یہ کہ قوت رفتار کا
پیدا کرنیوالا ہے انتمو نہیں ہے اتم اس سے
کوئی یعنی اُسکے سواے اور کوئی بزرگ نہیں ہے
دُرادھرکھہ ڈر جانے کے قابل نہیں یعنی
کوئی اسکو ڈرا نہیں سکتا اور نہ اسپر غالب ہو سکتا ہے

कहते हैं कि जब सब पृथ्वी पर पा
नी ही पानी था और कुछ न था तब
उन्हों ने विस्नु भगवान रूप धारण
करके पानी में आराम किया और
मधुकैटभ दैत्य विस्नु भगवान के का
न के मैल से पैदा हुवे और ब्रह्मा वि
स्नु भगवान के कमल नाभि से पै
दा हुवे तब मधुकैटभ ने ब्रह्मा के मा
रने का इरादा किया उस समय वि
स्नु भगवान् पल्थी मारे हुवे पानी
से बाहर प्रकट हुवे और पानी पर
पल्थी मारे हुवे मधु कैटभ को मा
रा और वह जगह कुरुक्षेत्र की है
कि जो ४८ कोस में पल्थी की सूर
त है और कहते हैं कि उन्हीं दैत्यों
की चरबी जिसको संस्कृत में मेद
कहते हैं पानी पर बिछाई गई
इसीवास्ते इस पृथ्वी का नाम मेदि
नी है जब से राजा पृथु ने इस पृथ्वी
को लेकर साफ़ और दुरुस्त किया
तब से इस मेदिनी का नाम पृथ्वी
हुआ राजा पृथु चौबीस अवतारों
में गिने जाते हैं मार्कण्डेय पुराण
में इस पृथ्वी का हाल विस्तार
पूर्वक लिखा है और इसी वास्ते

کہتے ہین کہ جب سب زمین پر پانی ہی پانی
تھا سواے پانی کے اور کچھ نہ تھا تب
اُنھون نے بصورت بشن بھگوان ظاہر ہو
درمیان پانی کے آرام کیا اور مدھو کیٹبھ
نام دو راچھس بشن بھگوان کے کان کے
میل سے پیدا ہوئے اور برہما جی جو بھگوان
کے کنول نابھ سے پیدا ہوئے تھے اُنکے مارنیکا
قصد اُن دونون راچھسون نے کیا اُسوقت
بشن بھگوان پلتھی مارے ہوئے پانی سے
باہر ظاہر ہوئے اور اپنی جانگھ پر مدھو
اور کیٹبھ دیتونکو مارا چنانچہ وہ جگہ کُرکھیتر کی
ہے کہ جو ۴۸ کوس مین بصورت پلتھی قرار دی
گئی ہے اور کہتے ہین کہ اُنھین دونون دیتون
کی چربی جسکو سنسکرت مین میدنی کہتے
ہین پانی پر بچھائی گئی اسوجہ سے پرتھوی
کا نام میدنی ہوا اور راجا پرتھو کے سبب
سے کہ اُنکو چوبیس اوتارون مین شمار
کرتے ہین اس میدنی کا نام پرتھوی ہوا
کیونکہ اُنھون نے اسکو صاف و درست کیا
تھا مفصل حال اسکا مارکنڈے پران سے
بخوبی ظاہر ہوسکتا ہے اور اسی واسطے

का धाम है अर्थात् उत्तम मध्यम
लघु सब उसमें हैं पवित्रं मन्त्र
रूप पवित्र करने वाला है मङ्ग-
लं परं बड़े आनन्द का देनेवाला है ॥ २५

मू. ईशानः प्राणदः प्राणो
ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माध
वो मधुसूदनः ॥ २६ ॥

टी. ईशानः सब को अपने काम
में प्रेरनेवाला अर्थात् सूर्य्य अग्नि
वायु सब को अपने काम में लगाने
वाला प्राणदः प्राण का देने वाला
प्राणो प्राण रूप है ज्येष्ठः सब से ब-
ड़ा अर्थात् सब से पहिले है श्रेष्ठः अ-
च्छा है प्रजापतिः प्रजा का मा-
लिक है अर्थात् ब्रह्मा रूप है हिर-
ण्यगर्भो ब्रह्मानन्द का बीज है
भूगर्भो पृथ्वी का अन्तर्यामी
अर्थात् सब सृष्टि उससे उत्पन्न हुई
है माधवो लक्ष्मी पति हैं और मा
धव उसको भी कहते हैं कि ज्ञान ध्या
न से उसको जाने पहिचाने मधुसू-
दनः मधु कैटभ दैत्य का मारने वा
ला है कूर्म अवतार रूप करके व-
धा से मधुसूदन नाम रक्खा गया

سکا دھام ہی یعنی اعلیٰ و ادنیٰ و اوسط سب
اُسمین ہین پوتر تک منتر روپ ہو کر سب کو
پوتر کر دیتا ہی منگلنگ پرنگ بڑے
آنند کا دینے والا اور حشمت کا عطا کرنیوالا ہے ۲۵

اشلوک - ایشانہ پران دہ پرانو
جیشٹھہ سریشٹھہ پرجا پتہ - ہرنیہ
گربھو بھوگربھو مادھوو مدھ سودنہ

ٹیکا - ایشانہ سبکو اپنے کام مین لگانے
والا یعنی سورج آگ ہوا وغیرہ سبکو اپنے کام
مین مصروف کرنیوالا ہی پران دہ جان بخشنے
والا ہی پرانو پران یعنی روح وہی ہی جیشٹھہ
بڑا ہی اوّل ہی سریشٹھہ اچھا اور افضل ہی پرجا
پتہ پرجا کا مالک یعنی برہما روپ ہی ہرنیہ
گربھو برہمانند کا بیج یعنی دینا ہی بھوگربھو
پرتھوی کا انترجامی ہی یعنی سب مخلوقات
اُس سے پیدا ہوئی ہی مادھوو لچھمی جی
کا پت ہی اور مادھو اُسکو بھی کہتے ہین
کہ جو ساتھ تصور اور مشغولی کے اُسکو جانے
اور پہچانے مدھ سودنہ مدھ اور کیٹبھ
نام دو دیتیون کو شن اوتار دھارن کرکے مارا
اسوجہ سے مدھ سودن نام رکھا گیا -

मनुः सब कामों का जान्नेवाला है त्वष्टा प्रलयकाल में सबका नाश करनेवाला है स्थविष्ठः विराट रूप है स्थविरो ध्रुव रूप अर्थात् प्राचीन और स्थित है ध्रुवः नित्य अर्थात् सदा सर्व्वदा बना रहता है ॥ २४ ॥

मू॰ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलम्परं ॥ २५ ॥

टी॰ अग्राह्यः पकड़ने के योग्य नहीं अर्थात् हाथ से नहीं आ सक्ता है और न बुद्धि में समा सक्ता है शाश्वतः सदा सर्वदा हर समय वर्तमान है कृष्णो अपने भक्तों को नरक से खींच लेता है और कृष्ण नाम अलसी के फूल के रंग का है जो अति मनोहर होता है वैसा ही रंग श्री कृष्णजी का लोहिताक्षः लाल हैं नेत्र जिनके प्रतर्दनः संहारकाल में प्राणियों का हरने वाला प्रभूत बल तेज करके युक्त है त्रिककुब्धाम तीनों दिशा

یعنی پیدا کرنے والا برہما وغیرہ تمام مخلوقات کا ہی تشٹہ یعنی والاسب کا نام کا ہی ستھاوشٹہ پرلے کال میں سبکو ناش کرتا ہی استھوشٹہ براٹ روپ یعنی بزرگ تر سے بزرگ ہی استھویرو دھرو روپ یعنی قدیم و قائم ہی دھروہ یعنی ہمیشہ قائم ہی

اشلوک - اگراہیہ شاشوتو کرشنو لوہتاکشہ پرتردنہ - پربھوتس ترککبدھام پوترم منگلم پرم

اگراہیہ یعنی جو گہا نہیں یعنی ہاتھ میں نہیں آسکتا اور عقل و کلام میں بھی اسکی قدرت کو نہیں بیان کر سکتا شاشوتہ ہمیشہ و ہر وقت موجود ہی کرشنو اپنے بھگتوں کو نرک سے بچا لیتا ہی اور چونکہ کرشن نام السی کے پھول کے رنگ کا ہی جو کہ نہایت خوشنما ہوتا ہی ایسا ہی رنگ سری کرشن مہاراج کا تھا لوہتاکشہ لال ہیں آنکھیں جسکی پرتردنہ قیامت کے وقت سبکو نیست و نابود کر دیتا ہی پربھوت بل اور تیج سے سلطنت عظم رکھتا ہی ترککبدھام تینوں

जो अपने अपने कामों को कर रहे हैं उनको साधनेवाला धातुः सब कामों को धारण करने वाला उत्तमः अच्छा श्रेष्ठ और सब से बड़ा है ॥२३॥

मू. अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोमरप्रभुः । विश्वकर्म्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥२४॥

टी. अप्रमेयो नहीं है परमाण जिसका और कोई उसका भेद नहीं जान सक्ता और वह किसी के सदृश और समान नहीं कि उस उपमा के द्वारा उसको पहिचान सके इसवास्ते उसको अप्रमेय कहा हृषीकेशः इन्द्रियों का मालिक है अर्थात् सब इन्द्रियां उसी की पैदा की हुई हैं और वह उनको वश्य कर सक्ता है पद्मनाभो कमल है नाभ में जिसके अमरप्रभुः देवताओं के मालिक हैं विश्वकर्मा जगत् को रचने वाले हैं-

جو اپنے اپنے کاموں کو کر رہے ہیں انکو سادھنے والا یعنی بنانے والا ہی دھاتُ سب کاموں کو دھارن کرتا ہی اُتّمہ اتّم یعنی اچھا اور سب سے بڑا ہے

اشلوک ۲۴

اپرمے یو ہرکھی کیشہ پدم نابھو امرپربھہ بشوکرما منس توشٹا استھوبشٹہ استھویرو دھرووہ

ٹیکا ۲۴

اپرمے یو نہیں ہی پرمان جسکا یعنی بے انتہا ہی اور کوئی اُسکی ماہیت کو دلیل وادراک سے جان نہیں سکتا اور وہ کسیکے مانند اور مثل نہیں ہی کہ اُسکے ساتھ پہچانا جاوے اسلیے اُسکا نام اپرمے یو قرار دیا ہرکھی کیشہ اندریوں کا مالک یعنی سب حواس خمسہ اُسی کے پیدا کیے ہوئے ہیں اور وہی انکو قابو میں رکھ سکتا ہی پدم نابھو کنول ہی نابھ میں جسکے یعنے اُسکی ناف سے کنول کا پھول نکلا ہے امر پربھہ دیوتاؤں کا مالک ہے بشوکرما جگت کا رچنے والا ہے

विधाताधातुरुत्तमः २३

टी॰ **स्वयम्भूः** आप से जो हो अर्थात् जो बिना लगाव किसी दूसरे के आप से आप हो **शम्भुः** भक्तों को सुख दे **आदित्य** आदित्य का पुत्र और सूर्य्य को भी आदित्य कहते हैं कि सूर्य्य में जो प्रकाश है वह ही ईश्वर का अंश है और यह भी कहते हैं कि सूर्य्य बारह हैं और हर एक का नाम अलग अलग है और यह बारह नाम सूर्य्य के इस वास्ते रक्खे गये हैं कि बारह रासों में आ ला जाता है उन बारह नामों में से एक नाम विष्णु भी सूर्य्य का है इस वास्ते और भी सूर्य्य की संज्ञा की गई और आदित्य के पुत्र का वर्णन आगे होगा **पुष्कराक्षो** कमल के ऐसे नेत्र हैं **महास्वनः** बड़ा है शब्द जिसका **अनादिनिधनो** जन्म मरण से रहित है **धाता** शेषरूप करके पृथ्वी को धारण करे है **विधाता** यज्ञ करने वालों को स्वर्ग लोक देने वाला और यह कि शेष नाम आदि

بدھاتا دھاتُر اُتّمہ –

ٹیکا

۲۳

سویمبھو آپ سے جو ظاہر ہو یعنی از خود ظاہر ہوا اور دوسرا کوئی سبب اُسکے ظہور کا نہ ہو سمبھو بھکتوں کو سکھ دینے والا ہے آدتیہ آدتیہ کا پُتر اور بھی سورج کو آدتیہ کہتے ہیں یعنی سورج میں جو روشنی ہے ایسکی ہے اور یہ بھی ہے کہ بارہ سورج ہیں اور ایک سورج کے الگ الگ نام ہیں اور یہ بارہ نام سورج کے اسواسطے مقرر ہوئے ہیں کہ بارہ برجوں میں سیر کرتا ہے منجملہ بارہ ناموں کے ایک نام بشن بھی سورج کا ہے اسواسطے سورج پر اطلاق کیا گیا اور آدتیہ کے پُتر کا بیان آگے ہوگا پُشکراکشو کمل کی ایسی آنکھیں ہیں جسکے مہاسونہ بڑا ہے شبد جسکا اَنادِ نِدھنو جنم مرن سے رہت یعنی آغاز اور انجام نہیں رکھتا ہے دھاتا شیش روپ ہو کر پرتھوی کو اپنے اوپر اٹھائے ہوئے ہے بدھاتا جگ کرنے والوں کو سورگ لوک دینے والا ہے اور دوسرے یہ کہ شیش ناگ وغیرہ

मू॰ सर्व्वः शर्व्वः शिवः स्था
णुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभ
वः प्रभुरीश्वरः ॥ २२ ॥

टी॰ सर्व्वः सर्व्वरूप शर्व्वः प्र-
जा को संहार करने वाला है
शिवः शिवरूप कल्याण स्थाणु ए-
क रूप करके स्थिर है भूतादिः प्रा-
णियों का आदि कारण है निधिः ख-
जाना प्रलय काल का है अव्ययः अ-
विनाशी है सम्भवो अच्छा है ज-
न्म जिसका अर्थात् धर्म्म की रक्षा के
वास्ते प्रकट होता है भावनो जी-
वों को कर्म्म का फल भोगवाता है
भर्त्ता सब की पालना करता है प्र-
भवः अच्छा जन्म है अर्थात् श्री
कृष्णावतार आदि और पंचतत्व
का उत्पन्न करने वाला है प्र-
भुः उत्पत्ति पालन संहार तीनों में
समर्थ है ईश्वरः जिस में कुछ
दोष नहीं अर्थात् प्रतिष्ठा तो उसी को
है और हुक्म हाकिम वही है २२

मू॰ स्वयम्भूः शम्भुरादि-
त्यः पुष्कराक्षो महास्वनः
अनादिनिधनो धाता

اشلوک

۲۲ سرب شرب شو استھانر بھوتادر ندھر
ربیہ یہ سمبھو بھاونو بھرتا پربھو پربھر
ایشورا — ۲۲ سرب سرب روپ یعنی پیدا کرنیوالا وجود
اور عدم کا اور جاننیوالا حقیقت کا ہی شرب
انت کال مین پرجا کو سنگھار کرنیوالا ہی شو
شو شنکر روپ یعنی کلیان روپ ہی استھانر
ایک روپ کرکے استقامت یعنی قائم ہی ۔
بھوتادر پرانیونکا آدکارن یعنی مبدا خلق
ہی ندھر خزانہ وقت قیامت کا ہی ابیہ یہ
ابناشی یعنی لازوال ہی سمبھو اچھا ہی
جنم جسکا یعنی واسطے محافظت دھرم کے پیدا
ہوتا ہی بھاونو جیونکو کرم کا پھل بھوگ
کرواتا ہی یعنی جاندارونکو اعمال کا نتیجہ دیتا ہی
بھرتا سبکی پالنا کرنیوالا ہی پربھوہ اچھا
ہی جنم جسکا اور پیدا کرنیوالا جمیع عناصر کا ہی پربھو
پیدا اور پالن اور سنگھار مین سمرتھ ہی ایشورہ
جسمین کچھ دوش یعنی عیب نہین اور بزرگ اور مالک ہی ۔

اشلوک ۲۳

سوینبھو شمبھر ادتیہ پشکر اکشو مہا
سونہ — اناد ندھنو دھاتا

मू॰ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥ २१ ॥ * ॥ * ॥

टी॰ योगो जीव और ईश्वर को एक जाने यह वह स्वभाव है कि इन्द्री और मन को रोक करके उसकी एक्यता में निश्चय को लावै और उसमें लीन होगा य जो कि यह गुण सिवाय ईश्वर के और किसी में नहीं है इस वास्ते इस सम्बन्ध का होना उसी पर किया गया योगविदां नेता योग जानने वालों को प्रेरना करनेवाला अर्थात् अपने में मिलानेवाला प्रधानपुरुषेश्वरः माया और जीव का ईश्वर है नारसिंहवपुः मनुष्य और सिंह रूप जैसे कि प्रह्लाद की रक्षा के लिये शरीर धारण किया श्रीमान् लक्ष्मीवाला केशवः ब्रह्मा और विष्णु और महेश इन तीनों का ईश्वर और अच्छे हैं केश जिसके और भी केशी नाम दैत्य के मारने वाले इस वास्ते भी केशव कहते हैं पुरुषोत्तमः पुरुषों में उत्तम हैं ॥ २१ ॥

اشلوک ۲۱

جوگو جوگ بدانگ نیتا پردھان پرکھیشورہ
نارسنگھ بپہ شریمان کیشو پرکھوتمہ

ٹیکا ۲۱

جوگو جیو اور ایشور کو ایک جانے یہ وہ صفت ہے کہ دل اور حواس ظاہر و باطن کو ضبط کر کے اسکی ذات واحد میں اعتقاد کو درست کرے اور اسی میں محو ہو جاوے چونکہ یہ صفت سواے ذات خالق کے اور کسی میں نہیں ہے اس واسطے اطلاق اس نام کا اسپر کیا گیا جوگ بدانگ نیتا جوگ کے جاننے والوں کو پریرنا کرنیوالا یعنی اپنے میں ملانیوالا ہے پردھان پرکھیشورہ مایا اور جیو کا ایشور ہے یعنی جسم و جان کا مالک ہے نارسنگھ بپہ منش اور سنگھ روپ یعنی بصورت انسان و شیر جیسا کہ وقت محافظت پرہلاد کے شریر دھارن کیا شریمان لچھمی والا یعنی صاحب دولت و عطا کنندہ دولت ہے کیشوہ برہما اور بشن اور مہیش ان تینوں کا ایشور یعنی مالک اور اچھے ہیں کیش یعنی موے سر جسکے اور بھی مارنیوالے کیشی نام دیت کے ہیں اسواسطے بھی کیشو کہتے ہیں پرکھوتمہ پرشوں میں اتم یعنی سب سے بزرگ ہے

मू· पूतात्मा परमात्मा च
मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्र
ज्ञोऽक्षर एव च ॥ २० ॥

टी· पूतात्मा पवित्र आत्मा है परमात्मा आश्चर्यरूप कार्य का कारण है मुक्तानां परमा गतिः मुक्त पुरुषों की परम गति मुक्त उसको कहते हैं जो जन्म मोह अज्ञान से छूट जाते हैं अर्थात् [illegible] कहा है कि मुक्त हुआ पुरुष उसमें लीन होकर जन्म मरण से बाहर हो जाते हैं [illegible] नाशी पुरुषः पुरुषरूप सारा जगत् पूर्ण जिस ने किया उसको पुरुष कहते हैं और जो इस लोक और परलोक में प्राप्त हो उसको भी कहते हैं अर्थात् सबसे पहिले वह प्रकट हुआ है साक्षी अपने आपको सब को देखे वह ऐसा है कि आप संसार को प्रकट करके आप ही उसका तमाशा देखता है- क्षेत्रज्ञो शरीर को जानता है- [illegible] नाश रहित है [illegible]

سے
اشلوک
پوتاتما پرماتما چ مکتانانگ پرما
گتیھ۔ اویّیہ پرکھ ساکشی چھیتر
گیو کشر ایوچ۔

سے
ٹیکا
پوتاتما پوتر آتما ہے یعنی وہ ذات پاک و لطیف ہے پرماتما آشچرج روپ اور کارج اور کارن ہے یعنی عقل خالص آزاد مطلق ہے مکتانانگ پرما گت مکت پرشوں کی اوتم گت ہے مکت اسکو کہتے ہیں کہ جو موہ اور اگیان سے چھوٹ گئے ہوں یعنی وہ ذات [illegible] جاکر مل جاتے ہیں اور پھر دنیا میں پیدا نہیں ہوتے اویّیہ اناشی ہے یعنی زوال نہیں رکھتا ہے پرکھ [illegible] ہے [illegible] ہیں پیدا ہوا اسکو [illegible] اول ظہور کیا ہے ساکشی آپ سب کو دیکھنے والی ذات کہ آپ جگت کو پیدا کر کے آپ ہی اسکا تماشا دیکھتا ہے چھیتر گیو شریر کو جاننے والا [illegible] ہے اکشر یعنی کم و بیش و فنا نہیں ہوتا ہے

का बिस्तार हुआ और पृथ्वी से आ
काश तक सब इसी ॐ की मूर्ति हैं
विश्वं कार्य्य कारण रूप अर्था-
त् जो अपने कारण में लीन और
जगत् में प्रवेश होजाय और यह
वह पदार्थ है जो पाताल से स्वर्ग
तक व्यापक है विष्णु सम्पूर्ण ज
गत् में व्याप्त है अर्थात् सब संसा
र में वह है और सब संसार उसमें है
वषट्कारो यज्ञरूप और मन्त्र
का नाम है भूतभव्यभवत्प्रभुः
हो गया और होगा और है इन ती-
नों कालों का मालिक है भूतकृद्
प्राणियों का जन्म मरण करनेवाला है
भूतभृद् प्राणियों का पालनेवाला
भावो पैदा हो अर्थात् सबकी जगह
वह है भूतात्मा प्राणियों की आ
त्मा अर्थात् मनुष्यों में मन है जिस
का और सब के मन का भेद जान्ने
वाला है भूतभावनः प्राणियों
को जो पैदा करै पालै बढ़ावै ॥१९॥

کا بستار ہوا اور عقل کل سے تا برگ کاہ اسی
اونگ کی صورت ہے بشنو نگ کاریج کارن
روپ ہے یعنی جو اپنے کارن مین لین اور جگت
مین پرویش ہو جاوے اور یہ کہ وہ ذات ہے کہ
جو زیر زمین سے تا بالاے آسمان محیط ہے -
بشنو سب جگت مین بیاپت ہے یعنی تمام عالم
مین وہ ہے اور تمام عالم اُسمین ہے -
بکھٹ کار و جگت کا روپ ہے جگ کے
معنی قربان کرنے کے ہے اور منتر کا نام ہے -
بھوت بھبیہ بھوت پربھ ہو گیا او
ہوگا اور ہے ان تینوں زمانوں کا مالک ہے
یعنی صاحب حال و آیندہ و گذشتہ -
بھوت کرت - پرانیوں کا جنم و مرن کرنیوالا
یعنی پیدا اور فانی کرنیوالا ہے - بھوت بھرت
پرانیونکا پالنے والا ہے یعنی پرورش کنندہ خلایق
کا ہے بھاو و پیدا ہو یعنی مکان و مکین وغیرہ
سبکی جگہ وہ ہے بھوتاتما پرانیوں کی آتما ہے یعنی
آدمیون مین من ہے جسکا اور دل سب جانداروںکا
اور جاننیوالا بھید کا ہے سب کے دلوں کا بھوت بھاونہ
پرانیونکو جو پیدا کرے پالے بڑھاوے یعنی پیدا کرنیوالا
اور روز افزون کرنیوالا خلایق کا ہے -

पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं
गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं
योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे
विष्णुं भवभयहरं सर्व्वलोकै
कनाथं ॥ १८ ॥

टी॰ शांत है आकार जिसका शेष है शय्या जिसकी कमल है नाभि जिसकी देवताओं के ईश्वर हैं जगत् के आधार हैं आकाश के तुल्य हैं बादल के वर्ण अर्थात् रंग हैं अच्छे हैं अंग जिनके लक्ष्मी के पति हैं कमल के ऐसे नेत्र हैं योगियों के ध्यान में आने वाले हैं नमस्कार करता हूं ऐसे विष्णु को जो संसार के भय दूर करने वाले हैं सब लोकों के एक नाथ हैं ॥ १८ ॥

मू॰ ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १९ ॥

टी॰ ओं यह वह शब्द अर्थात् आकाशवाणी है कि जिसके होते ही संसार

پدم نابھنگ سریشنگ بشوادھارنگ
گگن سدرشنگ میگھ برننگ شبھانگنگ
لچھمی کانتنگ کمل نینگ جوگ بھر
دھیان گمینگ بندے بشننگ
بھو بھے ہرنگ سرب لوکیک
ناتھنگ -

ٹیکا
١٨

شانت ہی آکار جسکا شیش ہی سجیا جسکی کمل ہی نابھ جسکی دیوتاؤں کا ایشور ہے جگت کا یاتر ادھار ہی آکاش کی طرح ہے بادل کا ایسا رنگ ہی اچھے ہیں انگ جسکے لچھمی کا پت ہی کمل کے ایسے نیتر ہیں جسکے جوگیوں کے دھیان میں آنیوالا ہی نمسکار کرتا ہوں ایسے بشن کو جو سنساری بھی کے دور کرنیوالی ہیں سب لوگوں کے ایک ناتھ ہیں -

اشلوک
١٩

اونگ بشونگ بشن بکھٹ کار و بھوت
بھبیہ بھوت پربھو - بھوت کرد بھوت
بھر دبھاؤ وبھوتاتما بھوت بھاؤن -

ٹیکا - اونگ یہ وہ شبد یعنی ندا ہے آسمانی ہی کہ اس شبد کے ہوتے ہی سنسار

धन्वागदाधर । इतिकरतल
करपृष्ठाभ्यांनमः । इतिकर
न्यासः । अथखडंगन्यासः ।
ॐविश्वंविष्णुर्वषट्कारइति
हृदयायनमः । अमृतांशूद्
भवोभानुरितिशिरसेस्वाहा ।
ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शि-
खायैवषट् । सुवर्णबिन्दुरक्षो
भ्यइतिकवचायहुं । आदि
त्योज्योतिरादित्य इतिने-
त्रत्रयायवौषट् । शार्ङ्गध-
न्वागदाधरइत्यस्त्रायफट्
श्रीकृष्णप्रीत्यर्थेजपेविनि
योगः । श्रीविष्णोर्दिव्य
सहस्रनाम जप महंकरि
ष्ये । इतिसंकल्पः ॥ श्री
पुरुषोत्तमाराधनेसर्व
पापक्षयार्थेजपेविनियो-
गः ॥

अथ ध्यानं

ॐशांताकारंभुजगशयनं

دھنواگدادھر اِت کرتل کرپرشٹا
بھیانگ نمہ - اِت کرن نیاسہ -
اتھ کھڑن نیاسہ - اونگ بشونگ
بشر بکھٹ کار اِت ہردیاے
نمہ - امرتانگ شودبھو بھان
رت شرسے سواہا -
برھنیو برھم کرد بہیت شکھاے
بکھٹ - سبرن بندر کشو بھیہ
اِت کوچاے ہم -
آدتیو جیوت رادتیہ اِت نیتر
ترایے وکھٹ -
سارنگ دھنواگدادھر اِت استرائے
پھٹ - شری کرشن پریت ارتھے
جپے بن جوگہ -
شری بشنور دبیہ سہسرنام جپ
منگ کرشیے - اِت سنکلپہ -
شری پرشوتما رادھنے سرب
پاپ چھیار تھے جپے بن
جوگہ -

اتھ دھیانگ

۱۹ اونگ شانتاکارنگ بھجگ شینگ

षट्कारस्तुतिध्यानं। श्रीविष्णोः
प्रीत्यर्थे दिव्यसहस्रनामजपे वि
नियोगः। ॐ शिरसि वेदव्यास
ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप
छन्दसे नमः। हृदि श्रीकृष्णप
रमात्मा देवतायै नमः। गुह्ये
अमृतांशूद्भवो भानुरिति
बीजाय नमः। पादयोर्देवकी
नन्दनः स्रष्टेति शक्तये नमः
सर्वाङ्गे शङ्खभृन्नन्दकी चक्री
ति कीलकाय नमः। करसंपुटे म
म श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियो
गः। इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ
विश्वं विष्णुर्वषट्कार इत्यङ्गुष्ठा
भ्यां नमः। अमृतांशूद्भवो भा
नुरिति तर्जनीभ्यां नमः। ब्रह्म
ण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति मध्यमा
भ्यां नमः। सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य
इत्यनामिकाभ्यां नमः। आ
दित्यो ज्योतिरादित्य इति क
निष्ठिकाभ्यां नमः। शार्ङ्ग

بکھٹ کارات دھیانم - شری بشنوو
پریت ارتھے دیبیہ سہسرنام جپے بن یوگہ
اوں شرس بیدبیاس رکھیے نمہ -
مکھے انشٹپ چھندسے نمہ -
ہردی شری کرشن پرماتما دیوتائی نمہ -
گہیے امرتانگ شودبھو بھانُ رت
بیجاے نمہ -
پادیور دیوکی نندنہ سرشٹیت شکت
یے نمہ -
سربانگے سنکھ بھرنندکی چکریت
کیلکاے نمہ -
کرسمپٹے مم شری کرشن پریت ارتھے
جپے بن یوگہ - ات رکھیادِ نیاسہ -
اوں بشونگ بشنر بکھٹ کار
ات انگشٹابھیانگ نمہ -
امرتانگ شودبھو بھان رت ترجنی
بھیانگ نمہ -
برہمنیو برہم کرد برہمیت مدھیما بھیانگ
نمہ - سورن بندر کشوبھیہ اتیہ
نامکابھیانگ نمہ - ادتیو جیوت رادتیہ
ات کنشٹکا بھیانگ نمہ - سارنگ

मुनि हैं और छंद उसका अनुष्टुप
है और देव भगवान कृष्ण हैं। १६।

मू. ओं विष्णुं जिष्णुं महा
विष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरं।
अनेक रूप दैत्यान्तं नमा-
मि पुरुषोत्तमं ॥ १७ ॥

टी॰ मैं नमस्कार करता हूं उनको जो जै
करने वाले महा विष्णु समर्थ विष्णु
महा ईश्वर हैं अनेक रूप हैं दैत्यों के
नाश करने वाले हैं और नमस्कार क
रता हूं उस उत्तम पुरुष को ॥ १७ ॥

श्रीवेदव्यास उवाच

ओं अस्य श्री विष्णोर्दिव्यसह
स्रनामस्तोत्रमालामंत्रस्य श्री
भगवान वेदव्यास ऋषिरनुष्टु
प्छंदः श्रीकृष्णः परमात्मा देव
ता देवकीनन्दनः सृष्टेति शक्तिः
आत्मयोनिः स्वयंजात इति बी
जं। उद्भवः क्षोभणो देव इति प-
रमो मन्त्रः। शंख भृन्नंदकी चक्री
ति कीलकं। त्रिसामा सामगः सा
मेति कवचं। शार्ङ्गधन्वा गदा-
धर इत्यस्त्रं। ओं विश्वं विष्णुर्व-

منی ہیں اور چھند انکا انشٹپ ہے اور دیوتا
کرشن بھگوان ہیں ۔

اشلوک ۱۷

اونگ بشننگ جشننگ مہا بشننگ
پربھ بشننگ مہیشورنگ ۔ انیک
روپ دیتیانتنگ نام پرکھوتمنگ

ٹیکا ۱۷

ہین نمسکار کرتا ہون جو جے کرنیوالے مہا بشن
سمرتھ بشن مہا ایشور ہین ۔ انیک روپ
ہین دیتیون کے ناش کرنے والے ہین
نمسکار کرتا ہون اس اتم پرش کو ۔۔

شری بید بیاس اواچ

اونگ اسیہ شری بشنور دبیہ سہسر نام
استوتر مالا منترسیہ شری بھگوان
بید بیاس رکھر انشٹپ چھندہ شری
کرشن پرماتما دیوتا دیوکی نندنہ سرشٹیت
شکتہ اتم جونہ سوینگ جات بیجم
ادبھوہ چھوبھنو دیوات پرمو منترہ
شنکھ بھرت نندکی چکرت کیلنگ ترساما
سامگہ سامیت کو چینگ سارنگ دھنوا
گدادھرا ات استرنگ ۔ اونگ بشونگ بشنر

मू॰ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपतेः। विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहं ॥ १४ ॥

टी॰ जिस भगवान् के वह कैसा है कि मुख्य है और जगत् का मालिक है ऐसे जो विष्णु हैं उनके हज़ार नाम सुनो जो पाप और भय के दूर करने वाले हैं ॥ १४ ॥

मू॰ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः। ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूपतेः॥ १५ ॥ १५ ॥

टी॰ जौनसे नाम आगे हुये हैं और जौन से विख्यात हैं महात्मा और ऋषियों करके गाये हुये हैं वे नाम मैं कहूंगा हे राजा सुनो ॥ १५ ॥

मू॰ ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः। छंदोनुष्टुप तथा देवो भगवान देवकीसुतः ॥ १६ ॥

टी॰ ऋषि इन हजार नामों के वेदव्यास

اشلوک

۱۴
تسیہ لوک پردھانسیہ جگنا تھسیہ بھوپتے - بشنور نام سہسر نگ مے شرن پاپ بھیا پہم -

ٹیکا

۱۴
ایسے بشن بھگوان جو جگت کے مالک اور مکھیہ ہیں انکے ہزار نام سنو جو پاپ اور بھی کے دور کرنے والے ہیں -

اشلوک

۱۵
یان نامان گونان بکھیا تان مہاتمنہ - رکھی بھی پرگیتان تان بکشیامہ بھوپتے -

ٹیکا

۱۵
جو نام آگے ہوئے ہیں اور جو مشہور ہیں اور مہاتما - اور رشیون کے گائے ہوئے ہیں ہے راجہ ان نامونکو مین کہون گا -

اشلوک

۱۶
رکھیر نامنانگ سہسر سیہ بید بیاسو مہامنہ - چھندو نشٹپ تتھا دیوو بھگوان دیوکی ستہ -

ٹیکا

۱۶
رکھی ان ہزار نامون کے بید بیاس

अच्छा है जो भक्ति करके कम-
ल नेत्र जो भगवान् हैं तिनकी
स्तुति करके मनुष्य सदा पूजा
करले ॥१०॥

मू. परमंयो महत्तेजः परमंयो
महत्तपः। परमंयो महद्ब्र-
ह्मपरमंयः परायणं ॥११॥

टी. उत्तम महा तेज है उत्तम महा
तप है उत्तम महा ब्रह्म है और
परमाश्रय है ॥११॥

मू. पवित्राणांपवित्रंयोमंग-
लानांचमंगलं। दैवतंदेव-
तानांचभूतानांयोव्ययः पि-
ता ॥१२॥१२॥१२॥१२॥

टी. सब पवित्रों में पवित्र हैं सब शुभों में
शुभरूप है देवताओं के दैवत हैं प्रा-
णियों के अविनाशी पिता है॥१२॥

मू. यतः सर्व्वाणिभूतानि
भवन्त्यादियुगागमे। य-
स्मिंश्च प्रलयंयांति पुनरेव
युगक्षये ॥१३॥

टी. जिस भगवान से प्राणी पैदा
होते हैं युग के आदि में और जि-
स भगवान में फिर लय होजाते
हैं युग के नाश में ॥१३॥

اچھا ہے جو بھگت کرکے کمل نیتر بھگوان
کی استت کرکے آدمی ہمیشہ پوجا کرے۔

اشلوک ۱۱

پرمنگ یو مہت تیجہ پرمنگ یو
مہت تپہ۔ پرمنگ یو مہد برہم
پرمنگ یہ پرآینگ۔

ٹیکا۔ اتم مہا تیج ہے اتم مہا تپ ہے۔ اتم
مہا برہم ہے اور پرم آشرے ہے۔

اشلوک۔ پوترانانگ پوترنگ یومنگلا
نانچ منگلنگ۔ دیوتنگ دیوتا
نانچ بھوتانانگ یو ویہ پتا۔

ٹیکا ۱۲۔ سب پوتروں میں پوتر ہے سب شبھوں
شبھ روپ ہے دیوتاؤں کا دیوتا ہے جیووں کا
ابناشی پتا ہے۔

اشلوک ۱۳

یتہ سربان بھوتان بھونت یادو
جگاگمے۔ یسمنشچ پرلینگ یانت
پن ریو جگ چھیے۔

ٹیکا۔ جس بھگوان سے پرانی پیدا ہوتے ہیں
جگ کے آد میں۔ اور جس بھگوان میں پھر لے
ہو جاتے ہیں جگ کے انت میں۔

टी. आदि और अन्त नहीं है जिसका और सब जगह व्याप्त है और सारे लोकों का महा ईश्वर है और लोकों का मालिक है उसकी स्तुति नित्य करता हुआ सब दुःखों को प्राणी उलंघन कर जाता है ॥ ८ ॥

मू. ब्रह्मण्यं सर्व्व धर्म्म-
ज्ञं लोकानां कीर्त्तिवर्द्ध-
नं । लोक नाथं महद्भूतं
सर्व्व भूत भवोद्भवं ॥ ९ ॥

टी. ब्रह्म के जान्ने वालों के पालन करने वाले हैं सारे धर्म्म के जान्ने वाले हैं लोकों की कीर्त्ति बढ़ाने वाले हैं लोकों के मालिक हैं बड़े हैं सब प्राणियों में सब प्राणियों का जन्म करने वाले हैं ॥ ९ ॥

मू. एष मे सर्व्व धर्म्माणां
धर्म्मोऽधिकतमो मतः । य-
द्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवै-
रर्च्चेन्नरः सदा ॥ १० ॥

टी. ऐसा धर्म्म जो मुझको सब धर्म्मों में अधिक धर्म्म और

ٹیکا

۸
نہیں ہے آد اور انت جسکا اور سب جگہ بیاپت ہے اور سب لوگوں کا مہا ایشور ہے - لوگوں کا مالک ہے اُسکی استت نت کرنے سے سب دُکھوں سے پرانی چھوٹ جاتا ہے -

اشلوک

۹
برہمنینگ سرب دھرمگینگ لوکانانگ
کیرت بردھننگ - لوک ناتھننگ
مہدبھوتنگ سرب بھوت بھووَدبھوونگ -

ٹیکا

۹
برہم جاننے والے لوگوں کے پالن کرنیوالے ہیں سب دھرموں کے جاننے والے ہیں اور لوگوں کی کیرت بڑھانیوالے ہیں - لوگوں کے مالک ہیں بڑے ہیں سب پرانیوں میں سب پرانیوں کا جنم کرنے والے ہیں -

اشلوک

۱۰
ایکھ مے سرب دھرمانانگ دھرمادھک
تمو متہ - یدبھکتیا پنڈریکاکھم
استوے ررچے نرہ سدا -

ٹیکا

۱۰
ایسا دھرم جو مجھکو سب دھرموں میں ادھک دھرم اور

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमं । स्तुवन्नाम सहस्रेण पुरुषः सततो- त्थितः ॥ ६ ॥

टी॰ भीष्म पितामह कहते हैं ॥ जगत् के प्रभु हैं देवों के देव हैं अनन्त हैं पुरुष हैं उत्त- म हैं उनकी स्तुति हजार नाम क- रके पुरुष सुख को प्राप्त होजा- य ॥ ६ ॥

मू॰ तमेव चार्चयन्नित्यं भ- क्त्या पुरुषमव्ययं । ध्यायं स्तुवन्नमस्यंश्च यजमान- स्तमेव च ॥ ७ ॥

टी॰ उसी ईश्वर का पूजन भक्ति करता हुआ नित्य कि वह पुरुष रू- प है और अविनाशी है उसी का ध्यान करता हुआ उसकी स्तुति करता हुआ नित्य उसी के न- म लेता हुआ ॥ ७ ॥

मू॰ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरं । लोका- ध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुः- खातिगो भवेत् ॥ ८ ॥

اشلوک

جگت پربھنگ دیو دیو منتنگ
پرکھوتمنگ - استون نام
سہسرین پرکھہ ستتوتھتہ

ٹیکا

بھیکھم پتامہ کہتے ہیں - جگت کے پربھو ہیں
دیوتاؤں کے دیوتا ہیں اننت ہیں اُتم
پرش ہیں - انکی استت ہزار نام کی کرنے
سے پرش سکھ پاتا ہے

اشلوک

تمیو چارچین نتنگ بھکتیا پرش
متینگ - دھیایاں ستون نمس
ینگ شچ یجمانس تمیو چ -

ٹیکا

اسی ایشور کا پوجن اور بھگتی کرے کہ وہ پرش
روپ ہے اور اناشی ہے - اور اسی کا دھیان
اور اسکی استت نت کرے اور اسکے آگے نمسکار کرے -

اشلوک

انادی ندھنگ بشننگ سرب لوک
مہیشورنگ - لوکادھکشنگ استون
نتیم سروڈکھاتگو بھویت -

टी॰ वैशंपायन कहते हैं॥ अच्छे और पवित्र करनेवाले सब धर्म्मों को सुनकर राजा युधिष्ठिरने शान्तनु के बेटे भीष्मजी से फिर पूछा ३

ٹیکا۔ بیشمپاین کہتے ہیں۔ اچھے اور پوتر کرنے والے سب دھرموں کو سنکر راجا جدھشٹھر نے شانتن کے بیٹے بھیکھم جی سے پھر پوچھا۔

मू॰ युधिष्ठिर उवाच॥ किमेकं दैवतं लोके किंवाप्येकंपरायणं। स्तुवंतः कं कमर्चंतः प्राप्नुयुर्म्मानवाः शुभं ॥४॥

جدھشٹھر اباچ۔ کمیکنگ دیوتنگ لوکے کنگ باپیکنگ پرائنگ۔ استونتہ کنگ کمرچنتہ پراپنیر مانواہ شبھم۔

टी॰ युधिष्ठिर कहते हैं॥ एक देव लोकों में है जिसके आश्रय होजाय जिसकी स्तुति करनेसे मनुष्य शुभ को प्राप्त होजाय।४।

ٹیکا

جدھشٹھر کہتے ہیں کہ ایک دیوتا سب لوکوں میں ہے کہ جسکے آسرے سب ہیں۔ اور جسکی استت کرنے سے منکھ کا شبھ ہوتا ہے

मू॰ को धर्म्मः सर्व्वधर्म्माणां भवतः परमो मतः। किंजपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥५॥

اشلوک

کو دھرمہ سرب دھرمانانگ بھوتہ پرمو متہ کنگ جپنگ مچیتے جنتر جنم سنسار بندھناتہ

टी॰ कौनसा धर्म्म सारे धर्म्मों में हमको अच्छा मत है जिसको जपता हुआ जीव संसार के बन्धन से छूट जाय ॥५॥

ٹیکا

کون سا دھرم سب دھرموں میں ہمکو اچھا مت ہے جسکو جپنے سے جیو سنسار کے بندھن سے چھوٹ جاتا ہے

भीष्म उवाच॥

بھیکھم اباچ

श्रीगणेशायनमः

विस्नु सहस्रनाम टीकासहित

मूल ॥ ॐ यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार बन्धनात। विमुच्यते नमस्तस्मै विस्नवे प्रभ विस्नवे ॥ १ ॥

टीका ॥ जिसके स्मरण मात्र करके जन्म संसार के बन्धन से छूट जाय तिसके अर्थ नमस्कार है वे विस्नु हैं समर्थ विस्नु हैं ॥ १ ॥

मू॰ नमः समस्त भूतानामादि भूताय भूभृते। अनेक रूप रूपाय विस्नवे प्रभ विस्नवे ॥ २ ॥ २ ॥

टी॰ नमस्कार है उनको जो सारे प्राणियों के, अधिकारी हैं और पृथ्वी के धारण करने वाले हैं अनेक रूप हैं जिनके - विस्नु हैं समर्थ विस्नु हैं ॥ २ ॥

मू॰ वैशंपायन उवाच ॥ श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्व्वशः। युधिष्ठिरः शांतनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

شری گنیشایہ نمہ

بشن سہسر نام ٹیکا سہت

اشلوک

اوں یسیہ سمرن ماترین جنم سنسار بندھنات - بمچیتے نمستسمے بشنوے پربھ بشنوے

ٹیکا

جسکے سمرن ماتر کرکے جنم سنسار کے بندھن سے چھوٹ جاے تسکے ارتھ نمسکار ہی وے بشن ہیں سمرتھ بشن ہیں -

اشلوک

نمہ سمست بھوتانا مادی بھوتائے بھو بھرتے - انیک روپ روپائے بشنوے پربھ بشنوے -

نمسکار ہے انکو جو سب پرانیوں کے ادھکاری ہیں اور پرتھوی کے دھارن کرنے والے ہیں انیک روپ ہیں جنکے بشن ہیں سمرتھ بشن ہیں

ویشمپاین اواچ - شرتوا دھرمان اشیشین پاونانی چ سربشہ - یدھشٹر شانتنوم پنر یو ابھیبھاشت

ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

ہ ہا ہِ ہی ہُ ہو ہے ہَے ہو ہَو ہن ہہ

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

کش کشا کشِ کشی کشُ کشو کشے کشَے کشو کشَو کشن کشہ

त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः

تر ترا ترِ تری ترُ ترو ترے ترَے ترو ترَو تران ترہ

ज्ञ ज्ञा ज्ञि ज्ञी ज्ञु ज्ञू ज्ञे ज्ञै ज्ञो ज्ञौ ज्ञं ज्ञः

گیہ گیا گیِ گیی گیُ گیو گیے گیَے گیو گیَو گین گیہ

شناخت کے واسطے اُلٹے پلٹے حروف

पहिचान के वास्ते उलटे पुलटे अक्षर

अं उ लृ आ ई अ इ ऊ लॄ ऐ ऋ ए ओ

ॠ अः क च ट त प य स ह क्ष त्र ज्ञ

ख छ ठ थ फ र स ग ज ड द ब

ल व यं रु ढ ध म ङ ञ ण

(संयुक्त अक्षर) (چند حروف مرکب)

क्ल च्छ ज्ञ थ्य द्य फ्फ द्व म्म प्य ङ्क ल्द ल्ल

श्र शृ च्य ङ्ग ग्य ट्ट ड्ड दृ प्ल प्र क्त ल्य

म्न द्ध द्घ त्स ह्ल ह्य द्य व्य स्त र्त्वे ग्र घृ स्म ढ्ढ

स्म ष्ण क्क ख्व ग्ग च्व न्त ध्य न्न प्प च्व

भ्भ ष्ठ ष्प स्स क्क फ्क च्य ज्व न्य क्त स्ल

ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
ب	با	بِ	بی	بُ	بو	بے	بَی	بو	بَو	بن	بہ
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
بھ	بھا	بھِ	بھی	بھُ	بھو	بھے	بھَی	بھو	بھَو	بھن	بھہ
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
م	ما	مِ	می	مُ	مو	مے	مَی	مو	مَو	من	مہ
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
ی	یا	یِ	یی	یُ	یو	یے	یَی	یو	یَو	ین	یہ
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ر	را	رِ	ری	رُ	رو	رے	رَی	رو	رَو	رن	رہ
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
ل	لا	لِ	لی	لُ	لو	لے	لَی	لو	لَو	لن	لہ
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
و	وا	وِ	وی	وُ	وو	وے	وَی	وو	وَو	ون	وہ
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ش	شا	شِ	شی	شُ	شو	شے	شَی	شو	شَو	شن	شہ
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
ش	شا	شِ	شی	شُ	شو	شے	شَی	شو	شَو	شن	شہ
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
س	سا	سِ	سی	سُ	سو	سے	سَی	سو	سَو	سن	سہ

ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः

ڈ ڈا ڈِ ڈی ڈُ ڈو ڈے ڈَی ڈو ڈَو ڈَن ڈَہ

ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः

ڈھ ڈھا ڈھِ ڈھی ڈھُ ڈھو ڈھے ڈھَی ڈھو ڈھَو ڈھَن ڈھَہ

ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ णं णः

ڑ ڑا ڑِ ڑی ڑُ ڑو ڑے ڑَی ڑو ڑَو ڑَن ڑَہ

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः।

ت تا تِ تی تُ تو تے تَی تو تَو تَن تَہ

थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः

تھ تھا تھِ تھی تھُ تھو تھے تھَی تھو تھَو تھَن تھَہ

द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः

د دا دِ دی دُ دو دے دَی دو دَو دَن دَہ

ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः

دھ دھا دھِ دھی دھُ دھو دھے دھَی دھو دھَو دھَن دھَہ

न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः

ن نا نِ نی نُ نو نے نَی نو نَو نَن نَہ

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः।

پ پا پِ پی پُ پو پے پَی پو پَو پَن پَہ

फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः

پھ پھا پھِ پھی پھُ پھو پھے پھَی پھو پھَو پھَن پھَہ

حروف مع اعراب

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
کَ	کا	کِ	کی	کُ	کُو	کے	کَی	کو	کَو	کَن	کہ
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
کھَ	کھا	کھِ	کھی	کھُ	کھُو	کھے	کھَی	کھو	کھَو	کھَن	کھہ
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः ।
گَ	گا	گِ	گی	گُ	گُو	گے	گَی	گو	گَو	گَن	گہ
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः ।
گھَ	گھا	گھِ	گھی	گھُ	گھُو	گھے	گھَی	گھو	گھَو	گھَن	گھہ
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
چَ	چا	چِ	چی	چُ	چُو	چے	چَی	چو	چَو	چَن	چہ
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
چھَ	چھا	چھِ	چھی	چھُ	چھُو	چھے	چھَی	چھو	چھَو	چھَن	چھہ
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
جَ	جا	جِ	جی	جُ	جُو	جے	جَی	جو	جَو	جَن	جہ
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
جھَ	جھا	جھِ	جھی	جھُ	جھُو	جھے	جھَی	جھو	جھَو	جھَن	جھہ
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः ।
ٹَ	ٹا	ٹِ	ٹی	ٹُ	ٹُو	ٹے	ٹَی	ٹو	ٹَو	ٹَن	ٹہ
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ٹھَ	ٹھا	ٹھِ	ٹھی	ٹھُ	ٹھُو	ٹھے	ٹھَی	ٹھو	ٹھَو	ٹھَن	ٹھہ

स्वर कहलाते हैं और बाकी ३३ अक्षरों को व्यंजन कहते हैं स्वरों के दो स्वरूप हैं एक तो पूरा अक्षर दूसरा अक्षरों का निशान जिसको मात्रा कहते हैं और पीछे जो तीन अक्षर लिखे हैं (क्ष) (त्र) (ज्ञ) सो (क) और (ष) मिलने से (क्ष) और (त र) मिलने से (त्र) और (ज ञ) मिलने से (ज्ञ) बनता है ॥

واضح ہو کہ دیوناگری حروف ۲ دو قسم پر منقسم ہیں سور اور بنجن چنانچہ اوپر والے ۱۶ سولہ حروف سور کہلاتے ہیں اور نیچے والے ۳۳ تینتیس حروف بنجن کہلاتے ہیں سب حروف ۴۹ انچاس ہیں اور آخر کے تین حروف یعنی (کش) (تر) (گیا) مرکبات میں داخل ہیں
क्ष त्र ज्ञ
یعنی (ک) و (ش) ملکر (کش) ہوتا ہے اور (ت) و (ر) ملکر (تر) اور
क ष क्ष त र त्र
(گ) و (یا) ملکر (گیا) ہوتا ہے۔ سور کی دو شکلیں ہیں ایک تو پورا
ग य ज्ञ
حرف جیسے (آ) اور دوسرے صرف نشان کا حرف جیسے (ا)
आ ा
جو بنجن کے ہر ایک حرف پر لگایا جاتا ہے جسکو ماترا یعنے اعراب کہتے ہیں۔

अथ वर्णमाला का वर्णन

سنسکرت کی الف بے فارسی خوانان کے واسطے

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ

ا آ اِ ای اُ اُو رِ ری لِر لِری اے اَی

ओ औ अं अः ॥

او اَو اَں اہ

इनको सोलह १६ स्वर कहते हैं - انکو سولہ سور کہتے ہیں -

حروف بینجن

क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ

ک کھ گ گھ نان   چ چھ ج جھ یان

ट ठ ड ढ ण   त थ द ध न

ٹ ٹھ ڈ ڈھ ڑان   ت تھ د دھ ن

प फ ब भ म   य र ल व श ष

پ پھ ب بھ م   ی ر ل و ش شں

स ह क्ष त्र ज्ञ ॥

س ہ کش تر گیا

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

۱ ۲ ۳ ۴ ۵ ۶ ۷ ۸ ۹ ۱۰

प्रकट हो कि देवनागरी वर्णमाला में ४६ अक्षर हैं उन में दो प्रकार हैं स्वर और व्यंजन - पहिले को १६ अक्षर

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८३ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	महाभारत पर्व्व अलग	१- आदि पर्व्व	सातों काण्ड
महाभारत	इस भी हैं	२- सभा पर्व्व	१- बाल काण्ड
१- पहिले हिस्सा में	१- आदि पर्व्व	३- विराट पर्व्व	२- अयोध्या काण्ड
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२- सभा पर्व्व	४- उद्योग पर्व्व	३- आरण्य काण्ड
२- दूसरे हिस्सा में	३- वन पर्व्व	५- भीष्म पर्व्व	४- किष्किन्धा काण्ड
विराट पर्व्व उद्योग	४- विराट पर्व्व	६- द्रोण पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड
पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रो	५- उद्योग पर्व्व	७- कर्ण पर्व्व	६- लंका काण्ड
ण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	८- शल्य पर्व्व	७- उत्तर काण्ड
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व्व	९- गदा पर्व्व	रामायण शब्दार्थकोष
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८- कर्ण पर्व्व	१०- स्त्री पर्व्व	रामायण का इतिहास
गदा पर्व्व सौप्तिक	९- शल्य पर्व्व व गदा	११- स्वर्गारोहण प०	रामायण मानसदीपिका
पर्व्व ऐषीक पर्व्व	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	रामायण रामविलास	रामायण कवितावली
विशोक पर्व्व स्त्री	सय ऐषीक व वि-	रामायण तुलसीकृत	रामायण गीतावली
पर्व्व शान्ति पर्व्व में	शोक व स्त्री पर्व्व	रामायण सटीक मय	सटीक
राजधर्म आपद्ध-	१०- शान्ति पर्व्व राज	रामसनेहि काकोष	विनयपत्रिका बाबू
र्म मोक्ष धर्म	धर्म मोक्ष धर्म व	आदि	मोहन लाल
४- चौथे हिस्सा में	दान धर्म	रामायण तुलसीकृत	विनयपत्रिका बाबू
शान्ति पर्व्व दान	११- अश्वमेध आश्र-	टीका सुखदेव कृत	शिवप्रसाद
धर्म अश्वमेध आ-	म वासिक मुसल प-	रामायण तुलसीकृत	शंकर चरित सुधा
श्रम वासिक पर्व्व	र्व्व महाप्रस्थान स्व-	टीका गुरुलालन्द०	भुवनेश भूषण
व मौसल पर्व्व व	र्गारोहन	रामायण सोरठा-	विष्णु पुराण भाषा
महा प्रस्थान स्वर्गा	१२ हरिवंश पर्व्व	ओं की मय तस्वीरें	लिंग पुराण
रोहन पर्व्व हरिवंश	महाभारत रत्नावली	रामायण तुलसीकृत	महोत्तर खण्ड

بشن سہسر نام سٹیک

بیاس جی کا بنایا ہوا

جسکے نت پاٹھ کرنے سے اور سننے سے برہم ہتیا آدی سب پاپ سو کروڑ جنم کے چھوٹ جاتے ہیں اور کروڑ گئو دان کا پھل اور مکت اور بدیا بل پراکرم تیج سے وجے دھن دھرم درب ارتھ سکھ کامنا جس اچل لچھمی سنتان کلیان آروگتا سوبھا روپ سب بید پڑھنے کا پھل سب تیرتھوں کے اشنان کا پھل سب دیوتاؤں کی پوجن کا پھل پراپت ہوتا ہے

یہ سب پھل اشلوک ۱۲۷ لغایت ۱۶۳ میں بیاس جی اور بشن بھگوان نے کہے ہیں

ایسا امول پدارتھ

سنساری جیوؤں کے اپکار اور ادھار کے نمت سکل جن پراپکاری

विष्णुसहस्रनामसटीक

व्यास जी का बनाया हुआ

जिस के नित्य पाठ करने और सुन्ने से ब्रह्म हत्यादि सब पाप सौ करोड़ जन्म के छूट जाते हैं और करोड़ गौ दान का फल और मुक्ति और विद्या बल पराक्रम तेज विजय धन धर्म द्रव्य अर्थ सुख कामना यश अचल लक्ष्मी सन्तान कल्याण आरोग्यता शोभा रूप सब वेद पढ़ने का फल सब तीर्थों के स्नान का फल सब देवता ओं की पूजा का फल प्राप्त होता है यह सब फल श्लोक १२७ से १६३ तक में व्यास जी और विष्णु भगवान ने कहे हैं

सो ऐसा अमोल पदार्थ

संसारी जीवों के उपकार और उद्धार के निमित्त सकल जन परोपकारी श्री

منشی نول کشور کے چھاپہ خانہ میں تمام لکھنؤ چھپا

سنہ ۱۸۹۳